BRITISH COUNCIL

FASHION REVOLUTION INDIA

के साथ साझेदारी में

अनुसंधान

जलवायु संकट के दौर में शिल्पकला

शिल्पकला के माध्यम से जलवायु में लचीलापन : भारत में स्थायी फैशन का मार्ग

पणधारक अंतर्दृष्टि रिपोर्ट

अक्तूबर 2023

लेखक
श्रुति सिंह

अनुसंधान टीम
आस्था जैन
अमाल अहमद
भव्या गोयनका
डिमिक्सा पांचाल
खुशी सहगल
निवेदिता पद्मनाभन

परियोजना टीम
आंचल सोथानी
अदिति होलानी
भव्या गोयनका
डेल्फ़िन पावलिक
देविका पुरंदरे
श्रुति सिंह

डिजाइन टीम
मकरंद राणे
परेश पाटिल

प्रकाशक
ब्रिटिश काउंसिल और फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

उद्धरण
रिपोर्ट: ब्रिटिश काउंसिल और फैशन रिवोल्यूशन इंडिया। (2023)। 'जलवायु संकट के दौर में शिल्पकला : भारत में शिल्प के माध्यम से जलवायु लचीलापन : स्थिरता का मार्ग।'

कवर पेज फ़ोटो क्रेडिट: इरो इरो

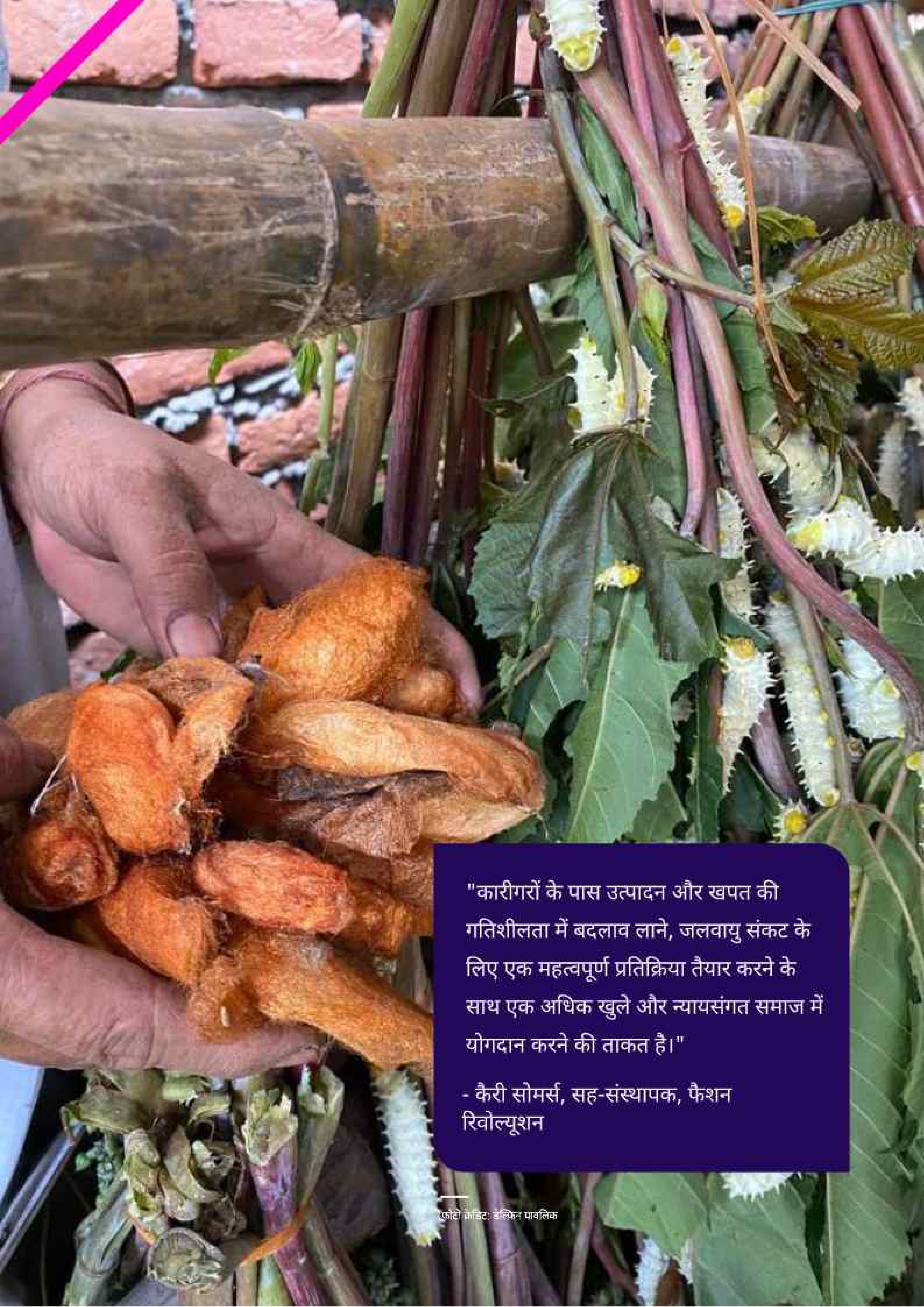

"कारीगरों के पास उत्पादन और खपत की गतिशीलता में बदलाव लाने, जलवायु संकट के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया तैयार करने के साथ एक अधिक खुले और न्यायसंगत समाज में योगदान करने की ताकत है।"

- कैरी सोमर्स, सह-संस्थापक, फैशन रिवोल्यूशन

फोटो क्रेडिट: डेल्फिन पावलिक

प्रतिभागी

ब्रिटिश काउंसिल के बारे में

ब्रिटिश काउंसिल सांस्कृतिक संबंधों और शैक्षिक अवसरों के क्षेत्र में कार्यरत यूके का अंतरराष्ट्रीय संगठन है। हम यूके और दुनिया भर के देशों के लोगों के बीच संबंध, समझ और विश्वास बनाकर शांति और समृद्धि का समर्थन करते हैं। हम कला और संस्कृति, शिक्षा और अंग्रेजी भाषा में अपने काम के माध्यम से इसे कार्यान्वित करते हैं। हम 200 से अधिक देशों और क्षेत्रों में लोगों के साथ काम करते हैं और 100 से अधिक देशों में बुनियादी स्तर पर काम करते हैं। वर्ष 2022-23 में हमने 600 मिलियन लोगों तक पहुंच बनाई।

www.britishcouncil.in

फैशन रिवोल्यूशन इंडिया के बारे में

फैशन रिवोल्यूशन इंडिया एक अलाभकारी संगठन है जो स्वच्छ, सुरक्षित, निष्पक्ष, पारदर्शी और जवाबदेह फैशन उद्योग का समर्थन करने के लिए समर्पित है। दुनिया भर के 75 से अधिक देशों में फैले वैश्विक फैशन रिवोल्यूशन आंदोलन के हिस्से के रूप में, फैशन रिवोल्यूशन इंडिया द्वारा एक ऐसे फैशन उद्योग की कल्पना की जाती है जो विकास और लाभ से अधिक लोगों की भलाई को महत्व देते हुए पर्यावरण के संरक्षण और पुनर्स्थापन को प्राथमिकता देता है। फैशन रिवोल्यूशन की स्थापना 2013 में राणा प्लाजा आपदा के मद्देनजर की गई थी और यह नागरिकों, उद्योग पणधारकों और नीति निर्माताओं को एकजुट करने वाला दुनिया का सबसे बड़ा फैशन सक्रियता का आंदोलन बन गया है। हमारा संगठन शिक्षा, अनुसंधान और समर्थन के कार्यों के माध्यम से परिवर्तन लाता है।

www.fashionrevolution.org

फ़ोटो क्रेडिट: श्रुति सिंह

क्राफ्टिंग फ्यूचर्स के बारे में

भारत में चलाए जाने वाले ब्रिटिश काउंसिल के क्राफ्टिंग फ्यूचर्स कार्यक्रम में भारतीय और यूके के भागीदारों को शिल्प के लिए नए भविष्य की खोज करने वाली परियोजनाओं पर सहयोग करने के लिए एक साथ लाया जाता है। वर्ष 2019 के बाद से, क्राफ्टिंग फ्यूचर्स के जरिए कारीगरी से जुड़ी अर्थव्यवस्थाओं के लिए विभिन्न संभावित दिशाओं का पता लगाने के लिए दोनों देशों के उद्योग और शिक्षा जगत में नौ अभूतपूर्व सहयोगों का समर्थन किया है। वर्ष 2022-23 में ब्रिटिश काउंसिल ने क्राफ्टिंग कनेक्शंस - फैशन रिवोल्यूशन इंडिया के सहयोग से शिल्पकला की मूल्य श्रृंखला में पणधारकों के साथ परामर्श की एक श्रृंखला शुरू की, ताकि शिल्प, जलवायु संकट और जलवायु के प्रति सकारात्मक फैशन और कपड़ा उद्योग को प्रेरित करने की क्षमता के बीच संबंध पर प्रकाश डाला जा सके।

जलवायु परिवर्तन से पारंपरिक शिल्प क्षेत्र पर कल्पना से परे माने गए तरीकों से प्रभाव हो रहा है, भारत का समृद्ध बुनाई क्षेत्र, चाहे वह असम, पश्चिम बंगाल, गुजरात, तमिलनाडु, केरल या कहीं और हो, जो मुख्य रूप से प्राकृतिक आपदाओं से ग्रस्त क्षेत्रों में स्थित हैं और इन्हें बीते दशक में बाढ़ और चक्रवात के गंभीर प्रभाव का सामना करना पड़ा है। बदलती जलवायु का मंडराता खतरा - अनियमित वर्षा, चक्रवात और सभी विभिन्न प्रक्रियाओं के साथ-साथ फाइबर से लेकर प्रीलूम गतिविधियों तक पूरी आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित करते हैं। यह प्रभाव ऐसा है कि यदि सही तरीके से हस्तक्षेप नहीं किया गया तो कई प्रथाएं विलुप्त हो सकती हैं।

- अल्पी बोयला, निदेशक, सेव द लूम

फ़ोटो क्रेडिट: डॉल्फ़िन पाबलिक

विषयसूची

आभार 08

प्रस्तावना 09

I. परिचय 12

1. शिल्पकला (कारीगरी) और जलवायु संकट की आपसी क्रिया को समझना 12

2. अनुसंधान के उद्देश्य 13

3. जलवायु संकट के दौर में शिल्पकला की खोज में हमारी यात्रा 14

II. मुख्य निष्कर्ष: शिल्पकला,जलवायु संकट और स्थायी फैशन 18

04. शिल्पकला और फैशन के आपस में मिले जुले ताने बाने 18

05. शिल्पकला की जड़ें : स्वदेशी ज्ञान और आंतरिक स्थिरता 23

06. शिल्पकला के पारिस्थितिकी तंत्र और स्वदेशी समुदायों पर जलवायु में बदलाव का प्रभाव 25

07. स्थायी फैशन के लिए उत्प्रेरक के रूप में शिल्पकला 27

III. स्थायी फैशन के मार्ग : आने वाली बाधाओं पर काबू पाना और बदलाव में तेजी लाना 35

08. प्रौद्योगिकी और नवाचार 36

09. विरासत सामग्री और नवाचार 40

10. अनुसंधान 44

11. शिल्पकारों और शिल्पकला पर आधारित उद्यमों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र 46

12. समर्थन और नीति 49

13. विकास निधि और निवेश 52

IV. सिफारिशें 58

14. पणधारक की आकांक्षाएं : भविष्य को साथ मिलकर तैयार करना 58

15. शिल्पकलात्मक क्रांति : परिवर्तन के लिए एक रोडमैप 59

IV. निष्कर्ष 61

V. पोस्टस्क्रिप्ट 62

16. पणधारक और योगदानकर्ता 62

17. शब्दावली 66

18. सन्दर्भ 67

19. गोलमेज़ बैठकों के दौरान बातचीत 69

आभार

जब हम 'जलवायु संकट के दौर में शिल्प' रिपोर्ट तैयार करने की यात्रा पर विचार करने के लिए रुकते हैं, तो हम कृतज्ञता से अभिभूत महसूस करते हैं। पांच शहरों में आयोजित गोलमेज संवादों को शामिल करते हुए, इस रिपोर्ट का उद्देश्य भारत के स्थायी फैशन उद्योग के संदर्भ में शिल्प और जलवायु संकट के बीच जटिल अंतरसंबंध प्रकट करना है। सहयोग और एकता में गहराई से निहित इस अन्वेषण में कई लोगों के अमूल्य योगदान से यह और भी समृद्ध हुआ।

हम ब्रिटिश काउंसिल टीम को हार्दिक धन्यवाद देना चाहते हैं। हमारे दृष्टिकोण और इस रिपोर्ट को साकार करने की क्षमता में जोनाथन कैनेडी और देविका पुरंदरे का विश्वास हमारे लिए प्रोत्साहन का एक मजबूत स्रोत था। डेल्फ़िन पावलिक और आंचल सोधानी की बहुमूल्य सलाह से हमें इस अविश्वसनीय परियोजना को आसानी से पूरा करने में मदद मिली। एलिसन का दृढ़ समर्थन हमारे परियोजना की सफलता में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता था।

हम फैशन रिवोल्यूशन इंडिया टीम के समर्पित परियोजना सदस्यों को भी धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने संवाद तैयार किए और उनकी अनुसंधान टीम जिन्होंने इस परियोजना को सफल बनाने के लिए बेशकीमती समय का निवेश किया - आस्था जैन, अदिति होलानी, अमल अहमद, भव्या गोयनका, डिम्विक्सा पांचाल, ख़ुशी सहगल, निवेदिता पद्मनाभन। इस रिपोर्ट को तैयार करने में उनका योगदान मूलभूत रहा है। मकरंद राणे और परेश पाटिल को इस रिपोर्ट पर उनके कुशल डिजाइन कार्य के लिए और सुकी दुसांज को उनके अटूट समर्थन के लिए हार्दिक धन्यवाद।

इस परियोजना की आधारशिला रखने वाले सभी सहयोगियों के प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने उदारतापूर्वक अपनी विशेषज्ञता का भंडार साझा किया, अपने स्टूडियो में फील्ड विजिट का आयोजन किया और इस रिपोर्ट में सामग्री की गहराई में योगदान दिया। हम डॉ. तूलिका गुप्ता (इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्राफ्ट्स एंड डिज़ाइन), हिमांशु शानी (11.11), पवित्रा मुद्दया (विमोर म्यूजियम ऑफ लिविंग टेक्सटाइल्स), ब्रिगेट सिंह, पद्मिनी गोविंद (तरंगिनी स्टूडियोज़), मोहम्मद साकिब (रंगरेज़ क्रिएशन), शारदा गौतम और परवेज़ आलम (टाटा ट्रस्ट), अनुराधा सिंह (नीला हाउस), अलाय बराह, चित्राबन सरमा, औब्रज्या सैकिया, शिवानी गोस्वामी, पूजा दास (आईसीसीओ इंडिया), बघारा ट्रेडिशनल ड्रेस मेकिंग क्लस्टर, हाउली सेरीकल्चर फार्म टीम, और अनोखी संग्रहालय के क्यूरेटर के प्रति सराहना व्यक्त करते हैं। हमारे लिए अपने घर और अपने दिल उदारतापूर्वक खोल देने वाले सभी कारीगरों - कबिता दी, रेणुका दी, प्रतिभा दी, दीपामोनी मेधी, बोरनाली डेका, पुरोबी बोरदोलोई, दीपाली सेनापति, और सेवाली बोरदोलोई – को आपकी गर्मजोशी और आतिथ्य के लिए धन्यवाद।

हम उन सभी पणधारकों, परिवर्तनकर्ताओं, सपने देखने वालों और नवाचारियों की सराहना करते हैं जिन्होंने हमारे गोलमेज़ सम्मेलनों और साक्षात्कारों में भाग लिया और अपनी अमूल्य अंतर्दृष्टि उदारतापूर्वक हमारे साथ साझा की। इस क्षेत्र को मजबूत करने के लिए उनका स्पष्ट दृष्टिकोण और समर्पण प्रेरणा का निरंतर स्रोत रहा है। हम सहकर्मी समीक्षा और रचनात्मक प्रतिक्रिया प्रदान करने में उनके अमूल्य योगदान के लिए क्रिएटिव डिग्निटी टीम और डॉ. रोज़ी हॉर्नबकल को भी धन्यवाद देते हैं।

हमें उम्मीद और आशा है कि इस रिपोर्ट में प्रस्तुत संवाद एक उत्प्रेरक के रूप में काम करेंगे, सार्थक बातचीत को आगे बढ़ाएंगे और बुनियादी स्तर पर प्रभावशाली कार्यों को प्रेरित करेंगे। इन सामूहिक प्रयासों से सकारात्मक बदलाव के लिए एक प्रबल आधार तैयार हुआ है और इसके लिए हम वास्तव में आभारी हैं।

श्रुति सिंह, कंट्री हेड,
फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

फोटो क्रेडिट: डेल्फ़िन पावलिक

प्रस्तावना

ब्रिटिश काउंसिल की ओर से

बढ़ते वैश्विक जलवायु संकट के इस दौर में हम एक ऐतिहासिक निर्णायक मोड़ पर खड़े हैं। इस रिपोर्ट 'जलवायु संकट के दौर में शिल्पकला : भारत में शिल्प के माध्यम से जलवायु लचीलापन' के साथ, ब्रिटिश काउंसिल हमारे सहयोगी फैशन रिवोल्यूशन इंडिया के साथ मिलकर हमारे सामने आने वाली चुनौतियों के बीच आशा की किरण प्रस्तुत करने के लिए सम्मानित महसूस कर रही है। इस रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन और शिल्प के क्षेत्र के आपसी संबंधों पर प्रकाश डाला गया है - एक ऐसा स्थान जहां परंपरा, संस्कृति और जलवायु का लचीलापन विस्तारित होता है। जहां जलवायु परिवर्तन की कठोर वास्तविकता को स्वीकार किया जाता है जो शिल्प कौशल की अपनी विविध परंपरा के लिए प्रसिद्ध देश भारत पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

यह रिपोर्ट चुनौतियों के एक संग्रह से कहीं अधिक है; यह मानवीय लचीलेपन और सरलता का प्रमाण भी है। इसमें हमारे कारीगरों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का प्रकट किया गया है, जिनका जीवन प्राकृतिक दुनिया के साथ जटिल रूप से जुड़ा हुआ है। फिर भी, प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच अवसर की एक सुंदर कहानी सामने आती है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि शिल्प कार्य एक प्रभावयुक्त जलवायु समाधान के रूप में कैसे काम कर सकते हैं। पर्यावरण के साथ गहराई से जुड़े हुए कारीगरों ने पीढ़ियों से स्थिरता, चक्रीय अर्थव्यवस्था और पर्यावरण प्रबंधन का अभ्यास किया है। वे प्राकृतिक सामग्रियों को कला के जटिल कार्यों में बदलते हैं, सरल तकनीकों के माध्यम से कचरे को कम करते हैं, और नवीकरणीय संसाधनों का समर्थन करते हैं। रिपोर्ट में एक स्थायी शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र के लिए आवश्यक हस्तक्षेप के महत्वपूर्ण क्षेत्रों की रूपरेखा तैयार की गई है, जो विभिन्न पणधारकों के लिए एक कार्यनीतिक रोडमैप प्रस्तुत करती है।

इसके अलावा, रिपोर्ट भारतीय कारीगरों और संगठनों की सर्वोत्तम प्रथाओं की सराहना भी की गई है जो पहले से ही सतत् शिल्प परंपरा में अग्रणी हैं। वास्तविक दुनिया के ये उदाहरण दर्शाते हैं कि एक सतत् (सस्टेनेबल) भविष्य कोई दूर की बात नहीं है - यह पहले से ही कारीगरों और रचनात्मक अभ्यासकर्ताओं के हाथों में आकार ले रहा है। अंत में, यह रिपोर्ट वास्तव में कार्रवाई का आह्वान है। इसमें हमें सततता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए शिल्प के अंतर्निहित मूल्य को पहचानने का आग्रह किया गया है। यह एक ऐसे आंदोलन का प्रतीक है जिसमें हमारे स्वदेशी समुदायों और हमारे ग्रह का सम्मान करते हुए नवाचार और प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित किया जाता है।

इस रिपोर्ट में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति हमारी गहरी कृतज्ञता है। एक स्थायी भविष्य तैयार करने के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता हम सभी के लिए प्रेरणा है।

एलिसन बैरेट, कंट्री डायरेक्टर भारत, और डेल्फ़िन पावलिक, डिप्टी डायरेक्टर आर्ट्स इंडिया ब्रिटिश काउंसिल

फैशन रिवोल्यूशन इंडिया की ओर से

जलवायु संकट के युग में जब हमारे ग्रह के सामने अभूतपूर्व चुनौतियां मौजूद हैं, भारत में पारंपरिक शिल्प की भूमिका एक नया और गहरा महत्व रखती है। भारतीय कारीगरों ने सदियों से संस्कृति विरासत और शिल्प कौशल की एक समृद्ध कशीदाकारी बुनी है। उनकी रचनाएं न केवल सुंदरता की मिसाल हैं, बल्कि पीढ़ियों से चली आ रही स्थायी प्रथाओं का भंडार भी हैं।

आज जब जलवायु परिवर्तन का खतरा मंडरा रहा है, हम स्वयं को एक महत्वपूर्ण मोड़ पर पाते हैं। सतत् जीवन शैली और जिम्मेदार तरीके से मदों की खपत की तत्काल आवश्यकता कभी इतनी स्पष्ट नहीं रही। इस संदर्भ में दुनिया आशा की किरण के रूप में पारंपरिक शिल्प की ओर रुख कर रही है। भारत, अपनी विविध और जीवंत कारीगर परंपराओं के साथ इस वैश्विक आंदोलन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है।

जैसा कि श्रुति सिंह ने इस रिपोर्ट में शिल्प और जलवायु के बीच अंतरसंबंध का पता लगाया है, हम उन कारीगरों की कहानियों के बारे में जानेंगे जो आधुनिक चुनौतियों से निपटने के लिए सदियों पुरानी तकनीकों को अपना रहे हैं। हम विलुप्त हो रहे शिल्प को पुनर्जीवित करने, नवीकरणीय संसाधनों के नवाचारी उपयोग और समकालीन डिजाइन के साथ पारंपरिक ज्ञान के मेल को देखेंगे। ये कहानियां, भारत के गांवों से लेकर हलचल भरे महानगरों तक, कारीगरों के लचीलेपन और एक स्थायी भविष्य को तैयार करने की उनकी प्रतिबद्धता को प्रकट करती हैं।

पर्यावरण में लगातार आती गिरावट से खतरे में पड़ी दुनिया में, भारत की शिल्प विरासत संरक्षण और प्रोत्साहन में बदलाव के एक शक्तिशाली बल के रूप में उभरी है। यह रिपोर्ट आपको इस मनोरम दुनिया में गहराई से उतरने के लिए आमंत्रित करती है, जहां परंपरा नवाचार से मिलती है और भारतीय शिल्प की कालातीत कलात्मकता जलवायु संकट के युग में आशा की किरण प्रदान की जाती है। इन पृष्ठों में आपको भारत के शिल्प में निहित गहन ज्ञान और रचनात्मकता की प्रेरणा, प्रशंसा के साथ नए सिरे से इन सबकी सराहना करने का अवसर भी मिलेगा, जो अब एक स्थायी भविष्य की हमारी खोज में पहले से कहीं अधिक सार्थक हैं। आइए यात्रा शुरू करें।

सूकी दुसांज-लेन्ज़, संस्थापक फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

I. परिचय

हम सब इस समय जलवायु परिवर्तन के अभूतपूर्व युग से गुज़र रहे हैं। पृथ्वी पर जुलाई 2023 में अब तक का सबसे गर्म दिन दर्ज किया गया, और इसे देखते हुए ग्लोबल वार्मिंग की इस तीव्र प्रगति से निपटने की तत्काल आवश्यकता का महत्व बढ़ जाता है, या जैसा कि संयुक्त राष्ट्र (यूएन) के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा है, 'वैश्विक उबाल आ गया है'। जलवायु परिवर्तन पर अंतर सरकारी पैनल (आईपीसीसी)[1] की रिपोर्ट में हमें बढ़ते वैश्विक जलवायु संकट की वास्तविकता के बारे में चेतावनी मिलती है।

दुनिया भर में वैश्विक तापमान में वृद्धि यहां समुद्र के बढ़ते स्तर, अचानक बाढ़, सूखा, लू और जंगल की आग के साथ स्पष्ट है, इसका हमारे जीवन, समुदायों और ग्रह पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ता है। इसका प्रभाव भारत में विशेष रूप से दिखाई दे रहा है, हमारा देश शिल्प की अपनी विविध विरासत के लिए जाना जाता है, जिसमें कपड़ा और मिट्टी के बर्तन से लेकर धातु और लकड़ी के शिल्प तक शामिल हैं। क्लाइमेट एक्शन ट्रैकर 2023[2] के अनुसार भारत साल 2100 तक 4.7 डिग्री सेल्सियस अनुमानित तापमान वृद्धि के साथ जलवायु परिवर्तन के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील देशों में से एक है।

फ़ोटो क्रेडिट: डॉल्फिन पाबलिक

01. शिल्पकला (कारीगरी) और जलवायु संकट की आपसी क्रिया को समझना

दुनिया भर के शिल्पकार, जो अपने शिल्प उत्पाद बनाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों - स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्री, जल निकायों, खेतों और जंगलों पर निर्भर रहे हैं, अब वे अप्रत्याशित मौसम पैटर्न, संसाधन की कमी और बढ़ती सामग्री लागत का सामना कर रहे हैं। उनकी आजीविका आंतरिक रूप से पर्यावरण की स्थिति से जुड़ी हुई है और जलवायु परिवर्तन उनके शिल्प, परंपरा और अस्तित्व पर गहरा, सीधा प्रभाव होता है।

यह भी ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि शिल्पकार समुदाय, जलवायु परिवर्तन में सबसे कम योगदान देने वालों में से होने के बावजूद, इसके प्रभावों के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील भी हैं। कई कारीगर समुदाय जलवायु-संवेदनशील क्षेत्रों में रहते हैं, जिससे जलवायु-प्रेरित आपदाओं के प्रति उनका जोखिम बढ़ जाता है। महिलाएं जलवायु परिवर्तन की अग्रिम पंक्ति में हैं और सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक असमानताओं के कारण असंगत प्रभावों का सामना कर रही हैं।[3]

भारत में शिल्प श्रमिकों की बड़ी संख्या है, जो अनुमानित लगभग 200 मिलियन[4] है, जिसमें 56.13 प्रतिशत महिलाएं शामिल हैं, इस जनसांख्यिकी[5] में से 56.13 प्रतिशत महिलाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जलवायु परिवर्तन से अलग-अलग स्तर के जोखिम का सामना करना पड़ता है।

शिल्पकार ऐसे समाधान तैयार करने में भी सबसे आगे खड़े हैं जो टिकाऊ और धीमी फैशन प्रणालियों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वर्ष 2022[6] में वर्ल्ड क्राफ्ट काउंसिल के एक अध्ययन में कहा गया है कि कारीगर शिल्प में गोलाकार अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देते हैं। वे एक समुदाय के अंदर सामग्रियों का उपयोग और पुन: उपयोग करते हैं, जिससे अपशिष्ट और परिवहन उत्सर्जन में कमी आती है, और गोलाकार अर्थव्यवस्था और पर्यावरण के स्थिरता के सिद्धांतों को बढ़ावा मिलता है। गोलाकार अर्थव्यवस्था पर तैयार की गई क्राफ्ट्स काउंसिल यूके की रिपोर्ट[7] में इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि शिल्पकारों का पिछली परंपराओं के साथ गहरा संबंध है और वे भावी पीढ़ियों के लिए जो विरासत छोड़ते हैं, उसमें स्वाभाविक रूप से उनके शिल्प के अंदर प्राकृतिक प्रणालियों के पुनर्जनन को एकीकृत किया जाता है।

भारत और दुनिया भर में स्वदेशी समुदायों ने लंबे समय से उपलब्ध संसाधनों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करते हुए अपने स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र की गहरी समझ का प्रदर्शन किया है। उनका ज्ञान साधारण उपयोगिता से परे मनुष्यों, उनके शिल्प और पर्यावरण के बीच जटिल संबंधों तक फैला हुआ है।

पारंपरिक शिल्प को फैशन और कपड़ा उद्योग का एक अभिन्न अंग माना जा सकता है, यह एक ऐसा क्षेत्र है जो जलवायु परिवर्तन में सबसे बड़े योगदानकर्ताओं में से एक है और वैश्विक कार्बन उत्सर्जन का लगभग 10 प्रतिशत हिस्सा है[8]। फैशन उद्योग में पानी का बहुत अधिक उपयोग, रासायनिक उपयोग और अपशिष्ट उत्पादन होता है। तेज़ी से बदलते फ़ैशन के उदय ने पर्यावरण पर इस क्षेत्र के प्रभाव को बढ़ा दिया है, नए संग्रह लगभग हर सप्ताह या मासिक रूप से जारी किए जाते हैं। अब, पहले से कहीं अधिक, टिकाऊ जीवन और सचेत उपभोग की तत्काल आवश्यकता है। पारंपरिक शिल्पकलाओं और स्वदेशी ज्ञान से स्थायी फैशन के लिए एक रोडमैप प्रदान करने की अच्छी उम्मीद पैदा होती है।

इन मान्यता प्रणालियों और प्रथाओं से स्थिरता, पर्यावरण के उचित प्रबंधन और गोलाकार अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। हथकरघा कपड़ों में कार्बन फुटप्रिंट कम होता है। यह अनुमान लगाया गया है कि हथकरघा पर तैयार किए गए कपड़े के प्रत्येक टुकड़े के लिए, पावरलूम पर उत्पादित कपड़े की तुलना में लगभग1.1 (एक दशमलव एक टन) कार्बन डाइऑक्साइड (CO_2)[9] उत्सर्जन को रोका जाता है। पारंपरिक शिल्प में अक्सर प्राकृतिक और स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों का उपयोग किया जाता है। इनमें पौधे-आधारित रंग, हाथ से बुने गए कपड़े और बांस जैसी कम पानी वाली, पुनर्योजी सामग्री शामिल होती है। इसके अतिरिक्त, शिल्प उत्पाद पैटर्न बनाने की शून्य अपशिष्ट तकनीकों और कम अपशिष्ट उत्पादन में सबसे अग्रणी माने जाते हैं। पश्चिम बंगाल में, कांथा कढ़ाई में अपसाइकल किए गए कपड़ों और साड़ियों का उपयोग शामिल है। घिसे-पुराने कपड़ों को दोबारा उपयोग में लाया जाता है और जटिल कढ़ाई के माध्यम से उन्हें नया बनाया जाता है, जिससे सामग्री की बर्बादी कम होती है और गोलाकार चलने वाली प्रणाली को बढ़ावा मिलता है। भारत के कलमकारी कलाकार अपनी जटिल कपड़ा कलाकृति के लिए वनस्पति रंगों का उपयोग करते हैं और भुज, गुजरात में खत्री समुदाय अपनी एक पारंपरिक ब्लॉक-प्रिंटिंग तकनीक, अजरख प्रिंट के लिए जाना जाता है, जिसमें नील, मजीठ, हल्दी और अन्य से प्राप्त प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है। उनकी प्रथाएं केवल कलात्मक अभिव्यक्तियां नहीं हैं। वे संरक्षण, जैव विविधता और लचीलेपन की कहानियां सुनाते हैं, इस प्रकार उनके काम में निहित स्थायी मूल्यों का उदाहरण देते हैं। इस रिपोर्ट में, हम महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर तलाश रहे हैं :

'क्या फैशन उद्योग में पर्यावरण के मौजूदा संकट से निपटने में हमारे कारीगरी से जुड़े अतीत की कोई भूमिका है?'

02. अनुसंधान के उद्देश्य

रिपोर्ट में निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों को संबोधित किया जाना है :

1. **शिल्प और कारीगरों पर जलवायु का प्रभाव :** यह समझना कि जलवायु परिवर्तन शिल्प क्षेत्र और कुशल कारीगरों की आजीविका को कैसे प्रभावित करता है
2. **शिल्प और धीमा फैशन :** यह पता लगाना कि शिल्प कार्य, अपनी प्राकृतिक स्थिरता और गोलाकार प्रथाओं के साथ, तेज़ी से बदलते फैशन से पर्यावरण पर होने वाले प्रभावों से लड़ने में कैसे एक गेम-चेंजर हो सकता है।
3. **जलवायु समाधानों का पता लगाना :** मौजूदा फैशन और कपड़े के ब्रांडों, नवाचारों और पहलों का मानचित्रण करना जो शिल्प के माध्यम से जलवायु मुद्दों से निपट रहे हैं।
4. **एक स्थायी फैशन भविष्य का निर्माण :** संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (यूएन एसडीजी 12), 'जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन' के लक्ष्य को अनलॉक करने हेतु शिल्प की भूमिका और क्षमता की फिर से कल्पना करना। क्या यह नैतिक और पर्यावरण-अनुकूल फैशन उत्पादन की मांग को पूरा करने में एक प्रमुख कारक हो सकती है?

इस रिपोर्ट का उद्देश्य इस तात्कालिकता को सामने लाना और शिल्प, कारीगरों, पर्यावरण और स्थायी फैशन एजेंडा फिर से तैयार करने की क्षमता के बीच सहजीवी संबंध पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने का समर्थन करना है। इस रिपोर्ट का उद्देश्य एक मजबूत शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र के लिए कार्रवाई को प्रेरित करना है जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और जिम्मेदार फैशन मूल्य श्रृंखलाओं को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मुंबई में पणधारकों का गोलमेज़ सम्मेलन

फोटो क्रेडिट : फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

03. जलवायु संकट के दौर में शिल्पकला की खोज में हमारी यात्रा

ब्रिटिश काउंसिल और फैशन रिवोल्यूशन इंडिया कई वर्षों से शिल्प, फैशन और स्थिरता के मिलन बिंदु पर सहयोग कर रहे हैं। हमारी पिछली क्राफ्टिंग कनेक्शंस परियोजनाओं और पारिस्थितिकी तंत्र के साथ संवाद से हमें कोविड-19 के बाद विकसित हो रहे शिल्प क्षेत्र के बारे में गहरी जानकारी हासिल हुई है। एक के बाद एक आते संकटों से निपटते हुए हमने माना कि जलवायु परिवर्तन आगे आने वाली सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक होगी, जिसके लिए ऐसी कार्यनीतियां विकसित करने के लिए गहरी समझ की आवश्यकता होगी जो इसे प्रभावी तरीके से संबोधित कर सकें। हम स्थायी फैशन और शिल्प लचीलेपन पर अंतर्निहित फोकस के साथ शिल्प और जलवायु के अंतर्संबंध का पता लगाने के लिए उत्सुक थे।

अनुसंधान विधि

यह अनुसंधान अक्तूबर 2022 से जुलाई 2023 तक आयोजित किया गया था, जिसमें शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र के अंदर विशेषज्ञों से डेटा एकत्र करने और अंतर्दृष्टि इकट्ठा करने के लिए मिश्रित-तरीकों का दृष्टिकोण अपनाया गया था। विधि में उद्योग पणधारकों के गोलमेज परामर्श, क्षेत्र दौरे और एक-के साथ-एक के साक्षात्कार शामिल हैं।

उद्योग के पणधारकों के गोलमेज परामर्श :

शिल्प और फैशन उद्योगों के विशेषज्ञों, पणधारकों, शिक्षाविदों और चिकित्सकों को एक साथ लाते हुए पांच पणधारक गोलमेज सम्मेलन आयोजित किए गए। ये गोलमेज सम्मेलन भारत के विभिन्न शहरों - नई दिल्ली, जयपुर, बेंगलुरु, गुवाहाटी और मुंबई में हुए।

गोलमेज सम्मेलनों को कार्यशालाओं और चर्चाओं के रूप में डिजाइन किया गया था, जिसमें शिल्प क्षेत्र की कमजोरियों, जेंडर की महत्वपूर्ण भूमिका, संभावित जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, पारंपरिक शिल्प के साथ फैशन के धीमी गति से चलने वाले सिद्धांतों के संरेखण, निवेश अंतराल को दूर करने की कार्यनीतियों, शिक्षा और नवाचार को प्रोत्साहन देने के साथ-साथ चुनौतियों और अवसरों दोनों का मानचित्रण के लिए विशिष्ट परस्पर जुड़े उप-विषयों पर ध्यान केंद्रित किया गया था। चर्चा के दौरान सुविधा के पारंपरिक तरीकों के अलावा एक अंत:क्रियात्मक डिजिटल जुड़ाव उपकरण का उपयोग किया गया था। इससे हमें सभी प्रतिभागियों से वास्तविक समय में प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की सुविधा मिली। इससे कुशल डेटा एकत्रीकरण और महत्वपूर्ण प्रश्नों का विश्लेषण, ज्ञान का आदान-प्रदान और विचार निर्माण और सामान्य विषयों और पैटर्न की पहचान की सुविधा मिली।

फोटो क्रेडिट : फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

फोटो क्रेडिट : फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

प्रतिभागी समूह :

अध्ययन में विभिन्न प्रतिभागी समूह शामिल थे, जिनमें शिल्प व्यवसायी, उद्यमी, फैशन और जीवन शैली उद्योगों के व्यावसायिक, शिल्प और जलवायु-संबंधित क्षेत्रों में विशेषज्ञता वाले शिक्षाविद, संगत गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई), सरकारी अधिकारी, शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र समर्थक और जलवायु परिवर्तन विशेषज्ञ के प्रतिनिधि शामिल थे। भाग लेने वाले पणधारकों की सूची रिपोर्ट के अंत में शामिल है।

क्षेत्र का दौरा :

अनुसंधान के दौरान, ब्रिटिश काउंसिल और फैशन रेवोल्यूशन इंडिया की टीमों ने शिल्प समूहों, कारीगर उद्यमियों, सामग्री नवप्रवर्तकों और धीरे आगे बढ़ने वाले फैशन व्यवसायों के साथ बातचीत करने के लिए क्षेत्र का दौरा किया। इन क्षेत्र दौरों का उद्देश्य प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि के माध्यम से शिल्प पर जलवायु प्रभाव के मौजूदा परिदृश्य की गहरी समझ हासिल करना और रिपोर्ट में प्रकट करने हेतु सर्वोत्तम प्रथाओं की पहचान करना था।

हमने 11.11, ब्रिगिट सिंह, रंगरेज़ क्रिएशन, तरंगिनी स्टूडियो, विमोर हैंडलूम फाउंडेशन, अनोखी म्यूजियम ऑफ हैंड प्रिंटिंग, बघारा ट्रेडिशनल ड्रेस मेकिंग क्लस्टर, असम में हाउली सेरीकल्चर फार्म में फील्ड विजिट की।

फोटो क्रेडिट : फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

फोटो क्रेडिट : फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

एक-के साथ-एक का साक्षात्कार :

जब राष्ट्रव्यापी परामर्श से हमारे अनुसंधान का आधार बनाया गया, अध्ययन के विशिष्ट पहलुओं को गहराई से जानने के लिए चुने गए पणधारकों के साथ एक-पर-एक साक्षात्कार आयोजित किए गए, जिनके लिए अधिक गहन जानकारी और अंतर्दृष्टि की आवश्यकता थी।

सीमाएं और सीखना

हमें कुछ सीमाओं का सामना करना पड़ा जिसने हमारे अध्ययन के दायरे और प्रयोज्यता को प्रभावित किया।

1. पांच शहरों और 160 पणधारकों पर ध्यान, भारत के व्यापक शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र को विचार में लेते हुए भी, इसके विशाल और विविध परिदृश्य को पूरी तरह से शामिल नहीं करता है।
2. कारीगर समुदायों पर जलवायु परिवर्तन के प्रत्यक्ष प्रभाव की खोज करने वाले व्यापक डेटा की कमी से इस प्रभाव की सीमा को पूरी तरह से समझने में चुनौतियां सामने आईं।
3. शिल्प में विभिन्न उप-क्षेत्र और सामग्रियां शामिल हैं, हमारा प्राथमिक ध्यान फैशन, जीवन शैली और कपड़ा-संबंधित शिल्प पर था।
4. हमारी परियोजना का दायरा समय की कमी से बंधा हुआ था, जिसने शिल्प पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के पूर्ण स्पेक्ट्रम के साथ-साथ भारत के गतिशील शिल्प क्षेत्र में मौजूद समाधानों और चुनौतियों की व्यापकता को पकड़ने की हमारी क्षमता को सीमित कर दिया होगा।
5. हमारे अनुसंधान को भारत में औपचारिक और अनौपचारिक अर्थव्यवस्थाओं के बीच स्पष्ट रूप से अंतर करने में एक सीमा का सामना करना पड़ा। यह क्षेत्र कई विविध उत्पादन प्रणालियों से बना है, जिनमें व्यक्तिगत घरेलू कारीगरों से लेकर बड़ी विनिर्माण सुविधाएं तक शामिल हैं। अनौपचारिक कार्यबल की असुरक्षा को देखते हुए, आगे डेटा-आधारित अनुसंधान की आवश्यकता है।

हम जैसे-जैसे जलवायु संकट के संदर्भ में शिल्प स्थिरता के लगातार विकसित हो रहे परिदृश्य पर नज़र डालते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि यह रिपोर्ट एक शुरुआती बिंदु के रूप में कार्य करती है। यह रिपोर्ट पणधारकों के दृष्टिकोण के माध्यम से शिल्प, स्थिरता और जलवायु संकट के बीच परस्पर क्रिया पर प्रकाश डालती है, लेकिन यह आवश्यक है कि हम इस जटिल क्षेत्र की एक समृद्ध और अधिक व्यापक समझ विकसित करने के लिए इन निष्कर्षों का पता लगाया जाए और उन पर निर्माण करना जारी रखें।

फोटो क्रेडिट : ब्रिटिश काउंसिल

II. मुख्य निष्कर्ष: शिल्पकला, जलवायु संकट और स्थायी फैशन

इस अध्याय में शिल्प, फैशन और स्थिरता के अंतर्संबंध पर गहराई से प्रकाश डाला जाता है। यह शिल्प के मूल सार, दार्शनिक आधार जिस पर यह आधारित है, और इसकी समकालीन सार्थकता की पड़ताल की जाती है।

इसके अलावा, इसमें शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र के अंदर निहित अंतर्निहित स्थिरता को प्रकट किया जाता है, इसके जलवायु लाभ और फैशन के धीमे बढ़ते आंदोलन में योगदान करने की इसकी क्षमता पर ज़ोर दिया जाता है।

GADDI WOOL
CHOKLA WOOL

04. शिल्पकला और फैशन के आपस में मिले जुले ताने बाने

अनुमानित 200 मिलियन शिल्पकारों[10] के साथ, जिनमें 56 प्रतिशत से अधिक महिलाएं[11] भारत में हैं जो विविध शिल्प क्षेत्र का भंडार है और ये सब इसकी रचनात्मक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं जिसमें घरेलू उत्पाद, कपड़ा, फैशन, आभूषण, जीवन शैली के सामान और सजावटी कला सहित विभिन्न डोमेन शामिल हैं।

भारत के हस्तशिल्प क्षेत्र के आर्थिक महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण कार्यालय (एनएसएसओ)[12] के अनुसार, भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में हस्तशिल्प क्षेत्र लगभग 2 प्रतिशत, अर्थात् अरबों डॉलर का योगदान देते हैं। ये भारत के निर्यात उद्योग में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसीएच) ने बताया कि भारत ने अप्रैल 2021-फरवरी 2022[13] के दौरान 1,693 करोड़ रुपए (229 मिलियन अमेरिकी डॉलर) के हथकरघा उत्पादों का निर्यात किया। भारतीय हस्तशिल्प बाजार 2022 में 3.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर के आकार तक पहुंच गया और भारतीय शिल्प की बढ़ती वैश्विक मांग को रेखांकित करते हुए साल 2018[14] आने तक इसके 6.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।

इस रिपोर्ट का फोकस फैशन और कपड़ा उद्योगों के साथ शिल्प के अंतर्संबंध पर है, इनमें विशेष रूप से शिल्प से संबंधित हथकरघा और परिधान क्षेत्रों पर जोर दिया गया है। इन्वेस्ट इंडिया की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय कपड़ा उद्योग देश का दूसरा सबसे बड़ा नियोक्ता है, जो सीधे 45 मिलियन व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करता है और संबद्ध उद्योगों में अन्य 100 मिलियन व्यक्तियों रोजगार समर्थन दिया जाता है। वैश्विक कपड़ा और परिधान व्यापार में भारत का योगदान पर्याप्त है, जिसके कारण इसे दुनिया भर में छठवें सबसे बड़े निर्यातक के रूप में स्थान मिला है। आश्चर्यजनक रूप से 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर[15] के मूल्यांकन वाले इस उद्योग का साल 2025-26[16] तक 190 बिलियन अमेरिकी डॉलर के मूल्यांकन तक पहुंचने का अनुमान है।

जो बात भारत को पूरी दुनिया के वस्त्र परिदृश्य में अलग बनाती है, वह इसकी अद्वितीय कारीगर विरासत है। दुनिया के हस्तनिर्मित वस्त्रों[17] में भारत की हिस्सेदारी चकित कर देने वाली 95 प्रतिशत है, जिसमें कपास, जूट और रेशम जैसी सामग्रियां शामिल हैं। शिल्प कौशल हमेशा फैशन उद्योग के मूल में रहा है। कुशल कारीगरों ने अपने-अपने शिल्प क्षेत्रों में ऐसे कपड़ों के निर्माण में योगदान दिया है जो न केवल कार्यात्मक उद्देश्य को पूरा करते हैं बल्कि कहानियां भी कहते हैं, संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं और रचनात्मकता को दर्शाते हैं। हाथ से बुने कपड़ों से लेकर जटिल कढ़ाई तक, शिल्प परंपराओं ने फैशन परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

फ़ोटो क्रेडिट : डेल्फिन पायलिक

शिल्प और फैशन के बुने हुए धागे

कच्चे माल का उत्पादन: कारीगर अक्सर फैशन वस्तुओं के लिए कच्चे माल का उत्पादन करने में लगे रहते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रामीण भारत में, कुशल स्पिनर और बुनकर हाथ से काते गए और हाथ से बुने हुए कपड़े बनाते हैं, जैसे खादी कपास, जिसे कलात्मक फैशन ब्रांडों द्वारा प्राप्त किया जाता है।

कपड़ा उत्पादन: इसमें कच्चे माल से कपड़े का निर्माण शामिल है और इस प्रक्रिया में शिल्प कौशल आवश्यक है। कुछ उदाहरणों में शामिल हैं :

1. कताई : कारीगर कच्चे रेशों को धागों और सूत अथवा यार्न में बदलते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में खादी के उत्पादन में हाथ से कताई का उपयोग किया जाता है।
2. बुनाई : शिल्पकार हथकरघे का उपयोग धागों को जोड़ने, कपड़ा बनाने के लिए करते हैं। हथकरघा बुनाई भारत सहित कई देशों में प्रचलित है, जहां इसका उपयोग मलमल और इकत जैसे पारंपरिक कपड़े बनाने के लिए किया जाता है।
3. बुनाई/क्रोशिया: कुछ कारीगर कपड़ा बनाने के लिए इन तकनीकों का उपयोग करते हैं। आयरलैंड जैसी जगहों से हाथ से बुना हुआ ऊन या दक्षिण अमेरिका से हाथ से बुनी हुई वस्तुएं इसके प्रसिद्ध उदाहरण हैं।

सतह की डिज़ाइन: यह कपड़े की सतह को सजाने की प्रक्रिया है, और इससे अक्सर कपड़े की सौंदर्य अपील और मूल्य बढ़ता है। यह आम तौर पर कपड़ा उत्पादन के बाद किया जाता है। सतह के डिज़ाइन में कई शिल्प तकनीकों का उपयोग किया जाता है, जिनमें शामिल हैं :

1. ब्लॉक प्रिंटिंग : कारीगर कपड़े पर पैटर्न प्रिंट करने के लिए नक्काशीदार लकड़ी के ब्लॉक का उपयोग करते हैं। भारत की अजरख और दाबू और इंडोनेशिया की बाटिक जैसी तकनीकें दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं।
2. कढ़ाई : शिल्पकार कपड़ों पर पैटर्न सिलकर उन्हें सजाते हैं। इसमें भारत की जटिल ज़रदोज़ी कढ़ाई से लेकर मैक्सिको की रंगीन ओटोमी कढ़ाई तक शामिल हो सकती है।
3. रंगाई : कारीगर विभिन्न तकनीकों का उपयोग करते हुए कपड़ों को रंगते हैं। जापान से शिबोरी और भारत से बंधनी प्रतिरोधी-रंगाई तकनीकों के उदाहरण हैं जिनसे पैटर्न वाले कपड़े बनाए जाते हैं।
4. पेंटिंग : कुछ कारीगर कपड़े पर हाथ से डिज़ाइन पेंट करते हैं, जैसे भारत में कलमकारी चित्रकार, या चीन और वियतनाम में रेशम के चित्रकार।

परिधान उत्पादन: विलासिता और उच्च गुणवत्ता वाले बाजारों में, हस्तनिर्मित तत्व जैसे हाथ की कढ़ाई, लेसवर्क, बीडिंग और अन्य कारीगर तकनीकें कपड़ों के मूल्य को बढ़ाती हैं। फ्रांसीसी कॉउचर हाउस अक्सर अपने हाउते कॉउचर संग्रह पर विस्तृत काम के लिए कारीगरों को नियुक्त करते हैं।

अंतिम उत्पाद सजावट: बैग, जूते और कपड़ों सहित कई फैशन आइटम, कारीगर शिल्पकला से सजाए गए हैं। उदाहरण के लिए, मोरक्को में कारीगर जटिल हस्तकढ़ाई और बीडिंग बनाते हैं जिन्हें विश्व स्तर पर बेचे जाने वाले हाइ-फ़ैशन के परिधानों में शामिल किया जाता है।

सहायक शिल्पकला: सहायक वस्तु निर्माण में शिल्प कौशल भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चाहे वह घाना से हाथ से बुनी हुई टोकरियां हों, केन्या से हाथ से बने आभूषण हों, या इटली से चमड़े का सामान हों, कारीगर कौशल फैशन सहायक चीजों के बाजार की आधारशिला हैं।

अपसाइक्लिंग और पुनर्प्रयोजन: शिल्पकार सर्कुलर फैशन की आपूर्ति श्रृंखला बनाने में भूमिका निभा सकते हैं। कारीगर फैशन के बचे हुए सामानों को नए उत्पादों, जैसे पैचवर्क आइटम बनाने के लिए कपड़े के स्क्रैप का उपयोग कर सकते हैं या इस्तेमाल किए गए कपड़ों को नए फैशन के कपड़ों में बदलने में पुन: उपयोग कर सकते हैं।

तेज से धीमी गति की ओर बदलाव

भारत, दुनिया के सबसे बड़े फैशन उत्पादकों और उपभोक्ताओं में से एक के रूप में, जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन पर संयुक्त राष्ट्र एसडीजी १२ के अनुरूप एक स्थायी भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हाल के दशकों में, खाद्य और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे अन्य उद्योगों के अलावा, फैशन उद्योग ने तेजी से, बड़े पैमाने पर उत्पादन के आकर्षण के आगे घुटने टेक दिए हैं। 'अधिक, तेज़, सस्ता' के मंत्र की विशेषता के इस युग में टिकाऊपन के बजाय डिस्पोज़बिलिटी की संस्कृति को बढ़ावा दिया गया है।

साल में चार फैशन सीज़न से ५२ मौसमों तक बदलाव, और अब हर दिन नए परिधानों के बाजार में आने के साथ अल्ट्रा-फास्ट फैशन का उदय होने से उत्पादों की खपत को बढ़ावा मिला है। जबकि, यह मॉडल स्वाभाविक रूप से त्रुटिपूर्ण है, जिसके कारण कच्चे माल की निरंतर निकासी, अत्यधिक ऊर्जा खपत और बड़े पैमाने पर अपशिष्ट का उत्पादन होता है। इससे पर्यावरण में गिरावट और संसाधनों की कमी हुई है। परंपरागत रूप से, शिल्प कौशल 'कम बनाने' की संकल्पना पर चलता है - जो आज के तेज़ फैशन प्रतिमान के बिल्कुल विपरीत है। इस बदलाव ने न केवल समुदायों से उनकी सांस्कृतिक पहचान छीन ली, बल्कि पारिस्थितिक तंत्र का क्षरण हुआ और टिकाऊ तरीकों का नुकसान हुआ जो जलवायु संकट को रोकने में महत्वपूर्ण हो सकते थे।

> हम अल्ट्रा-फास्ट फैशन के युग में रह रहे हैं जो टिकाऊपन से अधिक डिस्पोजेबिलिटी की संस्कृति को महत्व देता है, सदाबहार शैली या क़ीमती उपहारों के बजाय "दिन के परिधान (ओओटीडी)" को प्राथमिकता दी जाती है - यह सब तेज़ और क्षणभंगुर है'
>
> श्रुति सिंह, कंट्री हेड,
> फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

> 'हम सक्रिय परिवर्तन के शिखर पर हैं और शिल्प इसमें तेज़ी ला सकता है।'
>
> - एंड्रयू मोरलेट, सीईओ एलेन मैकआर्थर फाउंडेशन, यूके

आज केवल फ़ैशन उद्योग वैश्विक कार्बन उत्सर्जन[18] के चौंका देने वाले १० प्रतिशत के लिए ज़िम्मेदार है। फ़ास्ट फ़ैशन से गैर-नवीकरणीय संसाधनों की कमी, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन और पानी और ऊर्जा के अत्यधिक उपयोग के माध्यम से पर्यावरण पर प्रभाव डाला जाता है। जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन) का अनुमान है कि कपड़ा विनिर्माण से उत्सर्जन २०३०[19] तक ६० प्रतिशत तक बढ़ने वाला है।

जैसे-जैसे हम जलवायु परिवर्तन और घटते संसाधनों की वास्तविकताओं से जूझ रहे हैं, वैश्विक मान्यता बढ़ रही है कि यह मॉडल टिकाऊ नहीं है और इस पर मौलिक रूप से पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। स्थायी फैशन का आह्वान सचेत उपभोग, उद्देश्यपूर्ण संसाधन उपयोग और तेज़ फैशन संस्कृति की अस्वीकृति के इर्द-गिर्द घूमता है। यह ऐसे विनिर्माण का समर्थन करता है जो लोगों और पर्यावरण दोनों का सम्मान करता हो। हमारे उपभोक्ता द्वारा प्रचालित समाज के पर्यावरण पर होने वाले प्रभाव के बारे में बढ़ती जागरूकता से प्रेरित उपभोग पैटर्न में वैश्विक बदलाव, विशेष रूप से कपड़ा और शिल्प उद्योग में स्पष्ट हैं। उपभोक्ता 'तेज' के आकर्षण से 'धीमे' की विचारशीलता अपनाने की ओर जा रहे हैं।'

इस विकसित परिदृश्य में, शिल्प आशा की किरण प्रदान करता है क्योंकि दुनिया टिकाऊ और जिम्मेदार फैशन आपूर्ति श्रृंखला की तलाश में है। जैसे-जैसे वैश्विक उपभोक्ता अद्वितीय, नैतिक रूप से निर्मित और स्थायी फैशन की तलाश कर रहे हैं, फैशन आपूर्ति श्रृंखला के अंदर कारीगरों और शिल्प की भूमिका विकास के लिए तैयार है। सचेत उपभोग की ओर यह बदलाव स्थानीय शिल्प परंपराओं का समर्थन करने, स्थायी आजीविका को बढ़ावा देने और पर्यावरण के प्रभावों को कम करने का अवसर प्रस्तुत करता है। अशोक चटर्जी के शब्द प्रभावशाली तरीके से गूंजते हैं: 'शिल्प केवल उत्पाद नहीं हैं; वे ज्ञान, संस्कृति और स्थिरता के भंडार हैं। अधिक सामंजस्यपूर्ण और स्थायी दुनिया के लिए उनका सम्मान और पोषण करना हमारी जिम्मेदारी है।'

धीमी फैशन क्रांति के पीछे प्रेरक शक्तियां

1. **पर्यावरण के प्रति जागरूक गतिशीलता पर जेनरेशन जेड का प्रभाव:** 1995 और 2012 के बीच जन्मी जेनरेशन जेड वैश्विक आबादी का 26 प्रतिशत हिस्सा बनाती है। इस डिजिटल युग, पर्यावरण पर संकट के दौर वाली, आर्थिक उथल-पुथल और कोविड-19 महामारी के प्रभाव से आकार लेने वाली यह पीढ़ी स्थिरता के लिए गहराई से प्रतिबद्ध है। मैकिन्से का अनुसंधान 'जागरूक उपभोग' के प्रति उनके झुकाव को प्रकट करता है, जिसमें 62 प्रतिशत लोग टिकाऊ ब्रांडों को प्राथमिकता देते हैं, यहां तक कि प्रीमियम पर भी। उनके पर्यावरण-मूल्यों और वास्तविक खरीद व्यवहार के बीच एक अलगाव मौजूद है, जो शिल्प को उनकी आकांक्षाओं के साथ संरेखित करने की आवश्यकता पर बल देता है, इसे प्रासंगिक और प्रतिष्ठित दोनों बनाता है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि यह एक प्रेरक बल बन जाए न कि केवल एक फैशन की सनक।
2. **डी2सी और कारीगर कनेक्शन का उदय:** एमएसएमई का नेतृत्व करने वाले युवा उद्यमी डायरेक्ट-टू-कंज्यूमर (डी2सी) क्षेत्र में कदम रख रहे हैं, इनमें से प्रत्येक अद्वितीय प्रेरणा से प्रेरित है लेकिन अपने ब्रांड की कारीगरी की कहानी पर जोर देने के लिए एकजुट है। डिजिटल प्रगति द्वारा संचालित डीरसी, शिल्प व्यापारों को उपभोक्ताओं के साथ सीधे जुड़ने, उत्पाद की गुणवत्ता, आपूर्ति श्रृंखलाओं पर अद्वितीय नियंत्रण प्रदान करने और करीबी ग्राहक संबंधों को बढ़ावा देने की सुविधा मिलती है। इस मॉडल से न केवल अमूल्य प्रतिक्रिया की सुविधा मिलती है बल्कि पारंपरिक रिटेल प्रणालियों की तुलना में अक्सर उच्च लाभ मार्जिन भी मिलता है।
3. **टिकाऊ उत्पादन की दिशा में विधान के अभियान:** दुनिया भर में सरकारें उत्पादन प्रक्रियाओं के पर्यावरण के प्रभाव को कम करने के लिए कड़े नियम लागू कर रही हैं। ये नियम नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग, अपशिष्ट में कमी और गोलाकार अर्थव्यवस्था मॉडल को अपनाने का समर्थन करते हैं। अपने उत्पादों के संपूर्ण जीवनचक्र के लिए निगमों को जिम्मेदार ठहराने की दिशा में कदम विस्तारित उत्पादक जिम्मेदारी (ईपीआर) कार्यक्रमों में स्पष्ट है, जिसमें मूल संरचना में निवेश में वृद्धि हुई है जो संसाधन रीसाइक्लिंग और अपशिष्ट कटौती का समर्थन किया जाता है।

फ़ोटो क्रेडिट : डल्फ़िन पावलिक

गोलमेज़ से बातचीत

जब जलवायु परिवर्तन की बात आती है, तो स्थिरता के सिद्धांतों से समझौता किए बिना पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञान को एकीकृत करना चुनौती है। हम उन समुदायों के अंदर इन प्रथाओं को स्थापित करने का प्रयास करते हैं जिनके साथ हम काम करते हैं, चाहे वह पानी का उपयोग हो, वनों को संरक्षित करना हो, हानिकारक रसायनों से बचना हो, या स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रमों को लागू करना हो।'

सौमर शर्मा, संस्थापक, इंडियन वीवर्स एलायंस इंक

'जब जलवायु परिवर्तन और फैशन की बात आती है, तो हम बहुत अधिक उत्पादन और उपभोग पर केंद्रित हो गए हैं। लेकिन यहां (शिल्प) हम छोटे लेकिन सुंदर, कम लेकिन अच्छी गुणवत्ता में विश्वास करते हैं - और यही वह है जिसे हमें अब बढ़ावा देने की ज़रूरत है।'

डॉ. तूलिका गुप्ता, निदेशक, आईआईसीडी

'आज, किसी भी फैशन का आपका सबसे बड़ा उपभोक्ता और ग्राहक आपकी जेन जेड पीढ़ी है जो तेजी से खपत करती है। अब हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि हम उसकी जगह ले सकें? इसका एकमात्र तरीका जिससे हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम उसकी जगह लेने में सक्षम हैं, वह है उनकी भाषा में बात करना, उनकी भाषा में डिज़ाइन करना और उन तक उनकी भाषा में जानकारी लाने में सक्षम होना।'

निमिषा सारा फिलिप, प्रभाव निवेश वकील

'आपको इसे युवाओं के लिए आकांक्षी बनाना होगा। जिस तरह ज़ारा आकांक्षी हैं। आप गांवों में जाते हैं, हर तरह की अच्छी बात करते हैं। और तब आपको एहसास होता है कि वह बच्चा जिसके पास २० रुपए हैं, वह दौड़कर चिप्स का पैकेट खरीदना चाहता है क्योंकि कोई इसका अच्छा विज्ञापन करता है। वे केले नहीं खरीदते, जो अधिक स्वास्थ्यप्रद हो सकते हैं। तो आपको केले को उनके लिए उम्मीद बनाना होगा। तो यह ऐसा ही है।'

डॉ. तूलिका गुप्ता, निदेशक, आईआईसीडी

'जेन जेड या नई पीढ़ी जलवायु की बहुत परवाह करती है, फिर भी हम सोशल मीडिया रुझानों द्वारा संचालित ओओटीडी जैसे अल्ट्रा-फास्ट फैशन सामने आते हुए देखते हैं। वे ऐसे फैशन की तलाश करते हैं जो उनकी विशिष्टता और रचनात्मकता को दर्शाता हो, जो कि मितव्ययी संस्कृति में वृद्धि की व्याख्या करता है. शिल्प यहाँ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह दो दुनिया की कहानी है - पर्यावरण के प्रति चेतना और व्यक्तित्व की लालसा - और शिल्प उन आकांक्षाओं को पूरा करने की कुंजी है।'

श्रुति सिंह, कंट्री हेड, फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

फोटो क्रेडिट : फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

05. शिल्पकला की जड़ें : स्वदेशी ज्ञान और आंतरिक स्थिरता

दुनिया भर में स्वदेशी समुदायों ने लंबे समय से उपलब्ध संसाधनों का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करते हुए अपने स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र की गहरी समझ का प्रदर्शन किया है। उनका ज्ञान साधारण उपयोगिता या सौंदर्यशास्त्र से परे मनुष्यों, उनके शिल्प और पर्यावरण के बीच जटिल संबंधों तक फैला हुआ है।

कई स्वदेशी समुदायों के बीच अस्तित्व की आवश्यकता से पैदा हुई शिल्प प्रथाएं समय के साथ सुंदरता, शिल्प कौशल और पारंपरिक ज्ञान का प्रतीक बन गई हैं। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) शिल्प को एक अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में परिभाषित करता है।[20] 'शिल्प' शब्द को केवल एक उत्पादन प्रणाली से परे समझने की आवश्यकता है। शिल्प के संदर्भ में स्थिरता को समझने के लिए इसके लोकाचार और विकास में गहराई से जाने की आवश्यकता है।

> 'मुझे यह पढ़कर याद आया कि अधिकांश देशी भाषाओं में "स्थिरता" शब्द का सीधा अनुवाद नहीं है।[21] स्थिरता उनके अस्तित्व का एक अंतर्निहित हिस्सा है, जो उनके दैनिक जीवन में इतनी आंतरिक रूप से बुनी गई है कि इसके लिए एक अलग शब्द की आवश्यकता नहीं है। यह एकता और सह-अस्तित्व में रहने का एक तरीका है।
>
> श्रुति सिंह, कंट्री हेड, फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

पृथ्वी के साथ सहजीवी संबंध

स्वदेशी समाजों का प्रकृति के साथ सहजीवी संबंध, प्राकृतिक संसाधन प्रणालियों की गहरी समझ और पर्यावरण के प्रति सम्मान है। मान्यता की ये प्रणालियां स्थिरता, पर्यावरण के प्रबंधन और मनुष्यों को अलग-अलग संस्थाओं के बजाय प्रकृति के हिस्से के रूप में समझने को बढ़ावा देती हैं। एकता, समुदाय और साझा जिम्मेदारी की संकल्पना 'वसुधैव कुटुंबकम' या 'दुनिया एक परिवार है' की मान्यता प्रणाली में भी प्रतिबिंबित होती है, जो भारत की जी20 अध्यक्षता का विषय - 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' भी है। प्रकृति पर यह सह-निर्भरता अंतर्निहित वृत्त बनाने की प्रथा की ओर ले जाती है, जहां संसाधनों का उपयोग किया जाता है, पुन: उपयोग किया जाता है और पृथ्वी पर वापस लौटाया जाता है।

मुंबई में गोलमेज बैठक के दौरान एक प्रतिभागी ने दक्षिण अमेरिका में एंडीज़ के स्वदेशी समुदायों द्वारा समझी जाने वाली आयनी की संकल्पना का उल्लेख किया,[22] और साझा किया कि 'बादलों का पारिस्थितिकी तंत्र पानी की पुन: पूर्ति करता है। हमें पृथ्वी के साथ भी इसका पालन करना चाहिए - जो कुछ भी आप पृथ्वी से ले रहे हैं वह यथासंभव सबसे सुंदर और सबसे प्राकृतिक रूप में पृथ्वी में वापस जा सकता है।'

अधिकांश शिल्प परिवेश की मौजूदा आवश्यकताओं के प्रति बोधगम्य, सरल प्रतिक्रियाएं हैं। बुंगास, या कच्छ में बने मिट्टी के घर, आम तौर पर बिजली की सीमित पहुंच वाले दूरदराज के समुदायों में रोशनी के लिए दर्पणों से सजाए जाते हैं। कांथा का शिल्प बंगाल के गांवों में शुरू हुआ, जहां निवासियों ने परिवारों के लिए रजाई बनाने के लिए टुकड़े और बेकार कपड़ों की परतों को एक साथ सिल दिया। इस प्रकार, सर्दियों के दौरान गर्माहट सुनिश्चित होती है, साथ ही उनके कपड़ों की उम्र भी बढ़ती है। इन वर्षों में भले ही शिल्प विकास की प्रक्रिया से गुजरा हो, लेकिन एक चीज जो लगातार बनी हुई है वह है प्रकृति के साथ उनका एकीकरण।

कारीगरों के स्वरूप के साथ गहरे संबंध को 'एरी' रेशम कीट पालन जैसी प्रथाओं के माध्यम से भी चित्रित किया जा सकता है, जो अहिंसा की संकल्पना पर आधारित है। पारंपरिक रेशम उत्पादन के विपरीत, जिसमें रेशम के धागे निकालने के लिए रेशम के कीड़ों को जीवित उबालना शामिल होता है, एरी रेशम उत्पादन के पीछे के कारीगर अधिक दयालु दृष्टिकोण अपनाते हैं। वे रेशम की कटाई से पहले रेशम के कीड़ों को प्राकृतिक रूप से अपने कोकून से बाहर आने देते हैं। यह सौम्य और गैर-आक्रामक तकनीक रेशम के कीड़ों को बरकरार रखती है, जिससे एरी रेशम नैतिक रूप से सही और पर्यावरण के अनुकूल विकल्प बन जाता है।

असम में हमारे अनुसंधान अध्ययन के दौरान, हमें हाउली सेरीकल्चर फार्म का दौरा करने का अवसर मिला, जहां मुगा और एरी रेशम कीट पालन की दोनों तकनीकों का अभ्यास किया जाता है। एक स्थानीय किसान के घर पर, हमने पहली बार अहिंसा के प्रति अत्यधिक सम्मान के साथ एरी रेशम की खेती देखी। किसानों को यह समझाने में बहुत गर्व महसूस हुआ कि एरी रेशम को अक्सर 'शांति रेशम' क्यों कहा जाता है।

अपनी अंतर्निहित पर्यावरण-चेतना से परे, एरी रेशम का शिल्प स्वदेशी फाइबर और सामग्रियों के मूल्य के प्रमाण के रूप में खड़ा है। अपने स्थायित्व और मजबूती के लिए प्रसिद्ध, एरी सिल्क अद्वितीय थर्मोरेगुलेटिंग गुणों का दावा किया जाता है। इससे लोगों को गर्मियों के दौरान ठंडा और सर्दियों में गर्म बनाए रखा जाता है, जिससे यह पूरे वर्ष एक बहुमुखी विकल्प बन जाता है।[23]

स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु बोध को समझना

शिल्पकार अक्सर पुनर्विकास सुनिश्चित करने के लिए सामग्रियों की कटाई का सबसे अच्छा समय जानते हैं, अपशिष्ट को कम करने के लिए संसाधन के हर हिस्से का उपयोग कैसे करें, और प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग इस तरह से कैसे करें जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो और स्थिरता को बढ़ावा मिले।

पारंपरिक शिल्प जटिल रूप से विशिष्ट मौसमों से बंधे होते हैं, जिससे कारीगर प्रचुर मात्रा में संसाधनों का उपयोग करने और कमी के दौरान मांग को कम करने में सक्षम होते हैं। उदाहरण के लिए, युगांडा में पारंपरिक छाल कपड़ा निर्माता केवल गीले मौसम के दौरान मुतुबा पेड़ (फ़िकस नटालेंसिस) से छाल काटते हैं जब पेड़ तेजी से ठीक हो सकता है।[24] हिमालय के क्षेत्रों में, भेड़ के ऊन को वर्ष के विशिष्ट समय में काटा जाता है और फिर कपड़ों से लेकर गलीचों तक विभिन्न उत्पाद बनाने के लिए संसाधित किया जाता है।[25] पारंपरिक मिट्टी के बर्तन बनाने वाले लोग केवल भारी बारिश के बाद मिट्टी निकालते हैं जब जमीन प्राकृतिक रूप से मथती और नरम हो जाती है, जिससे विघटनकारी खुदाई की आवश्यकता कम हो जाती है।

स्टिंगिंग बिछुआ बुनाई का शिल्प, जैसा कि राधी पारेख द्वारा साझा किया गया है, इसमें एक समुदाय के स्थायी ज्ञान को प्रकट किया जाता है जो 'स्टिंगिंग बिछुआ' के साथ काम करता है। वे साल में केवल एक बार बिछुआ की कटाई करते हैं, अधिक निष्कर्षण से बचते हैं और किसी कृत्रिम उर्वरक या रसायन का उपयोग किए बिना इसे मुलायम कपड़े में बदल देते हैं। स्थानीय पारिस्थितिक तंत्र की यह गहरी, पीढ़ीगत समझ प्रकृति के साथ एक स्थायी संबंध की सुविधा देती है।

स्टिंगिंग बिछुआ और स्वदेशी स्थिरता की कहानी

जैसा कि राधी पारेख ने बताया

'कुछ साल पहले, मेरी एक ऐसे समुदाय से बातचीत हुई जो शिल्प और जलवायु परिवर्तन में डूबा हुआ है। मैं स्टिंगिंग बिछुआ के बारे में बात कर रही हूं। स्टिंगिंग बिछुआ वर्षा में पैदा होता है और इसमें किसी भी उर्वरक का उपयोग नहीं किया जाता है, इसकी खेती बिल्कुल भी नहीं की जाती है। इससे सबसे नरम फसल पैदा होती है।

स्वदेशी समुदाय और उनका ज्ञान हमें क्या सिखाता है? मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा है जिस पर हम वास्तव में गौर कर सकते हैं, क्योंकि उनकी जीवन शैली ऐसी है कि उनका शिल्प और कृषि सीधे तौर पर जलवायु का सम्मान करने और जलवायु के साथ काम करने के वर्षों से संबंधित है।

कोविड-१९ लॉकडाउन के दौरान मानो एक अग्निपरीक्षा थी। उन्होंने नागालैंड में अपने छोटे से गांव की सुरक्षा के लिए इसे तीन महीने के लिए बंद कर दिया था। मैं उनसे यह पूछने के लिए संपर्क में था कि क्या वे ठीक हैं या उन्हें किसी चीज़ की ज़रूरत है। फिर भी उनकी जीवनशैली इतनी आत्मनिर्भर है कि उन्हें नजदीकी बाज़ारों में जाने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं हुई। उनके पास वह सब कुछ था जिसकी उन्हें आवश्यकता थी। हम इन समुदायों से क्या सीख सकते हैं? क्या हम इन सीखों को अन्य चीज़ों तक बढ़ा सकते हैं?

हम पहचान को कैसे सुदृढ़ कर सकते हैं? हम इस प्रकार का ज्ञान रखने वालों की सुरक्षा कैसे कर सकते हैं? हम इस तरह से सह-निर्माण कैसे कर सकते हैं जो उनसे कुछ छीने बिना नवीनता लाए और उन्हें जहां वे हैं वहां से एक कदम आगे बढ़ने में मदद करें?

> 'प्रकृति की लय के बारे में महिलाओं की अंतर्निहित समझ जीवन की प्राकृतिक लय के साथ प्रतिध्वनित होने वाले तरीकों से खरीद चक्रों और नीतियों को दोबारा आकार देने की अपार क्षमता रखती हैं और यह महिला नेतृत्व के साथ जुड़ा हुआ है।'
>
> स्टेफ़नी ओवेन्स, कला, डिज़ाइन और मीडिया के डीन, कला विश्वविद्यालय प्लायमाउथ

जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को बदलता है, पारंपरिक कारीगर इन उभरती परिस्थितियों को अपना रहे हैं और उनमें बदलाव कर रहे हैं। जब जलकुंभी जैसी आक्रामक प्रजाति - का आक्रामक पौधा जो ऑक्सीजन को नष्ट करने के लिए कुख्यात है - पूर्वोत्तर भारत में स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को खतरे में डालता है, तो शिल्प समुदायों ने इस आक्रामक पौधे को सफलतापूर्वक बैग, टोकरी और योग मैट सहित उत्पादों की एक बहुमुखी श्रृंखला में बदल दिया।[26] स्थायित्व के इस दृष्टिकोण ने न केवल आक्रामक प्रजातियों को नियंत्रित करने में सहायता की है, बल्कि उत्तर-पूर्व क्षेत्र में 3,500 से अधिक कारीगरों को राजस्व का एक अनावश्यक स्रोत भी प्रदान किया है।[27]

शिल्प से आध्यात्मिक संबंध

जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को बदलता है, पारंपरिक कारीगर इन उभरती परिस्थितियों को अपना रहे हैं और उनमें बदलाव कर रहे हैं। जब जलकुंभी जैसी आक्रामक प्रजाति - का आक्रामक पौधा जो ऑक्सीजन को नष्ट करने के लिए कुख्यात है - पूर्वोत्तर भारत में स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को खतरे में डालता है, तो शिल्प समुदायों ने इस आक्रामक पौधे को सफलतापूर्वक बैग, टोकरी और योग मैट सहित उत्पादों की एक बहुमुखी श्रृंखला में बदल दिया।२६ स्थायित्व के इस दृष्टिकोण ने न केवल आक्रामक प्रजातियों को नियंत्रित करने में सहायता की है, बल्कि उत्तर-पूर्व क्षेत्र में ३,५०० से अधिक कारीगरों को राजस्व का एक अनावश्यक स्रोत भी प्रदान किया है।[28]

कई स्वदेशी संस्कृतियां शिल्पकला को न केवल एक व्यावहारिक या सौंदर्यपूर्ण प्रयास के रूप में देखती हैं, बल्कि एक गहन आध्यात्मिक अभ्यास के रूप में भी देखती हैं। सृजन के कार्य को ध्यान, प्रार्थना या भक्ति के कार्य के रूप में देखा जा सकता है।

कमला देवी चट्टोपाध्याय भारत में शिल्पकला में क्रांति लाने वाली एक महत्वपूर्ण हस्ती हैं। अपनी पुस्तक 'इंडिया क्राफ्ट ट्रेडिशन्स' में वे हमारे समाज में शिल्प द्वारा निभाई जाने वाली कई भूमिकाओं के बारे में विस्तार से बताती हैं। वे कहती हैं, 'हमारे देश में पारंपरिक शिल्प कौशल का अर्थ सामग्री के साथ कौशल से कहीं अधिक है, टूल्स में हेरफेर करने में मैन्युअल निपुणता से कहीं अधिक है। इसका अर्थ भावनाओं, मन, शरीर और इस तरह के समन्वय से उत्पन्न होने वाली जीवंतता को शामिल करते हुए एक संपूर्ण ऑपरेशन है।'[28]

अशोक चटर्जी ने कुला कॉन्क्लेव 2023 में अपने मुख्य भाषण में, एक कारीगर, ओंकारनाथ जी की कहानी सुनाई, जो इस बात का एक गहरा उदाहरण था कि शिल्प का अभ्यास करने वालों के लिए शिल्प का क्या मतलब है। इसमें एक कारीगर और उनकी कला के बीच के पवित्र रिश्ते पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने ओंकारनाथ जी के बारे में बात की, जिनके साथ उन्होंने दशकों तक काम किया था। इसमें दुख की बात है कि उस समय ओंकारनाथ जी ने अपने बेटे को एक रेलवे स्टेशन दुर्घटना में खो दिया था। जब चटर्जी अंततः उनके पास पहुंचने और उनका हालचाल पूछने में कामयाब रहे, तो ओंकारनाथ जी ने गहरा दुख व्यक्त किया था। उन्होंने साझा किया था कि अब उन पर अपने पोते-पोतियों की परवरिश और अपनी बहू का भरण-पोषण करने की अतिरिक्त जिम्मेदारी है। जब उनसे पूछा गया कि वे आगे क्या करने की योजना बना रहे हैं, तो ओंकारनाथ जी ने जवाब दिया था कि वह अपने करघे से पूछेंगे, क्योंकि उन्हें उत्तर वहां मिलेंगे।

इस मान्यता से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि कई लोगों के लिए, शिल्प केवल आजीविका के साधन से कहीं अधिक है। शिल्प सांस्कृतिक विरासत और पहचान रखने वाला एक साधन है, सामाजिक-आर्थिक सशक्तीकरण का एक उपकरण है, और प्रतिकूल परिस्थितियों में लचीलापन और आशा का प्रतीक है।

06. शिल्पकला के पारिस्थितिकी तंत्र और स्वदेशी समुदायों पर जलवायु में बदलाव का प्रभाव

साल 2018 में केरल में आई विनाशकारी बाढ़ ने चेंदामंगलम बुनकरों को गंभीर रूप से प्रभावित किया, जिससे 15 करोड़ रुपए या 1.4 मिलियन जीबीपी का नुकसान होने का अनुमान है। इसमें 273 करघों को नुकसान और यार्न बैंकों को महत्वपूर्ण नुकसान शामिल है। चन्नापटना, कर्नाटक में, जो लकड़ी पर वार्निश लगाने के 200 साल पुराने इतिहास के लिए जाना जाता है, कारीगर स्थानीय आले मारा (राइटिया टिनक्टोरिया) पेड़ों की घटती उपलब्धता से जूझ रहे हैं, जिनका उपयोग खिलौनों की लकड़ी के रूप में किया जाता है। स्थानीय वनस्पतियों में यह कमी बढ़ते तापमान और बदलते वर्षा पैटर्न से जुड़ी है। वाराणसी और मध्य प्रदेश के हथकरघा बुनकर भी कपास की फसल पर अनियमित वर्षा पैटर्न से प्रभावित होते हैं, जिससे कच्चे माल की कमी होती है और लागत बढ़ती है।[29] राजस्थान के कुम्हारों को भी इसी तरह की प्रतिकूलता का सामना करना पड़ता है, क्योंकि मिट्टी स्थानीय नदी तल से आती है - उनके शिल्प का एक आवश्यक घटक अनियमित मानसून पैटर्न और लंबे समय तक सूखे के कारण कम सुलभ हो गया है।

बढ़ता तापमान असम में उत्पादित 'मुगा' रेशम के तैयार करने पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, जो मुगा रेशम कीट (एंथेरिया एसामेंसिस) पर निर्भर करता है, जो तापमान और आर्द्रता परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील प्रजाति है।[30] मौसम के पैटर्न में बदलाव के साथ, रेशम उत्पादन अप्रत्याशित रूप से तेजी से बढ़ गया है, और सीधे तौर पर कारीगरों की आजीविका पर असर डाल रहा है।

'मुगा रेशम उत्पादन को मौजूदा में बीज की गुणवत्ता से लेकर पालन प्रक्रिया तक कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उचित गुणवत्ता वाले बीजों की कमी एक बड़ी चिंता का विषय है, क्योंकि यह फसल की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त, तापमान में उतार-चढ़ाव कठिनाइयों का कारण बन रहा है, क्योंकि मुगा को 27 से 29 डिग्री सेंटीग्रेड की एक विशिष्ट तापमान सीमा की आवश्यकता होती है। बाहर का तापमान 40 डिग्री तक पहुंच रहा है, जिससे मुगा के लिए ऐसी विषम परिस्थितियों में जीवित रहना चुनौतीपूर्ण हो गया है। मुगा के अस्तित्व और समृद्धि को सुनिश्चित करने हेतु, बदलती जलवायु के अनुकूल समाधान विकसित करने की आवश्यकता है।'

अजीत पाठक, रेशम उत्पादन निदेशालय, असम सरकार

अप्रत्याशित बाढ़ कपड़ा उत्पादन चक्र को नष्ट कर रही है, जीवन को बाधित कर रही है, और स्वास्थ्य और जल संकट पैदा कर रही है। बदली हुई जलवायु पारंपरिक उत्पादन चक्र में देरी कर रही है। बढ़ता तापमान कारीगरों को पलायन करने के लिए मजबूर कर रहा है, और नदी के किनारे के कटाव के साथ-साथ भूस्खलन शिल्प समुदायों को खतरे में डाल रहा है। जलभराव वाले परिदृश्य और प्रदूषित जलाशय एक निराशाजनक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं, जो न केवल काम पर जाने और कारीगरों के घरों को प्रभावित करते हैं, बल्कि कच्चे माल की महत्वपूर्ण उपलब्धता को भी प्रभावित करते हैं।

'पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम से जो समझा है कि हमारे पास जलवायु के लिए लचीला विचार हैं। हमारे पास पारंपरिक प्रथाएं हैं, जिन्हें हमें सिर्फ ब्रांड बनाने की जरूरत है। यही चीज़ है, यही समाधान है हमारे पास। हमारे गांवों में १००० वर्षों की चक्रीय अर्थव्यवस्था चल रही है। हमें यही करने की जरूरत है। महिलाएं प्रकृति से इस कदर जुड़ी हुई हैं कि उन्हें प्राकृतिक संसाधनों के साथ-साथ समाधानों तक भी पूरी पहुंच है। यही तो हम वर्षों से करते आ रहे हैं। और आप जानते हैं, पारंपरिक ज्ञान और समुदाय पर नज़र डालना महत्वपूर्ण है।'

- ऋतुराज, संस्थापक ७वीव्स

शिल्पकार पारिस्थितिकी तंत्र पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव

उत्पादन में व्यवधान:

1. **उत्पादन चक्रों का विघटन:** कुछ शिल्प विशिष्ट मौसमी चक्रों पर निर्भर होते हैं। उदाहरण के लिए, कपास या रेशम जैसे कच्चे माल की खेती विशिष्ट मौसम पैटर्न से निकटता से जुड़ी हुई है। जलवायु परिवर्तन के कारण अप्रत्याशित मौसम इन चक्रों को बाधित कर सकता है, जिससे उत्पादन में देरी या हानि हो सकती है।

2. **स्वास्थ्य पर प्रभाव:** तापमान में वृद्धि के कारण, हाथ से या करघे पर किया जाने वाला शारीरिक श्रम अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है, जिसका असर कारीगरों के स्वास्थ्य पर पड़ता है। मैकगवर्न फाउंडेशन की रिपोर्ट[31] के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में सूखा पानी की कमी की समस्या को बढ़ा सकता है। सुरक्षित पेयजल तक पहुंच का अभाव कारीगरों की उत्पादकता में काफी बाधा डाल सकता है, क्योंकि इससे गर्मी से थकावट और निर्जलीकरण का खतरा बढ़ जाता है। समय के साथ, सूखा और अत्यधिक गर्मी दीर्घकालिक स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे सकती है, जिसमें बार-बार संपर्क में आने से गुर्दे की बीमारी भी शामिल है।

3. **सिंथेटिक सामग्रियों की ओर बदलाव:** प्राकृतिक संसाधन अधिक दुर्लभ या अप्रत्याशित हो गए हैं और कम लागत पर उत्पाद बनाने का दबाव बढ़ गया है। इसने कारीगरों को सिंथेटिक या पॉलिमर-आधारित सामग्रियों जैसे विकल्पों की तलाश करने के लिए मजबूर किया है जो मौसम और जलवायु स्थितियों पर कम निर्भर हैं। जबकि, यह उनके उत्पादों की विशिष्टता और गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इसके अलावा, ये सामग्रियां अक्सर गैर-बायोडिग्रेडेबल होती हैं और पर्यावरण प्रदूषण में योगदान करती हैं। यदि सामग्री स्थानीय नहीं है तो उसमें कार्बन पदचिह्न भी होता है और यह उत्पादन को वैश्विक ताकतों और मूल्य निर्धारण के प्रति अधिक संवेदनशील बनाता है।

> उत्पादन में, लोग मशीन-निर्मित यार्न और पॉली-आधारित यार्न पसंद करते हैं क्योंकि वे बुनाई में पूर्णता और समरूपता चाहते हैं। स्वदेशी, हस्तनिर्मित धागे अक्सर करघे पर टूट जाते हैं, जिसके कारण शिल्पकार बाजार की मांग को पूरा करने के लिए आयातित धागों का उपयोग करने लगते हैं।'
>
> - संजय गर्ग, संस्थापक और डिजाइनर, रॉ मैंगो

कच्चे माल की उपलब्धता:

1. **कच्चे माल तक पहुंच में कमी:** जलवायु परिवर्तन से कारीगरों के लिए कच्चे माल की खरीद को और अधिक चुनौतीपूर्ण बना दिया है। ऐसा जैव विविधता में कमी, पौधों के परिवर्तित विकास चक्र या पानी की बढ़ती कमी के कारण हो सकता है। कई कारीगर अपनी सामग्रियों के लिए जैव विविधता पर भरोसा करते हैं - विभिन्न प्रकार की लकड़ी, पौधे-आधारित रंग, पशु-व्युत्पन्न सामग्री, आदि। जैव विविधता में कमी इन संसाधनों की उपलब्धता को सीमित कर सकती है।

2. **कच्चे माल की असंगत गुणवत्ता:** जलवायु परिवर्तन कच्चे माल की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, सूखे का अनुभव करने वाली भेड़ों का ऊन निम्न गुणवत्ता का हो सकता है, जिससे अंतिम उत्पाद के मानक अपेक्षित परिणाम प्रभावित हो सकते हैं।

3. **सामग्री की बढ़ी हुई लागत:** जलवायु परिवर्तन के कारण कच्चे माल की कम उपलब्धता से लागत में वृद्धि हो सकती है। कारीगर अक्सर कम लाभ मार्जिन पर काम करते हैं, और सामग्री की लागत में वृद्धि उनके व्यापारों को कम व्यवहार्य बना सकती है, जिससे उन्हें इसे बंद करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता है।

कारीगरों के लिए आजीविका का खतरा:

4. **कृषि आय में व्यवधान:** जलवायु परिवर्तन का कृषि पर, विशेषकर वर्षा आधारित खेती पर निर्भर क्षेत्रों में सीधा प्रभाव पड़ता है। कई कारीगर अपनी आय के प्राथमिक स्रोत, पूरक आय या यहां तक कि अपने परिवारों के लिए प्रत्यक्ष भोजन स्रोत के रूप में कृषि पर निर्भर हैं। पानी और चरागाह में कमी से पशुधन को भी नुकसान हो सकता है, जिससे झुंड की संख्या और उत्पादकता कम हो सकती है।[32]

5. **जलवायु-प्रेरित विस्थापन:** जैसे-जैसे चरम मौसम के पैटर्न और बढ़ते समुद्र के स्तर के माध्यम से जलवायु परिवर्तन के परिणाम तेज होते हैं, समुदायों को अचानक जगह से हटने का सामना करना पड़ता है। ये बदलाव कारीगरों को उनकी पारंपरिक सामग्रियों, मूल समुदायों और पारंपरिक बाजारों से दूर करके उनके सदियों पुराने शिल्प की निरंतरता के लिए खतरा पैदा करते हैं।

07. स्थायी फैशन के लिए उत्प्रेरक के रूप में शिल्पकला

शिल्प स्थायी फैशन के लिए एक शक्तिशाली उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है, जो गुणवत्ता, स्थायित्व और नैतिक उत्पादन विधियों पर जोर देकर उद्योग मूल्यों को फिर से परिभाषित करता है। शिल्प वृत्ताकार अर्थव्यवस्था सिद्धांतों के अनुरूप है, क्योंकि हस्तनिर्मित वस्तुओं को पीढ़ियों तक बनाए रखने और संजोकर रखने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

शिल्प का पर्यावरण का लाभ

एलेन मैकआर्थर फाउंडेशन[33] द्वारा सर्कुलर इकोनॉमी मॉडल एक लेंस प्रदान करता है जिसके माध्यम से पारंपरिक शिल्प की हरित क्षमता को समझा जा सकता है। सर्कुलर इकोनॉमी अनिवार्य रूप से एक डिजाइन-केंद्रित कार्यनीति है, जो तीन मुख्य सिद्धांतों में निहित है: अपशिष्ट और प्रदूषण को खत्म करना, उत्पादों और सामग्रियों को प्रसारित करना और प्रकृति को पुनर्जीवित करना। यहां बताया गया है कि शिल्प की दुनिया टिकाऊ उत्पादन और खपत और चक्रीय अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों के साथ कैसे संरेखित होती है।

1. **अपशिष्ट और प्रदूषण को ख़त्म करें:** यह चक्र टिकाऊ नहीं है क्योंकि हमारी पृथ्वी के संसाधन सीमित हैं। हमारे प्रचलित आर्थिक मॉडल में, हम वस्तुओं का उत्पादन करने के लिए पृथ्वी से संसाधन निकालते हैं, जो उनके उपयोग के बाद अपशिष्ट के रूप में समाप्त हो जाते हैं - एक सीधी रैखिक प्रगति। हालाँकि, एक चक्रीय अर्थव्यवस्था में, कचरे के निर्माण को शुरू से ही रोकने के लिए दृष्टिकोण बदल जाता है।

   क. डिजाइन-आधारित स्थिरता: तैयार की गई वस्तुओं को अक्सर दीर्घायु के लिए डिजाइन किया जाता है, जो उपभोक्ताओं को विस्तारित अवधि में उनका उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह तेज़ फैशन के विपरीत है, जहां निम्न-गुणवत्ता, अल्पकालिक ट्रेंडी वस्तुओं के परिणामस्वरूप बार-बार प्रतिस्थापन होता है और नए कपड़ों के उत्पादन से कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि होती है।

   ख. तेजी से उत्पादन पर शिल्प: जबकि तेजी से उत्पादन अक्सर सिंथेटिक सामग्रियों पर निर्भर करता है, शिल्प मुख्य रूप से नवीकरणीय स्रोतों का उपयोग करते हैं। शिल्प न केवल फेंकने की संस्कृति का विरोध करते हैं बल्कि मुख्य रूप से जैविक और बायोडिग्रेडेबल सामग्रियों का उपयोग करते हैं, जिससे पर्यावरणीय नुकसान कम होता है और कार्बन पदचिह्न कम होते हैं।

2. **उत्पादों और सामग्रियों को प्रसारित करें:** परिपत्र अर्थव्यवस्था का दूसरा सिद्धांत उत्पादों और सामग्रियों के निरंतर परिसंचरण, उनके मूल्य को अधिकतम करने पर जोर देता है। इसमें सामग्रियों के जीवन का विस्तार करना शामिल है, या तो उन्हें उत्पादों के रूप में पुन: उपयोग करके या उन्हें घटकों या बुनियादी संसाधनों के रूप में उपयोग करके। ऐसा करने से, अपशिष्ट कम हो जाता है, और इन उत्पादों और सामग्रियों का अंतर्निहित मूल्य संरक्षित रहता है।

   क. स्थानीयकृत उत्पादन: पारंपरिक शिल्प प्रथाएं अक्सर स्थानीय स्तर पर होती हैं, जो लंबी दूरी के परिवहन से जुड़े कार्बन उत्सर्जन में कटौती करती है और लचीले, टिकाऊ समुदायों का समर्थन करती है। यह तेज़ फैशन के विपरीत है, जो वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर निर्भर करता है और कार्बन उत्सर्जन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

   ख. अपशिष्ट में कमी और पुनर्चक्रण: शिल्प अक्सर सामग्रियों के पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो अपशिष्ट को नए, सुंदर उत्पादों में परिवर्तित करते हैं। इससे न केवल लैंडफिल के लिए निर्धारित कचरे की मात्रा कम हो जाती है बल्कि नए कच्चे माल की आवश्यकता और उनके संबंधित पर्यावरण पर प्रभाव भी कम हो जाते हैं। राजस्थान की लहरिया और टाई और डाई (बांधनी) की तकनीकें मौसमी परंपराओं में गहराई से निहित हैं, जो विभिन्न त्योहारों से जटिल रूप से जुड़ी हुई हैं। इस पारंपरिक शिल्प में, महिलाएं अक्सर अपने कपड़ों को दोबारा रंगकर उनका उपयोग करती हैं। प्राकृतिक रंगों की पसंद, जो समय के साथ धीरे-धीरे लुप्त होने के लिए जाने जाते हैं, इन रंगों ने इस प्रथा को न केवल एक आवश्यकता बना दिया, बल्कि इन शिल्पों में निहित संस्कृति और स्थिरता का एक प्रामाणिक प्रतिबिंब भी बना दिया।

1. **प्रकृति को पुनर्जीवित करें:** एक रैखिक से एक चक्रीय अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने से हमारा दृष्टिकोण घटते संसाधनों से पुनर्जनन की ओर स्थानांतरित हो जाता है। पुनर्जनन दृष्टिकोण में बदलाव करने से हमें प्राकृतिक प्रणालियों की दक्षता के अनुसार करने की सुविधा मिलती है, जहां कुछ भी बर्बाद नहीं होता है।

   क. जल संरक्षण: कई शिल्प प्रथाओं में कम पानी से उत्पादन विधियों पर जोर दिया जाता है, आम तौर पर तेजी से होने वाली कपड़े की रंगाई जैसी जल-गहन प्रक्रियाओं से बचा जाता है, जिससे पानी की खपत और प्रदूषण काफी कम हो सकता है। पत्तियों, जड़ों और फूलों से प्राप्त पौधे से हासिल किए गए रंग, रासायनिक रंगों की जगह लिए जा सकते हैं, जल प्रदूषण को कम कर सकते हैं और संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं।

   ख. टिकाऊ सामग्री : पारंपरिक शिल्पों में अक्सर टिकाऊ, पर्यावरण-अनुकूल सामग्री, जैसे कार्बनिक फाइबर, प्राकृतिक रंग और पुनर्नवीनीकरण सामग्री के उपयोग को प्राथमिकता दी जाती है। यह फोकस टिकाऊ सामग्रियों पर होने से संसाधन निष्कर्षण और उत्पादन से जुड़े पर्यावरण के प्रभावों में काफी कमी आ जाती है। पॉलिएस्टर या ऐक्रेलिक जैसी सिंथेटिक और संसाधन-गहन सामग्री की जगह पौधे-आधारित सामग्री और प्राकृतिक फाइबर, जैसे हैम्प, बांस, जैविक कपास और जूट उपयोग किए जा सकते हैं।

   ग. कम ऊर्जा खपत और कार्बन पृथक्करण : हस्तनिर्मित शिल्प, मशीनीकृत बड़े पैमाने पर उत्पादन की तुलना में कम ऊर्जा-गहन होने के कारण, कार्बन शमनकर्ता के रूप में कार्य करते हैं। इसके अलावा, कुछ शिल्प, विशेष रूप से लकड़ी जैसी प्राकृतिक सामग्री से जुड़े शिल्प, कार्बन पृथक्करण की सुविधा प्रदान करते हैं, उत्पादों को कार्बन भंडार में बदल देते हैं।

स्थिरता के लाभ

	शिल्प उत्पादन	तेजी से उत्पादन
नवीकरणीय सामग्री का उपयोग	स्थानीय रूप से प्राप्त प्राकृतिक सामग्री	
अपशिष्ट उत्पादन	संसाधनों का कुशल उपयोग, कम चीज़ें फेंकना	अधिक उत्पादन, कम उत्पाद जीवनकाल
प्रदूषण	कम रासायनिक गहन प्रक्रियाएं	रासायनिक रंग, माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण

कार्बन की कम मात्रा

	शिल्प उत्पादन	तेजी से उत्पादन
ऊर्जा की खपत	हस्तनिर्मित प्रक्रियाएं	औद्योगिक विनिर्माण प्रक्रियाएँ
कार्बन फुटप्रिंट	स्थानीय सोर्सिंग, कम परिवहन	वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला, उच्च परिवहन उत्सर्जन

कम ऊर्जा

	शिल्प उत्पादन	तेजी से उत्पादन
ऊर्जा दक्षता	बिजली से चलने वाली मशीनरी पर कम निर्भर	ऊर्जा गहन मशीनरी पर बड़े पैमाने पर उत्पादन निर्भर
नवीकरणीय ऊर्जा उपयोग	अक्सर प्राकृतिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग किया जाता है	गैर-नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर

शिल्प उत्पादन   तेजी से उत्पादन

शिल्प से जुड़ी स्थायी फैशन दुविधाएं

फास्ट फैशन के लोकाचार के प्रभाव वाली दुनिया में गति और पैमाने को प्राथमिकता दी जाती है, इस दौर में शिल्प उद्योग को कई दुविधाओं का सामना करना पड़ता है। पारंपरिक शिल्प उत्पादन-से-उपभोग प्रणालियां, जो अपनी गहरी पारिस्थितिक जागरूकता के लिए जानी जाती हैं, आर्थिक और पारिस्थितिक विचारों के बीच सामंजस्य बिठाने की चुनौती से जूझ रही हैं।

'नागालैंड में, हाल के एक रुझान में देखा गया है कि बुनकर ऐक्रेलिक यार्न की व्यापक उपलब्धता और सामर्थ्य के कारण इस पर तेजी से अधिक निर्भर हो रहे हैं, जिससे प्राकृतिक यार्न के उपयोग में गिरावट आई है। कई बुनकर चिंता व्यक्त करते हैं कि प्राकृतिक धागे की तैयारी के लिए लगने वाले आवश्यक समय और कमर करघे को पीछे बांधने की उनकी शारीरिक रूप से कड़ी गतिविधि से न तो उनके मुआवजे पर्याप्त होते हैं और न ही इसे सांस्कृतिक महत्व के लिए स्वीकार किया जाता है।'

'मैं इस बात पर जोर देना चाहूंगा कि सभी हथकरघे पर्यावरण के अनुकूल नहीं हैं। हमें निश्चित रूप से पावरलूम के साथ प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए, हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी हथकरघा प्रथाएं पर्यावरण के लिए जिम्मेदार हैं। सिर्फ इसलिए कि यह हथकरघा है, इसका अर्थ यह नहीं है कि यह पर्यावरण के अनुकूल है। हमें भावी पीढ़ियों और पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करने की आवश्यकता है। क्या हम ऐक्रेलिक और रासायनिक रंगों का उपयोग कर रहे हैं जो अपशिष्ट और मिट्टी के क्षरण में योगदान करते हैं? ये ऐसी चुनौतियां हैं जिनका हमें केवल पावरलूम और हथकरघा के बीच चयन करने के बजाय समाधान करने की आवश्यकता है।'

भारतीय शिल्प की आंतरिक स्थिरता उनके स्थानीय-केंद्रित दृष्टिकोण से उत्पन्न होती है। कारीगर तात्कालिक परिवेश से सामग्री लेकर स्थानीय सामग्रियों का उपयोग करते हैं। यह क्षेत्र-केंद्रित दृष्टिकोण सुनिश्चित करता है कि शिल्प वास्तव में स्थायी हैं। हालांकि, सभी शिल्प अपने मूल लोकाचार को संरक्षित करने में कामयाब नहीं हुए हैं; औद्योगिकीकरण, जलवायु प्रभाव और विभिन्न आर्थिक चुनौतियों के कारण होने वाले दबाव से कुछ शिल्पों को ऐसी प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित किया गया है जो पूरी तरह से स्थायी या गोलाकार नहीं हैं। बड़ी मात्रा में की गई निरंतर मांग, तेजी से प्रदायगी और कम कीमत पर एकरूपता होने से कई उत्पादकों और खुदरा बिक्रेताओं को शिल्प कौशल के संयोजन को अपनाने के लिए मजबूर किया गया है। यहां तक कि कभी-कभी शिल्पकार भी हथकरघा के बजाय पारंपरिक ब्लॉकप्रिंटिंग या पावरलूम पर स्क्रीन प्रिंटिंग जैसी शीघ्र तकनीकों का सहारा लेते हैं, जिसे अक्सर 'शिल्प धुलाई (क्राफ्ट वॉशिंग)' कहा जाता है।[34]

'बहुत से लोग शिल्प के वास्तविक मूल्य को नहीं समझते हैं। यह एक धीमी, सोची-समझी प्रक्रिया है और आप इसकी मांग को वैसे नहीं बढ़ा सकते जैसे आप बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्तुओं के साथ करते हैं। लेकिन उस धीमी प्रक्रिया के अंदर उल्लेखनीय ताकत और भावनात्मक जुड़ाव छिपा है। शिल्प एक ऐसी चीज़ है जो पीढ़ियों से चली आ रही है, और केवल यही इसमें अविश्वसनीय मूल्य जोड़ता है। उदाहरण के लिए, गुजरात और जयपुर के उत्कृष्ट प्रिंटों को लें। वे सावधानीपूर्वक हाथ से तैयार किए जाते हैं और जब आप उनकी तुलना डिजिटल रूप से मुद्रित संस्करणों से करते हैं, तो हाथ से तैयार प्रिंट में कारीगर मूल्य खो जाता है।'

इन जटिलताओं से निपटने के लिए, मजबूत प्रणालियों की तत्काल आवश्यकता है जिनसे शिल्प की वर्तमान स्थिति और स्थिरता सिद्धांतों के साथ इसके संरेखण का आकलन किया जाए। भारत की शिल्प कौशल की समृद्ध परंपरा के नेतृत्व में एक स्थायी फैशन उद्योग की ओर उचित परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए ऐसी प्रणालियाँ आवश्यक हैं।

"शिल्प की आंतरिक विशेषता खुद को आगे बढ़ाने के लिए पारंपरिक व्यापार मॉडल के लिए उपयुक्त नहीं है, इसलिए पारंपरिक वाणिज्यिक कार्यनीति का उपयोग करके इसके विस्तार की उम्मीद करने से सही समाधान प्रदान नहीं किया जा सकता है।'

- देविका पुरंदरे, प्रमुख, क्षेत्रीय कला कार्यक्रम, दक्षिण एशिया, ब्रिटिश काउंसिल

'हम विकास की मानसिकता और सफलता की हमारी परिभाषा पर कैसे सवाल उठा सकते हैं? सफलता का क्या अर्थ है, इसे परिभाषित करना महत्वपूर्ण है। हमें वास्तव में कितनी आवश्यकता है? यह हर चीज़ का स्रोत है।'

- गीतांजलि कासलीवाल संस्थापक और प्रबंध निदेशक - अनन ताया रिटेल्स प्राइवेट लिमिटेड

सफलता के मेट्रिक्स को सांस्कृतिक रूप से कैसे परिभाषित किया जाता है, इसकी पुनर्गणना करना महत्वपूर्ण है। यह हमारे पथ को आकार देता है, उपलब्धियां तय करता है, संसाधनों का संचालन करता है और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए लक्ष्य निर्धारित करता है। इन चुनौतियों के अलावा, शिल्प क्षेत्र को असंख्य अन्य दुविधाओं, जैसे उचित वेतन और काम करने की स्थिति, सांस्कृतिक विनियोजन और पारंपरिक कौशल के क्षरण से संबंधित मुद्दे का सामना करना पड़ता है।

शोध के दौरान सामने आई इन दुविधाओं के बावजूद, हमने इन चुनौतियों से निपटने वाले व्यक्तियों और संगठनों की पहचान की और कुछ सर्वोत्तम प्रथाओं की पहचान की। ये स्थायी फैशन उद्यम, उद्यमी, एमएसएमई और अच्छी तरह से स्थापित कंपनियां, शिल्प कौशल और स्वदेशी ज्ञान के लोकाचार, स्वदेशी पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों के पुनरुद्धार और शिल्प उत्पादन में गोलाकार अर्थव्यवस्था सिद्धांतों के एकीकरण के माध्यम से धीमी फैशन की इस बढ़ती आवश्यकता को पूरा कर रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिल्प की भूमिका

शिल्प और कारीगरी के काम की संयुक्त राष्ट्र के कई सतत विकास लक्ष्यों (यूएन एसडीजी) की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका है।

भूमि पर जीवन (एसडीजी 15)

अनेक शिल्प प्रथाओं में प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग शामिल होता है। पर्यावरण और इसकी जैव विविधता के प्रति सम्मान का भाव होने से स्थलीय पारिस्थितिक तंत्र की सुरक्षा, पुनर्स्थापन और स्थायी उपयोग को बढ़ावा देने के प्रयासों का समर्थन किया जा सकता है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में बांस शिल्प, विशेष रूप से असम, मेघालय और त्रिपुरा जैसे राज्यों में, बांस वन पारिस्थितिकी तंत्र में बाधा डाले बिना प्रचुर बांस संसाधनों का उपयोग किया जाता है, इस प्रकार स्थलीय संसाधनों के स्थायी उपयोग को बढ़ावा मिलता है।

जिम्मेदार खपत और उत्पादन (एसडीजी 12)

पारंपरिक शिल्प में अक्सर स्थानीय रूप से प्राप्त, स्थायी सामग्रियों और पर्यावरण-अनुकूल तरीकों का उपयोग शामिल होता है। इस प्रकार, शिल्प उद्योग जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन पैटर्न को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

असमानताओं में कमी (एसडीजी 10)

समाज के कई वर्गों में, शिल्प-निर्माण कौशल हाशिए पर रहने वाले समूहों को संरक्षण दिया जाता है, जिनमें स्वदेशी समुदाय, महिलाएं और अक्षमताओं वाले लोग शामिल हैं। शिल्प क्षेत्र में समावेशिता को बढ़ावा देकर इससे सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को कम करने में मदद मिल सकती है। भारत में शिल्प सहकारी समितियां, जैसे सेवा (स्व-रोज़गार महिला संघ), महिला कारीगरों को अपने उत्पाद सीधे ग्राहकों को बेचने में सक्षम बनाती हैं, जिससे जेंडर और आर्थिक असमानताएं कम होती हैं।

कोई गरीबी नहीं (एसडीजी 1)

शिल्प उत्पादन में अक्सर कौशल-गहन कार्य शामिल होता है, जो दुनिया भर में लाखों कारीगरों को आजीविका प्रदान करता है। शिल्प बाजारों में सुधार और गुणवत्तापूर्ण शिल्प उत्पादन की क्षमता को मजबूत करके, गरीबी को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

जेंडर समानता (एसडीजी 5)

शिल्प उद्योग, मुख्य रूप से महिलाओं को रोजगार देते हुए, जेंडर समानता (एसडीजी 5) प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे आय के लचीले तरीकों, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के युग में महत्वपूर्ण विकल्प प्रदान करते हैं। हालांकि, पर्यावरण में आने वाले व्यवधान जेंडर असमानताओं को बढ़ा सकते हैं, जिससे महिला कारीगरों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। इसे संबोधित करने के लिए, शिल्प क्षेत्र की जलवायु कार्रवाई जेंडर-उत्तरदायी होनी चाहिए, शिल्प आधारित जलवायु कार्रवाई में महिलाओं को शामिल करना, उनकी जरूरतों को संबोधित करना और एसडीजी 5 के साथ संरेखित करते हुए स्थिरता को बढ़ावा देना चाहिए।

अच्छा कार्य और आर्थिक विकास (एसडीजी 8)

शिल्प से प्राप्त आय और रोजगार से अर्थव्यवस्था में योगदान दिया जाता है। शिल्प क्षेत्र का विकास विशेष रूप से ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में अच्छे कार्य अवसर पैदा करने में मदद मिल सकती है। स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देना जिसमें स्थानीय शिल्प भी शामिल है, आर्थिक विकास में योगदान मिल सकता है। खादी, हाथ से काता गया और हाथ से बुना हुआ कपड़ा है, जिससे ग्रामीण भारत में रोजगार के अवसर पैदा करके आर्थिक विकास में योगदान मिलता है। खादी और ग्रामोद्योग आयोग (केवीआईसी) खादी को एक स्थायी और आकर्षक उद्योग के रूप में बढ़ावा देने के लिए काम करता है।

उद्योग, नवाचार और मूलसंरचना (एसडीजी 9)

शिल्प सदियों के ज्ञान और नवीनता का प्रतीक हैं। शिल्प उद्योगों के समर्थन से देश पारंपरिक नवाचार को बढ़ावा मिलता है और लचीली मूलसंरचना का निर्माण कर सकते हैं जो उनके समुदायों की जरूरतों को पूरा कर सकें।

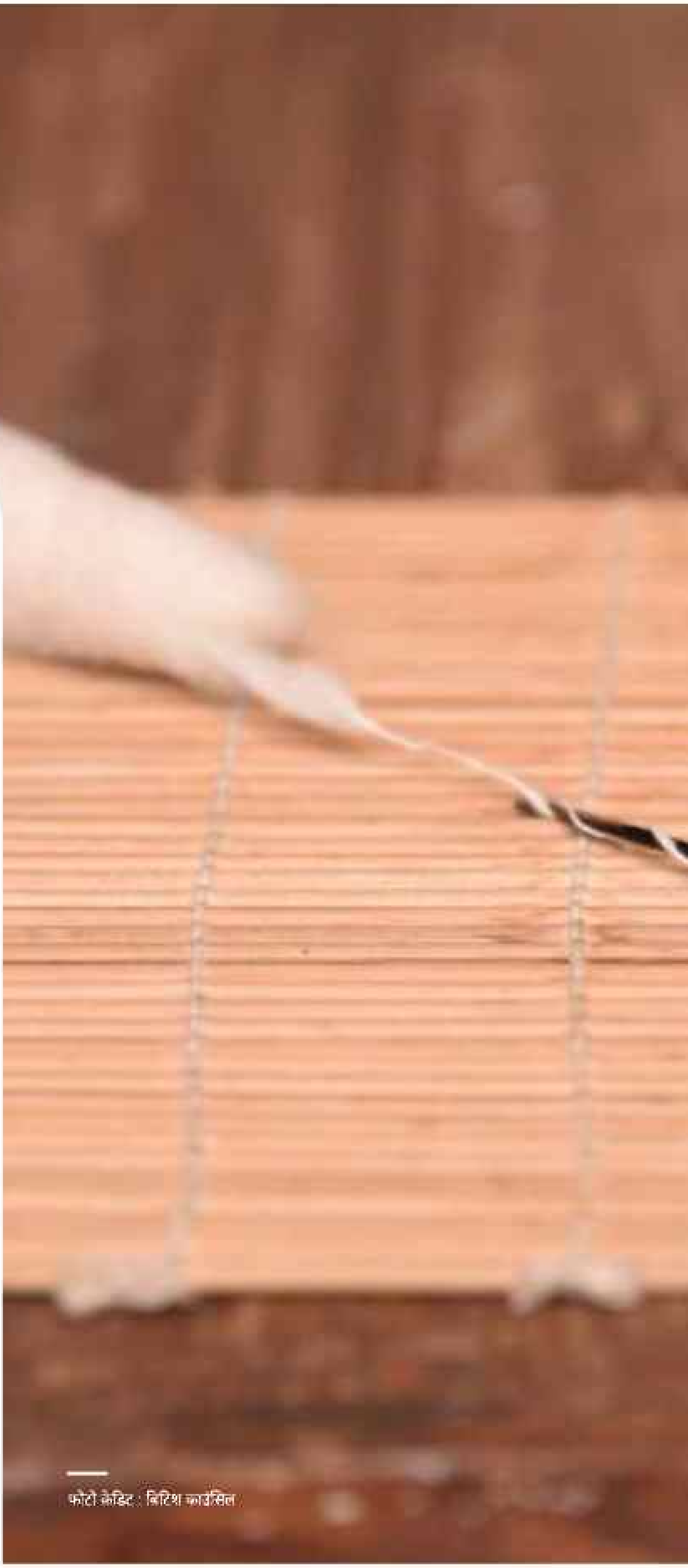

फोटो क्रेडिट : ब्रिटिश काउंसिल

III. स्थायी फैशन के रास्ते

बाधाओं पर काबू पाना और परिवर्तन में तेजी लाना

इस अध्याय में भारत के शिल्प क्षेत्र में लचीलेपन और अनुकूलन की कहानी को प्रस्तुत किया गया है। इसमें बात पर प्रकाश डाला जाता है कि पर्यावरण के मुद्दों और स्थायी प्रथाओं की तत्काल आवश्यकता के जवाब में इस क्षेत्र में फिर से कैसे विकसित हो रहा है। महत्वपूर्ण हस्तक्षेप के क्षेत्रों - स्वदेशी पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों के पुनरुद्धार से लेकर शिल्प उत्पादन में गोलाकार अर्थव्यवस्था सिद्धांतों के एकीकरण तक, प्रगतिशील प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने से लेकर सामग्रियों के साथ नवाचार करने और नीति और समर्थन के महत्व पर प्रकाश डालने तक पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।

इस पूरे अन्वेषण के दौरान हम कारीगरों और संगठनों के प्रयासों को प्रत्यक्ष रूप से देखेंगे क्योंकि वे स्थिरता की सीमाओं को फिर से परिभाषित करते हैं। उनके दृष्टिकोण में नवीकरणीय, स्थानीय रूप से खरीदी गई सामग्रियों, ऊर्जा-संरक्षण उत्पादन तकनीकों और उत्पाद स्थायित्व को बढ़ाने के दौरान अपशिष्ट को कम करने के उद्देश्य से नए डिजाइनों का कार्यनीतिक उपयोग शामिल है। यहां चर्चा की गई प्रथाएं केवल सैद्धांतिक विचार नहीं हैं, बल्कि मूर्त कार्य हैं जिनसे वास्तविक दुनिया में बदलाव आ रहे हैं।

'प्रत्येक कारीगर एक जलवायु कार्यकर्ता है। उनके द्वारा दिए गए कथनों या उनके द्वारा किए गए कार्यों के कारण नहीं, बल्कि उनके जीवन जीने के तरीके, उत्पादन करने के तरीके और अपना व्यवसाय करने के तरीके के कारण ऐसा हुआ।

उनकी कारीगरी के सिद्धांतों में मौन, शब्दहीन, अनकही, अंतर्निहित और गहराई से निहित गोलाकार अर्थव्यवस्था, पुन: प्रयोजन, पुनर्चक्रण, मरम्मत, कम ऊर्जा उपयोग, न्यूनतम अपशिष्ट और सचेत रूप से उत्पादन की प्रथाएं हैं। प्रकृति और दूसरों के प्रति जागरूकता, अनुकूलन और चिंता, एक स्थायी दुनिया के लिए उनका रोजमर्रा का योगदान है।

भविष्य वास्तव में कारीगरों का है - हमें इसे पहचानने, सीखने और अभ्यास करने की आवश्यकता है।

- डॉ. रितु सेठी
अध्यक्ष, क्राफ्ट रिवाइवल ट्रस्ट

फ़ोटो क्रेडिट - [illegible]

THREAD (थ्रेड) रूपरेखा

THREAD रूपरेखा को प्रमुख हस्तक्षेप क्षेत्रों को रेखांकित करने और मौजूदा सर्वोत्तम प्रथाओं को सामने लाने के लिए प्रस्तावित किया गया है जो स्थायी फैशन के लिए मार्ग प्रदान करते हैं।

हस्तक्षेप के प्रमुख क्षेत्र	
T	Technology and innovation प्रौद्योगिकी और नवाचार
H	Heritage materials and innovation विरासत सामग्री और नवाचार
R	Research अनुसंधान
E	Ecosystem for craftspeople and craft led-enterprises शिल्पकारों और शिल्प आधारित उद्यमों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र
A	Advocacy and policy समर्थन और नीति
D	Development funds and investment विकास निधि और निवेश

08. प्रौद्योगिकी और नवाचार

प्रौद्योगिकी और नवाचार से कई उद्योगों को नए आकार दे रहे हैं और शिल्प क्षेत्र इसका कोई अपवाद नहीं है। जबकि प्रौद्योगिकी से अक्सर पारंपरिक शिल्प कौशल पर इसके प्रभाव के बारे में चिंताएं उठती है, किंतु जब सोच-समझकर उपयोग किया जाता है तो यह सर्वोत्तम प्रथाओं को बढ़ाने और स्थायी फैशन में नए अवसरों को सुविधाजनक बनाने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में काम कर सकता है। हाल के वर्षों में, प्रौद्योगिकी भारतीय शिल्पकारों और उद्यमों के लिए एक महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में उभरी है, जो उनके शिल्प, बाजार पहुंच, स्थिरता और पारदर्शिता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

1. **बाजार तक प्रत्यक्ष पहुंच:** प्रौद्योगिकी से भौगोलिक बाधाओं को फिर से संकल्पित किया गया है और तोड़ा है, जिससे कारीगरों को वैश्विक बाजारों तक सीधी पहुंच प्रदान की गई है। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म और ई-कॉमर्स समाधान सेतु के रूप में कार्य करते हैं, जो कारीगरों को दुनिया भर के उपभोक्ताओं से सीधे जोड़ते हैं।
2. **पता लगाने की क्षमता और पारदर्शिता:** ब्लॉकचेन और अन्य डिजिटल उपकरणों का एकीकरण शिल्प आपूर्ति श्रृंखला के अंदर पता लगाने की क्षमता और पारदर्शिता को शामिल करने में सहायक है। इससे उपभोक्ताओं को सूचित विकल्प चुनने का अधिकार मिलता है, जिससे स्थायी और नैतिक रूप से उत्पादित शिल्प की मांग को बढ़ावा मिलता है। परिधान के बटनों में रेडियो फ्रीक्वेंसी आइडेंटिफिकेशन (आरएफआईडी) तकनीक के साथ ११.११ जैसी पहल, संपूर्ण ट्रेसेबिलिटी प्रदान करती है, जिससे उपभोक्ताओं को किसी उत्पाद के इतिहास, उसके निर्माताओं और उसके पर्यावरण के पदचिह्न (फुटप्रिंट) का पता लगाने की सुविधा मिलती है।
3. **प्रकृति-आधारित समाधान:** प्रौद्योगिकी शिल्प क्षेत्र के अंदर प्रकृति आधारित समाधानों की खोज और कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान करती है। इसमें कच्चे माल की स्थायी सोर्सिंग और पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन प्रक्रियाएं शामिल हैं। उदाहरण के लिए, ब्रिगिट सिंह की 'जल संरक्षण पहल' जैसी पहल से डाई द्वारा होने वाले प्रदूषण को कम करने और कुशल जल प्रबंधन और कुशल जल प्रबंधन के लिए पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं की शुरुआत होती है।
4. **पर्यावरण के प्रभाव को कम करना:** कारीगर और उद्यम पर्यावरण के प्रभाव को कम करने वाले रचनात्मक समाधान तैयार करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, परिधान पैकेजिंग के लिए डूडलेज और लाइफसाइकिल द्वारा उपयोग की जाने वाली स्वयं नष्ट होने की तकनीक से एकल-उपयोग प्लास्टिक पैकेजिंग के पर्यावरण के परिणामों से प्रभावी तरीके से निपटा जाता है। काशा ब्रांड द्वारा अपने ग्राहकों को पुनर्विक्रय और मरम्मत सेवाएं प्रदान करके उत्पाद के उपयोग को बढ़ाने के लिए तकनीकी समाधानों का लाभ उठाया जाता है। इस दृष्टिकोण से न केवल स्थिरता और टिकाऊपन को बढ़ावा मिलता है बल्कि फैशन उपभोग से जुड़े पारिस्थितिक पदचिह्न (फुटप्रिंट) में भी काफी कमी आती है।
5. **प्रक्रिया में सुधार:** शिल्प उद्योग न केवल अपने उत्पादों में बल्कि अपनी प्रक्रियाओं में भी विकसित हो रहा है। उदाहरण के लिए, तरंगिनी स्टूडियो की ब्लॉक प्रिंटिंग इकाई ने प्राकृतिक रंगों और ग्लोबल ऑर्गेनिक टेक्सटाइल स्टैंडर्ड (जीओटीएस) को अपनी प्रक्रियाओं में प्रमाणित रंगों और सावधानीपूर्वक उत्पादन तकनीकों के उपयोग के माध्यम से अपने पर्यावरण के पदचिह्न को सफलतापूर्वक कम किया है और नेट-शून्य लक्ष्य हासिल किया है।
6. **कारीगरों की भलाई और शिल्प कौशल को बढ़ाना:** उत्पादन की गुणवत्ता में सुधार और कारीगरों के स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए कारीगरों को उपकरणों की सुविधा प्रदान करना। उदाहरण के लिए, टाटा अंतरण परियोजना ने कारीगरों को स्थिर लकड़ी के करघों से सुसज्जित किया है, जिससे बुनाई प्रक्रिया की स्थिरता में काफी सुधार हुआ है। इस उन्नयन से आउटपुट बुनाई की गुणवत्ता में विसंगतियों में कमी आई है, जिससे समग्र शिल्प कौशल में वृद्धि हुई है। नागालैंड में नवप्रवर्तकों ने एक एर्गोनोमिक स्टूल विकसित किया है जो बैकस्ट्रैप करघा बुनाई की कठिन प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाता है, कारीगरों की पीठ पर शारीरिक तनाव को कम करता है और दर्द को कम करता है। ये नवाचार न केवल कारीगरों के आराम में सुधार करते हैं बल्कि बेहतर स्वास्थ्य परिणामों में भी योगदान करते हैं।

ब्रिगिट सिंह

प्रकृति-आधारित समाधान के साथ शिल्प और स्थायी जल प्रबंधन

जयपुर के एक प्रसिद्ध ब्लॉक प्रिंट कलाकार ब्रिगिट सिंह ने आस-पास के जलाशयों को डाई प्रदूषण से बचाने के लिए एक कैना लिली जल निस्यंदन प्रणाली कार्यान्वित की है और वे स्थायी जल प्रबंधन को बढ़ावा देती हैं। कैना लिली एक प्राकृतिक जल शोधक (नेचुरल वॉटर प्यूरीफायर) है, जो जलाशयों से प्रदूषकों को प्रभावी तरीके से अवशोषित करता है। अध्ययनों में उपोष्णकटिबंधीय परिस्थितियों में अपशिष्ट जल से कार्बन, नाइट्रोजन और फास्फोरस को हटाने में इसकी क्षमता दिखाई गई है।[35] इसकी मजबूत जड़ें लाभकारी जीवों के लिए फिल्टर और आवास के रूप में काम करती हैं। कैना लिली विषाक्त पदार्थों के प्रति लचीली होती है, जो उन्हें जल शोधन (वॉटर प्यूरीफायर) के लिए आदर्श बनाती है।

उन्होंने जल उपचार और संरक्षण में विशेषज्ञता रखने वाले पुणे स्थित एक इंजीनियर के साथ सहयोग करते हुए, प्राकृतिक रेत और गाय के गोबर जैसी मिश्रित सामग्री से बने नए फिल्टर डिजाइन किए। फिल्टर एक शक्तिशाली जड़ प्रणाली के विकास को बढ़ावा देते हैं और ये प्रदूषकों को पचा देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पानी नगरपालिका फिल्टर पानी से बेहतर होता है और लगभग पीने योग्य होता है। उनके कार्यस्थल के दौरे के दौरान, हमारी टीम ने इस छानने की प्रणाली को क्रियाशील देखा और पानी पुन: उपयोग के लिए तैयार था।

फ़िल्टर रोटेटिंग आधार पर काम करते हैं, एक फ़िल्टर का उपयोग एक सप्ताह के लिए किया जाता है और फिर दूसरे पर स्विच किया जाता है। यह विधि प्रत्येक फिल्टर को दूषित पदार्थों को पचाने, रुकावट को रोकने और सिस्टम को लंबे समय तक चलने वाली दक्षता सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त समय देती है। ये फिल्टर दोबारा लगाए जाने की आवश्यकता के बिना 17 वर्षों से उपयोग में हैं।

फ़ोटो क्रेडिट: श्रुति सिंह

11.11

पारदर्शी शिल्प आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन के लिए आरएफआईडी और नियर फील्ड कम्युनिकेशन का उपयोग करना

11:11 एक धीमा फैशन ब्रांड है जो स्थिरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए जाना जाता है। वे पर्यावरण के प्रभाव को कम करने के लिए अपने कपड़ों की रंगाई के लिए पौधों से बनी सामग्रियों का उपयोग करने को प्राथमिकता देते हैं। ब्रांड ने अपने कपड़ों में आरएफआईडी और नियर फील्ड कम्युनिकेशन (एनएफसी) तकनीक पेश की है।

ये प्रौद्योगिकियां बड़ी चतुराई से परिधान के बटनों में अंतर्निहित होती हैं। जब उपभोक्ता इन बटनों को अपने स्मार्टफ़ोन से स्कैन करते हैं तो उन्हें ढेर सारी जानकारी तक पहुंच प्राप्त होती है। वे अपने परिधान की पूरी यात्रा, उसके निर्माण से लेकर उसके हाथ में आने तक का पता लगा सकते हैं। इसमें उत्पादन के सामाजिक और पर्यावरण के पहलुओं की अंतर्दृष्टि शामिल है।

आरएफआईडी और एनएफसी प्रौद्योगिकियों को कार्यान्वित करते हुए, 11.11 का लक्ष्य फैशन उद्योग में पारदर्शिता और जिम्मेदारी को बढ़ावा देना है। वे चाहते हैं कि उपभोक्ताओं को उनके कपड़ों की उत्पत्ति और उनकी पसंद के प्रभाव की गहरी समझ हो। यह नवोन्मेषी दृष्टिकोण फैशन से परे है; यह उपभोक्ताओं, कारीगरों और पर्यावरण के बीच संबंध बनाने के बारे में है।

फ़ोटो क्रेडिट : [illegible]

'पारंपरिक सांस्कृतिक ज्ञान और अभिव्यक्तियां स्वाभाविक रूप से प्रकृति से जुड़ी हुई हैं और जो कारीगर पीढ़ियों से इसे अपना रहे हैं वे पृथ्वी से जुड़े हुए हैं। मेरा मानना है कि भविष्य में स्थिरता हासिल करने के लिए ये प्रथाएं महत्वपूर्ण हैं'

- श्रावणी देशमुख, सांस्कृतिक बौद्धिक संपदा अधिकार पहल

फ़ोटो क्रेडिट : डॉल्फ़िन पब्लिक

डूडलेज

नवीन पैकेजिंग समाधानों के माध्यम से प्लास्टिक प्रदूषण का मुकाबला करना

डूडलेज एक ऐसा फैशन ब्रांड है जो पुराने रखे हुए (डेडस्टॉक) कपड़ों को सुंदर परिधानों में बदल देता है, इसने हाल ही में परिधान पैकेजिंग में एकल उपयोग प्लास्टिक के कारण होने वाले प्लास्टिक प्रदूषण पर रोक लगाने के लिए लाइफसाइकिल के साथ साझेदारी की है। उनका सहयोग लाइफसाइकिल की अपने आप नष्ट होने की तकनीक को परिधान बैग में मिलाकर डूडलेज की पैकेजिंग को बेहतर बनाने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य फैशन उद्योग में सर्कुलर सामग्रियों को अपनाने को प्रोत्साहित करना है, विशेष रूप से वे जो महासागरों में प्लास्टिक प्रदूषण और माइक्रोप्लास्टिक से लड़ते हैं।

लाइफसाइकिल की तकनीक में पारंपरिक परिधान बैग का विकल्प प्रदान किया जाता है। यह बैग के उपयोग योग्य जीवनकाल के दौरान रीसाइक्लिंग कर देता है और पारंपरिक रीसाइक्लिंग सिस्टम से निकलने वाले प्लास्टिक के लिए एक समाधान प्रदान करता है, इसे बायोट्रांसफॉर्मेशन के माध्यम से बायोडिग्रेडेबल मोम में बदल देता है। यह मोम कवक और बैक्टीरिया को आकर्षित करता है, जो इसे भोजन के रूप में उपभोग करते हैं, लगभग दो वर्षों में इसे विषाक्त पदार्थों या माइक्रोप्लास्टिक्स को छोड़े बिना प्रकृति में वापस कर देते हैं।

डूडलेज द्वारा लाइफसाइकिल की तकनीक को अपनी पैकेजिंग में शामिल करने का उद्देश्य फैशन क्षेत्र में पारदर्शिता और स्थिरता का समर्थन करना है। इसका उद्देश्य पैकेजिंग की पर्यावरण के लागतों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और एक ऐसा विकल्प पेश करना है जो महासागरों के लिए बेहतर हो।

09. विरासत सामग्री और नवाचार

विरासत सामग्री, प्राकृतिक फाइबर और पौधे-आधारित प्रक्रियाएं फास्ट फैशन की पर्यावरण के लागतों के लिए एक प्रामाणिक, पर्यावरण-अनुकूल विकल्प प्रस्तुत करती हैं। चुनौती जलवायु कार्रवाई के लिए उनके महत्व को समझने, इन तकनीकों की सुरक्षा और पुनर्जीवित करने, फैशन पारिस्थितिकी तंत्र के लिए उनकी उपलब्धता में सुधार करने और उनके पर्यावरण के लाभों के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने में निहित है।

1. **स्वदेशी ज्ञान का संरक्षण:** स्वदेशी सामग्रियों में अक्सर अद्वितीय गुण होते हैं, जिनमें से कुछ को आधुनिक विज्ञान द्वारा मान्यता दी जानी शुरू हो गई है। उदाहरण के लिए, बांस में बायोडिग्रेडेबिलिटी और प्रभावशाली तन्य शक्ति दोनों होती है। फिर भी इन स्थायी कच्चे माल को आसानी से उपलब्ध सस्ते सिंथेटिक विकल्पों से खतरों का सामना करना पड़ता है। इस बदलाव के कारण स्वदेशी, पर्यावरण-अनुकूल सामग्रियों के उपयोग में गिरावट आई है।
2. **प्राकृतिक रेशे और पुनरुद्धार के प्रयास:** माटी जैसे संगठनों ने बीज बैंक और यार्न बैंक जैसी पहल के माध्यम से स्वदेशी कच्चे माल की पहुंच में सुधार के प्रयास किए हैं। उनका उद्देश्य पर्यावरण-अनुकूल सामग्रियों और तकनीकों को पुनर्जीवित करना है जो पॉली-आधारित कपड़ों और तेज़ फैशन के उदय के साथ कम हो गए थे। काला कॉटन और देसी ऊन (देसी ऊन) का दोबारा आना अधिक स्थायी उत्पादन प्रक्रियाओं के लिए स्वदेशी कच्चे माल को पुनर्जीवित करने के महत्व के प्रमाण के रूप में कार्य करता है।
3. **स्थायी सामग्रियों में नवाचार:** धीमे फैशन डिजाइनर पारंपरिक ज्ञान में निहित पुनर्योजी, बायोडिग्रेडेबल सामग्रियों और बुनाई तकनीकों को अपनाकर भौतिक सीमाओं को आगे बढ़ा रहे हैं। फेंकी गई सामग्रियों को पुनर्चक्रित करना, फूलों के कचरे से शाकाहारी चमड़ा अपशिष्ट पैटर्न-कटिंग जैसे नवीन दृष्टिकोण स्थिरता और परंपरा के बीच तालमेल को प्रदर्शित करते हैं।

गोल्डन फेदर्स एक पहल है जहां डिजाइनर बेकार हो चुके चिकन फेदर्स का पुनर्चक्रण करते हैं और उन्हें स्कार्फ और स्टोल जैसे शानदार उत्पादों में बदलते हैं। एक अन्य उदाहरण फ़्लेदर है - मंदिरों से एकत्र किए गए फूलों के कचरे से प्राप्त एक शाकाहारी चमड़ा। यह स्थायी सामग्री न केवल जानवरों के चमड़े का विकल्प प्रदान करती है बल्कि गंगा नदी में फूलों के कचरे की गंभीर समस्या का भी समाधान करती है। इरो इरो ब्रांड शून्य-अपशिष्ट दृष्टिकोण अपनाता है, जो सदियों पुरानी भारतीय पैटर्न कटिंग तकनीकों की याद दिलाता है। कपड़े के स्क्रैप को सावधानी से छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाता है और फिर कचरे की क्षमता को फिर से कल्पना करने के लिए आपस में जोड़ा जाता है।

इस तरह के नवाचार डिजाइन के साथ स्थिरता के विलय की क्षमता को उजागर करते हैं, जिससे स्थायी फैशन के लिए नए रास्ते खुलते हैं।

> सभी देशों और संस्थानों में, इस बात की मान्यता बढ़ रही है कि सामग्रियों में स्वयं-संयोजन की गुणवत्ता होती है, जिसमें डिज़ाइन उनके अंदर अंतर्निहित होता है। परिप्रेक्ष्य में यह बदलाव सामग्री को आकार देने की सुविधा पर अधिक जोर दिया जाता है। लोगों की इन सामग्रियों की उत्पत्ति में रुचि इन सब में बढ़ रही है कि - मिट्टी कहां से आती है, उपयोग किए जाने वाले रेशों के प्रकार - और प्रकृति को अंतिम डिजाइन में स्वयं को अभिव्यक्त करने की सुविधा देने में। कारीगर और डिज़ाइनर मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, और उन लोगों के ज्ञान का सम्मान करते हैं जो प्रकृति के प्रवाह को गहराई से समझते हैं।
>
> भौतिक ज्ञान और डिज़ाइन के इस पुनर्मिलन ने उन कारीगरों को सशक्त बनाया है जो अपनी सामग्रियों से गहराई से जुड़े हुए हैं। वे समझते हैं कि फसल कब काटनी है, फसल दोबारा कब उगेगी और यहां तक कि सही मौसमी रंग भी। यह ऋतुओं के अनुरूप डिजाइन का प्रतिबिंब है, एक अद्भुत तालमेल है।
>
> विशेष रूप से कला में महिलाओं के ज्ञान की यह मान्यता लंबे समय से चली आ रही है। अब जो महत्वपूर्ण है कि हममें से जो लोग इन वार्तालापों में लगे हुए हैं, कनेक्शन जोड़ रहे हैं और मंच प्रदान कर रहे हैं, वे अपनी आवाज और उनके द्वारा लाए गए मूल्य को बढ़ाना जारी रखेंगे।'
>
> - स्टेफनी ओवेन्स, कला, डिजाइन और मीडिया के डीन, आर्ट्स यूनिवर्सिटी प्लायमाउथ

खमीर

स्वदेशी काला कपास और देसी ऊन (स्वदेशी ऊन फाइबर) को पुनर्जीवित करना

खमीर भुज में एक सांस्कृतिक संस्थान है जो सांस्कृतिक पारिस्थितिकी, विरासत और शिल्प के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है और इसने स्वदेशी रेशों को पुनर्जीवित करने और शिल्प समुदायों का समर्थन करने में अभिन्न भूमिका निभाई है।

काला कपास : कच्छ की शुष्क और अर्ध-शुष्क जलवायु में, जलवायु परिवर्तन महत्वपूर्ण चुनौतियां पेश करता है, जिसमें अनियमित वर्षा, बढ़ता तापमान और चरम मौसम की घटनाओं के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता शामिल है। कच्छ के कुछ क्षेत्रों में, वागड़ कपास नामक एक स्वदेशी कपास की किस्म की खेती लंबे समय से की जा रही थी। यह वर्षा पर आधारित था, प्राकृतिक रूप से कीटों और रोगों के प्रति प्रतिरोधी था और इसे न्यूनतम देखभाल की जरूरत थी।

वागड़ कपास की लोकप्रियता को अमेरिकी कपास और बाद में, बैसिलस थुरिंजियंस कपास (बीटी-कॉटन)के उदय के कारण गिरावट का सामना करना पड़ा है।36 पारंपरिक कपास की खेती, पानी और रासायनिक आदानों पर भारी निर्भरता के साथ, पर्यावरण के गिरावट को बढ़ाती है और जलवायु परिवर्तन में योगदान देती है। पारंपरिक कपास के लिए जलवायु-लचीले और स्थायी विकल्प की आवश्यकता के कारण काला कपास या वागड़ कपास का पुनरुद्धार हुआ। इस क्षेत्र में स्थायी कृषि की ओर बदलाव देखा गया, पानी का उपयोग कम हुआ और रासायनिक आदानों में कमी आई। इससे न केवल जलवायु प्रभाव कम हुआ बल्कि किसानों की आजीविका और पर्यावरण की स्थिरता में भी सुधार हुआ। खमीर विभिन्न हस्तक्षेपों के माध्यम से काला कपास37 के पुनरुद्धार में एक प्रमुख कारक के रूप में उभरा, जिसमें किसान प्रशिक्षण, बाजार संपर्क स्थापित करना, बीज संरक्षण और नीति समर्थन शामिल है।

देसी ऊन: खमीर क्राफ्ट्स, भारत और फील्डवर्क, यूके ने कताई, बुनाई और हैंड फेल्टिंग जैसे स्थानीय शिल्प कौशल के माध्यम से स्वदेशी ऊन फाइबर मूल्य श्रृंखला, देसी ऊन को पुनर्जीवित करने पर केंद्रित एक परियोजना विकसित करने के लिए ब्रिटिश काउंसिल के 'क्राफ्टिंग फ्यूचर्स' कार्यक्रम के तहत भागीदारी की। 'क्राफ्टिंग फ़्यूचर्स'38 ब्रिटिश काउंसिल का एक वैश्विक कार्यक्रम है जिसका मिशन सामूहिक रचनात्मकता और सहयोग के माध्यम से एक स्थायी भविष्य को बढ़ावा देना है।

100 से अधिक बुनकरों ने अपने सूत की गुणवत्ता में सुधार आने के बारे में बताया और अधिक स्थानीय रूप से प्राप्त कच्चे माल का उपयोग करना शुरू कर दिया, जिससे समुदाय के अंदर हाथ से कताई में पुनरुद्धार हुआ। इसके अतिरिक्त, परियोजना के दौरान कार्यान्वित किए गए डिजाइन हस्तक्षेपों ने बुनकरों को तीसरे पक्ष के डिजाइनरों पर निर्भर रहने के बजाय स्वदेशी ऊन का उपयोग करके अपने स्वयं के डिजाइन बनाने में सक्षम बनाया।

इस सशक्तीकरण के कारण ऊंटों से प्राप्त ऊन, देसी ऊन का एक नवाचारी उपयोग हुआ, जिससे बुनकरों को नए डिजाइनों की कल्पना करने की अनुमति मिली, जिन्होंने स्थानीय सामग्रियों की विशिष्टता को स्वीकार किया। परियोजना की पहुंच कच्छ में 100 महिला बुनकरों तक बढ़ी, जिससे समुदाय और रचनात्मकता की व्यापक भावना को बढ़ावा मिला।

खमीर इस मॉडल को देश के विभिन्न हिस्सों में दोहरा रहा है। इस विस्तार का उद्देश्य स्वदेशी फाइबर को पुनर्जीवित करना, स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाना और जलवायु-लचीला प्रथाओं को बढ़ावा देना, शिल्प और पर्यावरण के स्थिरता दोनों पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करना है।

फोटो क्रेडिट : डब्लिक पावलिक

गोल्डन फेदर्स

चिकन फेदर से नवाचारी कपड़े का निर्माण - स्थायी फैशन और अपशिष्ट उपयोग के माध्यम से जीवन में बदलाव

राधेश ने गैर-अपघटनीय चिकन फैदर के पर्यावरण के प्रभाव की पहचान की, जिन्हें डालने पर अक्सर जलमार्ग प्रदूषित हो जाते हैं। इस समस्या से निपटने के लिए, उन्होंने इन फेदर को एक मूल्यवान और पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद में पुन: उपयोग करने का निर्णय लिया।

उन्होंने स्थानीय कसाइयों द्वारा फेंके गए मुर्गे के पंख एकत्र किए और उन्हें सावधानीपूर्वक साफ किया। एक विशेष प्रक्रिया के माध्यम से, उन्होंने इन पंखों को धागे में बदल दिया। इस नवाचार के परिणामस्वरूप एक अनूठा कपड़ा तैयार हुआ जो पारंपरिक ऊनी शॉल की तुलना में हल्का है और मैरिनो, न्यूजीलैंड, पश्मीना और भेड़ और हंस जैसी प्राकृतिक ऊन की किस्मों के गुणों को साझा करता है।

सामाजिक प्रभाव: उन्हें प्रारंभ में सांस्कृतिक मान्यताओं और शाकाहारी प्रथाओं के कारण बुनकरों और स्पिनरों के साथ चुनौतियों का सामना करना पड़ा। हालांकि राधेश ने कताई प्रक्रिया के लिए एक विशिष्ट आदिवासी समुदाय के साथ सहयोग किया। इससे न केवल उत्पादन चुनौतियों का समाधान हुआ, बल्कि सकारात्मक सामाजिक प्रभाव भी पड़ा, जिससे कई आदिवासी महिलाओं को लाभकारी रोजगार मिला। तीन वर्षों में, गोल्डन फेदर्स ने लगभग500 टन चिकन कचरे को पुनर्चक्रित करके हथकरघा कपड़ा बनाया, 375 से अधिक अर्ध-कुशल/अकुशल श्रमिकों को नियोजित किया, और हथकरघा गतिविधियों के माध्यम से 2000 से अधिक आदिवासी महिलाओं को सशक्त बनाया।

पर्यावरण के चुनौतियों का समाधान: गोल्डन फेदर्स अपशिष्ट पंखों को लुगदी और ऊन के लिए धागे में परिवर्तित करके नदी और सतही जल प्रदूषण जैसे पर्यावरण के मुद्दों का समाधान करता है। इसके अतिरिक्त, सिंथेटिक/प्लास्टिक फाइबर, पॉलीफिल, डाउन और फेदर, कपास और भेड़ ऊन के लिए उनके स्थायी पंख वाले कपड़े और ऊन प्रतिस्थापन ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को काफी कम करते हैं, जिससे लोगों और ग्रह दोनों को लाभ होता है।

फ़ोटो क्रेडिट: ब्रिटिश काउंसिल

'हमारे कार्य व्यवहार में, हमने पाया है कि कारीगरों के समुदाय के साथ जुड़ना न केवल एक आर्थिक हस्तक्षेप है, बल्कि महिलाओं के लिए सामाजिक भी है, शिल्पकला केवल मजदूरी कमाने के बारे में नहीं है, बल्कि पितृसत्ता द्वारा उन पर लागू भूमिका के बाहर अपनी पहचान का पता लगाने का एक सुलभ तरीका भी है। इस दृष्टिकोण से हमें उनके स्वदेशी ज्ञान को रिकॉर्ड करने में मदद मिलती है, जिसमें सूक्ष्म प्रणालियां हैं जो सामूहिक रूप से जलवायु संकट का समाधान कर सकती हैं।'

- भव्या गोयनका, संस्थापक, इरो इरो

फ़ोटो क्रेडिट : डेल्फिन पावलिक

इरो इरो

पुनर्चक्रित कचरे से नए कपड़े बुनना

एक स्थायी फैशन ब्रांड, इरो इरो अपनी शिल्प प्रथाओं में पॉली-आधारित सामग्रियों के प्रचलित उपयोग से संबंधित पर्यावरण की चिंताओं को संबोधित करता है। उनका मिशन शिल्प के सांस्कृतिक सार को संरक्षित करते हुए पॉली आधारित सामग्रियों की जगह कपड़े कचरे को लाना है।

कचरे से बुनाई: कचरे से बुनाई के लिए इरो इरो के दृष्टिकोण में विभिन्न उद्योगों और समूहों से कपड़ा अपशिष्ट का स्रोत शामिल है। इस कचरे को सावधानीपूर्वक लाइनर यार्न में बदल दिया जाता है, जो हाथ से बुने हुए कपड़े की नींव के रूप में कार्य करता है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप पर्यावरण के अनुकूल रचनाएं उत्पन्न होती हैं जिनका सांस्कृतिक महत्व भी होता है। इरो इरो का मिशन सांस्कृतिक विरासत का सम्मान करते हुए कचरे को कम करना और पॉली-आधारित सामग्रियों को स्थायी विकल्पों से बदलना है।

महिलाओं और समुदायों को सशक्त बनाना: इरो इरो का शिल्प के माध्यम से महिलाओं और समुदायों को सशक्त बनाने का दृष्टिकोण उनके सामाजिक प्रभाव का एक उदाहरण है। महिलाओं को सार्थक बातचीत में शामिल होने और उनकी पहचान का पता लगाने का अवसर प्रदान करके, इरो इरो सामाजिक परिवर्तन में योगदान देता है।

अपसाइक्लिंग और स्थायी कपड़ा उत्पादन में इरो इरो के प्रयास से अपशिष्ट कटौती और पर्यावरण के जिम्मेदारी में योगदान मिला है। इरो इरो ने पिछले पांच वर्षों में लगभग १५ टन बेकार कपड़ों को हस्तनिर्मित कपड़ों में पुनर्चक्रित किया है। इस प्रयास से वायुमंडल में २५० टन कार्बनडाइऑक्साइड का उत्सर्जन रोका गया है।

10 अनुसंधान

'हम जो मापते हैं उसका प्रबंधन करते हैं। जीडीपी, तापमान, वजन, क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) - हम इन सभी चीजों को मापते हैं, लेकिन माप के लिए कोई उपाय नहीं है। भविष्य में किसी भी उपाय से परे अनिश्चितताएं हैं। हम सकल घरेलू उत्पाद को बढ़ावा देने के लिए देश के सभी पेड़ों को आसानी से नहीं काट सकते; इससे यह प्रतिबिंबित नहीं होता कि आगे क्या होने वाला है। हमें ग्रह पर सबसे बड़ी प्रजाति के रूप में ऐसे समाधान खोजने होंगे जो सभी प्रथाओं को शामिल करते हुए संस्कृतियों और भाषाओं से परे हों। क्या हम अपने कार्यों को माप सकते हैं और उस ज्ञान का उपयोग अपने मार्ग का मार्गदर्शन करने के लिए कर सकते हैं?'

- आयुष कासलीवाल, संस्थापक और निदेशक, आयुष कासलीवाल डिजाइन प्राइवेट लिमिटेड

'जिनकी गिनती नहीं हुई हैं, वे गिनती नहीं करते।'

- डॉ. रितु सेठी, चेयरपर्सन, क्राफ्ट रिवाइवल ट्रस्ट

भारत में शिल्प क्षेत्र, अपने महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक महत्व के बावजूद, काफी हद तक कम प्रलेखित है और इसमें व्यापक डेटा का अभाव है। इस डेटा अंतर को पाटना उद्योग की सतत वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

इस समय पर्यावरण पर शिल्प आपूर्ति श्रृंखलाओं के प्रभाव को रेखांकित करने वाले डेटा की कमी है। समय की मांग है कि व्यापक अध्ययन किया जाए जो इस डेटा की कमी को पूरा कर सके। इस शोध में शिल्प-केंद्रित स्थिरता मूल्यांकन प्रणाली विकसित करने के लिए आधार के रूप में काम किया जाएगा जो शिल्पकारों के अनुकूल है। शिल्प के पर्यावरण के प्रभावों की डेटा-संचालित समझ के साथ, हम इस क्षेत्र में स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए बेहतर, अधिक प्रभावी कार्यनीतियां बना सकते हैं।

भारत में विश्वसनीय डेटा नहीं होने से शिल्प के वास्तविक पैमाने, विविधता और आर्थिक प्रभाव को समझने के प्रयासों में भी बाधा आती है, जिससे उनके संरक्षण, प्रचार और आधुनिकीकरण के लिए प्रभावी नीतियों या कार्यनीतियों को तैयार करना मुश्किल हो जाता है। यह शिल्पकारों और व्यवसायों के लिए भी एक चुनौती पैदा करता है, जिनके पास नए बाजारों तक पहुंचने, सूचित निर्णय लेने या वित्तीय और संस्थागत समर्थन सुरक्षित करने के लिए आवश्यक जानकारी की कमी है। भारत में शिल्प और स्थायी फैशन क्षेत्र को आगे बढ़ाने में अंतःविषय अनुसंधान महत्वपूर्ण है।

शिल्प-केंद्रित प्रभाव माप

क्षेत्र के अंदर स्थिरता की स्पष्ट समझ स्थापित करने और कठोर अनुसंधान के माध्यम से उस समझ को मजबूत करने के लिए शिल्प-केंद्रित माप प्रणाली महत्वपूर्ण हैं। शिल्प क्षेत्र को मान्यता देने और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में शामिल करने के लिए ऐसी प्रणालियां होना आवश्यक है जो इसके स्थिरता संकेतकों पर नज़र रखें, मापें और रिपोर्ट करें। इसके अतिरिक्त, किसी भी वैश्विक प्रभाव मूल्यांकन में शिल्प क्षेत्र की अद्वितीय सांस्कृतिक और संरचनात्मक बारीकियों पर विचार करना चाहिए। इन पहलुओं को नज़रअंदाज करने से तीन प्राथमिक कारणों से इस क्षेत्र के वैश्विक संरचना के एकीकरण में बाधा आ सकती है।

1. अपने पर्यावरण के योगदान से परे, शिल्प क्षेत्र सांस्कृतिक विरासत, आर्थिक सशक्तीकरण, कौशल संरक्षण और सामुदायिक एकजुटता की एक अमूल्य टेपेस्ट्री का प्रतिनिधित्व करता है : मेट्रिक्स जो पर्यावरण के मापदंडों पर अकेले तय किए जाते हैं, इन बहुमुखी सामाजिक-सांस्कृतिक योगदानों को दरकिनार करने का जोखिम उठाते हैं। इस तरह के संकीर्ण आकलन संभावित निवेश को हतोत्साहित कर सकते हैं और वैश्विक बाजारों में क्षेत्र की पहुंच को सीमित कर सकते हैं।
2. शिल्प क्षेत्र विशिष्ट चुनौतियों से जूझ रहा है जिन पर किसी भी स्थिरता मूल्यांकन में विचार किया जाना चाहिए : कई शिल्प गतिविधियां अनौपचारिक आर्थिक संरचनाओं के अंदर संचालित होती हैं और भौगोलिक रूप से फैली हुई हैं, जिससे डेटा एकत्र करना एक जटिल प्रयास बन जाता है।
3. इसके अतिरिक्त, शिल्प क्या है, स्थिरता को कौन मापता है, इस पर स्पष्टता प्राप्त करना और विभिन्न भौगोलिक स्थानों में शिल्पकारों के लिए पहुंच सुनिश्चित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। सतत विकास में शिल्प क्षेत्र के योगदान की गहराई और महत्व को सही मायने में पकड़ने के लिए, माप के लिए एक समग्र, अनुरूप और समावेशी दृष्टिकोण की सिफारिश ही नहीं की जाती है, यह अनिवार्य है।

सतत विकास में शिल्प क्षेत्र के योगदान की गहराई और महत्व को सही मायने में पकड़ने के लिए, माप के लिए एक समग्र, अनुरूप और समावेशी दृष्टिकोण की सिफारिश ही नहीं की जाती है, यह अनिवार्य है।

200 मिलियन कारीगर

भारत के शिल्प क्षेत्र में डेटा अंतराल को पाटना

भारत की कारीगर अर्थव्यवस्था के अंदर 200 मिलियन कारीगर काम करते हैं, जो हस्तनिर्मित क्षेत्र की अंतर्निहित क्षमता का लाभ उठाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संस्थान का लक्ष्य आवश्यक ज्ञान, संसाधनों और नेटवर्क तक पहुंच की सुविधा प्रदान करके आत्मनिर्भरता बढ़ाना और नवाचार को बढ़ावा देना है।

दृष्टिकोण और कार्यान्वयन:

1. **पारिस्थितिकी तंत्र को सक्षम बनाने वाला:** 200 मिलियन कारीगर एक माध्यम के रूप में कार्य करते हैं, जो शिल्प-आधारित उद्यमों को आवश्यक उपकरण, अंतर्दृष्टि और नवीन वित्तपोषण तंत्र से जोड़ते हैं। उनकी कार्यनीति में यह सुनिश्चित करने के लिए सहयोगी उद्यमों को प्राथमिकता दी जाती है कि ये उद्यम ऐसे समाधानों से सुसज्जित हैं जो पर्यावरण और मानवीय दोनों विचारों को संबोधित करते हैं।
2. **अनुसंधान-संचालित अंतर्दृष्टि:** डेटा-संचालित अनुसंधान पर जोर देते हुए, संस्थान सूचना विसंगतियों का निवारण करने, निवेश निर्णयों का मार्गदर्शन करने और नीति रूपरेखा को सूचित करने के उद्देश्य से अंतर्दृष्टि उत्पन्न करता है।
   - क. 2023 में, उनके शोध 'उत्प्रेरक पूंजी भारत की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था को कैसे आगे बढ़ा सकती है' ने भारत के रचनात्मक विनिर्माण और हस्तनिर्मित क्षेत्रों में निवेश की बारीकियों और इस संदर्भ में उत्प्रेरक पूंजी के निहितार्थ का पता लगाया।
   - ख. उनकी 2021 की पहल, 'भारत की अनौपचारिक कारीगर अर्थव्यवस्था को 'औपचारिक बनाने' में शिल्प-आधारित उद्यमों की भूमिका' ने कारीगर क्षेत्र में रचनात्मकता, संस्कृति और अनौपचारिकता के बीच गतिशीलता पर एक विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया।
3. **सहयोगी परियोजनाओं के माध्यम से ज्ञान एकीकरण:** अंत:विषय कार्य के मूल्य को पहचानते हुए, 200 मिलियन कारीगर उन परियोजनाओं को बढ़ावा देते हैं जो ज्ञान, संसाधनों और साझेदारी को जोड़ते हैं, इस प्रकार भारत के कारीगर क्षेत्र की अधिक समग्र समझ को आगे बढ़ाते हैं।

लक्षित अनुसंधान और सहयोगात्मक पद्धतियों में निहित 200 मिलियन कारीगरों का दृष्टिकोण, भारत की कारीगर आधारित अर्थव्यवस्था के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में सहायक है। कार्यनीतिक रूप से ज्ञान की कमी को पूरा करके, संस्थान तेजी से विकसित हो रहे वैश्विक संदर्भ में क्षेत्र के लचीलेपन और अनुकूलन क्षमता में योगदान देता है।

फ़ोटो क्रेडिट: ब्रिटिश काउंसिल

11. शिल्पकारों और शिल्पकला पर आधारित उद्यमों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र

शिल्प क्षेत्र में एमएसएमई की दुनिया एक चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र के अंदर नवीन समाधान चलाने में सबसे आगे है। ये उद्यम, अक्सर महिलाओं और कारीगर उद्यमियों के नेतृत्व में, पारंपरिक प्रथाओं को स्थायी और अभिनव व्यवसायों में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, उनकी क्षमता के बावजूद, उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनके विकास और प्रभाव में बाधा डालती हैं।

जेंडर समावेशिता और स्थायी प्रथाएं: 'हस्तनिर्मित व्यवसाय - हस्तनिर्मित क्रांति का वित्तपोषण' का हाल के शोध शिल्प, सूक्ष्म और हस्तनिर्मित (सीएमएच) क्षेत्र के अद्वितीय योगदान पर प्रकाश डालता है। कई अन्य उद्योगों के विपरीत, सीएमएच क्षेत्र सक्रिय रूप से जेंडर समावेशन को बढ़ावा दे रहा है, जिसमें महिलाएं विभिन्न भूमिकाओं में अग्रणी हैं। इसके अलावा, ये उद्यम हरित अर्थव्यवस्था में योगदान देने में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहे हैं। सर्वेक्षण में शामिल ब्रांडों में से, 49 प्रतिशत धीमे फैशन में शामिल हैं, 35 प्रतिशत अपशिष्ट पदार्थों का पुनर्चक्रण कर रहे हैं, और 34 प्रतिशत अपनी उत्पादन प्रक्रियाओं में प्राकृतिक रंगों का उपयोग कर रहे हैं।

शिल्प-आधारित एमएसएमई को अपने सराहनीय प्रयासों के बावजूद, वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आश्चर्यजनक रूप से ८८ प्रतिशत हस्तनिर्मित रचनात्मक निर्माता वर्तमान में अपने परिचालन को स्व-वित्तपोषित कर रहे हैं। स्व-वित्तपोषण पर यह निर्भरता उनके पैमाने बढ़ाने, नवाचार करने और अधिक महत्वपूर्ण प्रभाव पैदा करने की क्षमता पर सीमाएं बांध देती है।

'डिज़ाइन दृश्य तत्व से परे तक फैला हुआ है; इसमें हमारी सामग्रियों का संपूर्ण जीवनचक्र शामिल है। सच्चा डिजाइन हमारे कच्चे माल के लिए समाधानों को नवीनीकृत करने की हमारी क्षमता में मौजूद है, खास तौर पर जलवायु प्रभाव के संदर्भ में। जलवायु संबंधी चुनौतियां लगातार विकसित हो रही हैं, और हमारे डिज़ाइन समाधानों को भारत के विभिन्न हिस्सों में जलवायु परिवर्तन की इन विभिन्न अभिव्यक्तियों के अनुकूल होना चाहिए, जिससे समान रूप से अद्वितीय प्रतिक्रियाएं तैयार की जा सकें।'

- संजय गर्ग, संस्थापक और डिजाइनर, रॉ मैंगो

इन उद्यमों की पूरी क्षमता को ज़ाहिर करने और लोगों और ग्रह दोनों पर उनके सकारात्मक प्रभाव का उपयोग करने के लिए, समर्थन का एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र आवश्यक है। शिल्प-आधारित एमएसएमई को नेटवर्क, कुशल कारीगरों तक पहुंच, मार्गदर्शन और नीतियों की आवश्यकता होती है जो उन्हें अपने संचालन को स्थायी रूप से बढ़ाने में मदद कर सकें। इन उद्यमों के लिए पारिस्थितिकी तंत्र समर्थन को मजबूत करने के लिए काम करने वाला एक उल्लेखनीय संगठन क्रिएटिव डिग्निटी है। यह सामाजिक संगठन शिल्प-आधारित व्यवसायों को वैश्विक अवसरों से जोड़ने, सोर्सिंग, क्षमता-निर्माण और शैक्षिक संसाधन प्रदान करने, और हरित और वृत्त की तरह कार्य करने वाले उद्यमों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए कार्य करता है।

शिल्प-आधारित उद्यम विभिन्न रूपों में आते हैं, प्रत्येक का अपना अनूठा फोकस होता है। कुछ का नेतृत्व सामुदायिक विकास के प्रति गहरी प्रतिबद्धता वाले कारीगरों द्वारा किया जाता है। अन्य लोग नवीन डिज़ाइन हस्तक्षेपों से प्रेरित होते हैं, जबकि कुछ अपने शिल्प में नए आयाम लाने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाते हैं। फोकस ऐसे समाधानों के निर्माण पर है जो क्षेत्र की वर्तमान और उभरती समस्याओं का समाधान करें।

डिज़ाइन शिक्षा के माध्यम से परंपरा को संरक्षित करना: डिज़ाइन शिक्षा को वास्तव में बदलने की क्षमता शिल्पकारों को सीधे डिज़ाइन शैक्षिक रूपरेखा में एकीकृत करने में निहित है। उनके ज्ञान, अनुभव और कौशल का खजाना छात्रों के लिए अमूल्य हो सकता है। कारीगरों को सलाहकार और प्रशिक्षकों के रूप में तैनात करके, हम न केवल सीखने के अनुभव को समृद्ध करते हैं बल्कि यह भी सुनिश्चित करते हैं कि ये सदियों पुरानी शिल्प तकनीकें अगली पीढ़ी के साथ तालमेल बिठाएं।

'हम पहचान को कैसे सुदृढ़ कर सकते हैं? हम उन लोगों की रक्षा कैसे कर सकते हैं जिनके पास यह ज्ञान है और फिर भी इस तरह से सह-निर्माण करें जो नवीनता लाए ताकि आप उनसे कुछ छीन न लें, बल्कि जहां वे हैं उससे एक कदम आगे ले जाएं?'

-राधी पारेख, संस्थापक निदेशक, आर्टिसन्स'

इंटर्नशिप, फील्ड यात्राएं और शिल्प-केंद्रित परियोजनाओं जैसी अनुभवात्मक शिक्षा की सुविधा प्रदान करने के लिए समर्पित है, जो छात्रों को शिल्प क्षेत्र की गहरी समझ प्रदान कर सकता है। कारीगरों से सीधे सीखने से सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल के बीच के अंतर को दूर किया जा सकता है, जिससे शिल्प उद्योग की बारीकियों की व्यापक समझ को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष यह है कि शिल्प-आधारित एमएसएमई शिल्प क्षेत्र और व्यापक अर्थव्यवस्था दोनों में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। सही पारिस्थितिकी तंत्र समर्थन के साथ, इन उद्यमों में अपने प्रभाव को आगे बढ़ाने, स्थिरता बनाए रखने और अपनी रचनात्मक अभिव्यक्तियों से हमारी दुनिया को समृद्ध बनाने की क्षमता है।

चिज़ामी वीव्स पहल

पुश्तैनी बुनाई तकनीक के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना

नागालैंड के सुदूर परिदृश्य में, चिज़ामी वीव्स सीमित नौकरी की संभावनाओं वाले क्षेत्र में 600 से अधिक महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान करता है। साल 2008 में स्थापित इस पहल का उद्देश्य नागालैंड की महिलाओं को आय का एक स्थायी स्रोत प्रदान करना है।

चिज़ामी वीव्स एनईएनटेप्राइज़ की एक शाखा के रूप में काम करती है, जो सामाजिक, जेंडर और पर्यावरण के न्याय को बढ़ावा देने के लिए एनजीओ नॉर्थ-ईस्ट नेटवर्क (एनईएन) द्वारा स्थापित एक ट्रस्ट है। ग्लोबल फंड फॉर वुमेन, फोर्ड फाउंडेशन और नागालैंड सरकार जैसे संगठनों द्वारा समर्थित, इस पहल का उद्देश्य महिलाओं के लिए स्थायी आजीविका के अवसर प्रदान करना है।

चिज़ामी वीव्स एक विकेंद्रीकृत मॉडल का पालन करता है, जो महिलाओं को अपने घरों से काम करने की अनुमति देता है। वे अपनी कृतियों को अंतिम सिलाई और संयोजन के लिए एक केंद्रीय स्थान पर लाते हैं। हालांकि इस दृष्टिकोण में तार्किक चुनौतियां प्रस्तुत की जाती हैं, किंतु एक लचीला कार्य वातावरण प्रदान किया जाता है जो पारंपरिक प्रथाओं को स्थायी आजीविका के साथ जोड़ता है।

उन्होंने डिजाइन हस्तक्षेपों को शामिल किया है जिसके कारण 60 प्रतिशत महिला बुनकर अब 5,000 रुपए से 6,000 रुपए तक की मासिक आय अर्जित कर रही हैं। चिज़ामी वीव्स समुदाय की भावना को बढ़ावा देता है और विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सीखने के अवसरों और प्रदर्शनियों के माध्यम से महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाता है।

फोटो क्रेडिट : डेनिम पब्लिक

रंगरेज़

डिज़ाइन नवाचार के माध्यम से लेहरिया शिल्प को पुनर्जीवित करना

मोहम्मद साकिब लेहरिया शिल्प में विशेषज्ञता रखने वाले कारीगरों की एक लंबी कतार से आते हैं। लेहरिया, टाई-डाई की एक तकनीक है, जिसमें कपड़ों पर लहरदार पैटर्न बनाया जाता है और 150 से अधिक वर्षों से साकिब के परिवार की एक पोषित परंपरा रही है। उनके दादा श्री. इकरामुद्दीन नीलगर, एक प्रसिद्ध व्यवसायी थे, जिन्होंने अपने कौशल के लिए कई पुरस्कार अर्जित किए। शिल्प के प्रतिष्ठित इतिहास के बावजूद, लेहरिया कारीगरी विलुप्त होने का सामना कर रही है। आधुनिकीकरण, औद्योगिक प्रतिस्पर्धा और कम मजदूरी के साथ कठिन श्रम-गहन प्रक्रियाओं ने कारीगरों को पारंपरिक तरीकों का अभ्यास करने से रोक दिया है।

प्रामाणिकता की ओर लौटें: प्राकृतिक रंगों को अपनाते हुए साकिब ने समय के साथ प्राकृतिक से रासायनिक रंगों की ओर बदलाव देखा, मुख्यतः क्योंकि रासायनिक रंगों के साथ काम करना आसान था। हालांकि, इस बदलाव ने शिल्प की प्रामाणिकता को कम कर दिया। साकिब ने प्राकृतिक रंगाई प्रथाओं पर वापस लौटने की आवश्यकता महसूस की और लेहरिया के पारंपरिक सार को पुनर्जीवित करते हुए, प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके उत्पाद बनाना शुरू कर दिया।

शैक्षिक संवर्धन और नवाचार: इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्राफ्ट एंड डिजाइन (आईआईसीडी) में साकिब की शैक्षिक यात्रा ने शिल्प के अंदर नवाचार के महत्व पर उनके दृष्टिकोण को व्यापक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी डिज़ाइन शिक्षा और अपने पैतृक शिल्प की समझ का लाभ उठाते हुए, साकिब ने लेहरिया में नई जान फूंकने की यात्रा शुरू की। उनके अन्वेषण में एक ही साड़ी में 64 रंगों को पेश करना और पारंपरिक डिजाइनों को पुनर्जीवित करना शामिल था, जबकि प्राकृतिक रंगों के उपयोग के लिए भी प्रतिबद्ध थे।

शिल्प पुनरुद्धार और स्थायी आजीविका साकिब का काम सिर्फ एक शिल्प को संरक्षित करने से कहीं आगे तक फैला हुआ है। यह आजीविका को बनाए रखने, सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने और निष्पक्ष, न्यायसंगत शिल्प उद्योग बनाने के बारे में है। लेहरिया की हस्तनिर्मित प्रकृति कई परिवारों का समर्थन करती है, आय का स्रोत और सांस्कृतिक विरासत की निरंतरता प्रदान करती है। साकिब का ब्रांड परंपरा और नवीनता में निहित एक मजबूत डिजाइन-आधारित उद्यम के निर्माण के महत्व का प्रतीक है।

फ़ोटो क्रेडिट : डेल्फ़िन मार्बनिफ

12. समर्थन और नीति

हस्तनिर्मित आख्यान: समर्थन की शक्ति

स्थायी फैशन और जलवायु परिवर्तन के आसपास की बातचीत के प्रभुत्व वाले युग में एक कथा जो अक्सर सामने आती है वह पारंपरिक शिल्प प्रणालियों का अमूल्य योगदान है। दुनिया भर की स्थानीय संस्कृतियों और अर्थव्यवस्थाओं में गहराई से रची-बसी ये शिल्प प्रणालियां धीमी फैशन प्रणालियों के लिए अप्रयुक्त क्षमता रखती हैं। स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों से लेकर निम्न-कार्बन उत्पादन तक, शिल्प प्रथाओं द्वारा निहित सिद्धांत वैश्विक स्थिरता लक्ष्यों के साथ महत्वपूर्ण रूप से मेल खाते हैं। फिर भी, शिल्प को स्थायित्व की सार्वभौमिक भाषा से जोड़ने और उनके आंतरिक मूल्य को व्यापक दर्शकों तक प्रभावी तरीके से संप्रेषित करने में पर्याप्त बाधाएं मौजूद हैं।

शिल्प और जलवायु वार्तालाप

अशोक चटर्जी ने कुला कॉन्क्लेव 2023 में अपने मुख्य भाषण के दौरान एक व्यक्तिगत किस्सा साझा किया जो शिल्प क्षेत्र के आसपास के विचारों के द्वंद्व को दर्शाता है। उन्होंने बताया कि एक बार उन्हें कैसे भारत में शिल्प उद्योग में समय निवेश करने के प्रति आगाह किया गया था। इसे 'बिना किसी भविष्य वाला सूर्यास्त क्षेत्र, केवल संग्रहालयों के लिए उपयुक्त' के रूप में लेबल किया गया था। इसके विपरीत, कुछ महीने बाद, चीन में विश्व शिल्प परिषद की बैठक में, उन्होंने एक चीनी अधिकारी को शिल्प को 'सूर्योदय उद्योग' के रूप में संदर्भित करते हुए सुना, जिसे आईटी हब के रूप में चीन के उदय के लिए महत्वपूर्ण माना गया।

श्री चटर्जी के अनुसार, परिषद की बैठक के दौरान, चीनी परिप्रेक्ष्य इस विश्वास में निहित था कि, 'रचनात्मकता और नवाचार आज के प्रतिस्पर्धी बाजार में अस्तित्व का एकमात्र स्रोत हैं। और रचनात्मकता या नवीनता के बीज शिल्प क्षेत्र में हैं। इसलिए यदि आप शिल्प को नष्ट करते हैं, तो आप अपने रचनात्मक और नवाचारी लाभ को नष्ट कर देते हैं।'

जब उभरती हरित अर्थव्यवस्था के संदर्भ में शिल्प की क्षमता को स्वीकार करने की बात आती है तो यह विरोधाभास एक महत्वपूर्ण भाषा, समझ और संचार अंतर को रेखांकित करता है।

अफसोस की बात है कि शिल्प और कारीगरों की आवाज अक्सर जलवायु परिवर्तन पर अंतरराष्ट्रीय चर्चा के शोर में खो जाती है, जो असंगत रूप से तकनीकी समाधानों पर केंद्रित है। संयुक्त राष्ट्र ने इस उपेक्षित कथा के महत्व को पहचानते हुए, आर्थिक और सामाजिक परिषद के लिए एक सलाहकार निकाय के रूप में और जलवायु परिवर्तन पर स्वदेशी समुदायों के इनपुट के लिए एक मंच, द यूनाइटेड नेशंस परमानेंट फोरम ऑन इंडिजिनस इश्यूज (यूएनपीएफआईआई) बनाया है।

स्थिरता और पारंपरिक शिल्प की वैश्विक भाषा

पारंपरिक शिल्प के साथ स्थिरता की वैश्विक भाषा में सामंजस्य बिठाने के प्रयासों में तेजी लाने के लिए चार प्रमुख क्षेत्र महत्वपूर्ण हैं।

1. **स्थायी मांग और शिल्प की आपूर्ति की वैश्विक भाषा को जोड़ना;** भले ही पारंपरिक शिल्प और वैश्विक स्थिरता एक ही सिद्धांत पर बात करते हैं, वे अक्सर अलग-अलग बातचीत में मौजूद होते हैं, जैसे दो लोग समान विचार साझा करते हैं लेकिन अलग-अलग भाषाएं बोलते हैं। उदाहरण के लिए, स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों का उपयोग करने का शिल्पकार का अभ्यास स्थिरता में 'स्थानीय सोर्सिंग' विचार का व्यावहारिक प्रतिनिधित्व है। इसी तरह, हस्तनिर्मित स्थिरता के 'कम ऊर्जा खपत' और 'कम कार्बन उत्पादन' लोकाचार के साथ पूरी तरह से मेल खाता है। इन सहसंबंधों को चित्रित करके हम शिल्प की कहानी को वैश्विक स्थिरता की व्यापक भाषा में अनुवाद कर सकते हैं। इस प्रकार इसकी पहुंच और प्रतिध्वनि का विस्तार हुआ।
2. **पर्यावरण संबंधी संवादों में कारीगरों का प्रतिनिधित्व:** स्थायी प्रथाओं और प्रकृति के साथ उनके सीधे संबंध की समृद्ध समझ के बावजूद, कारीगर अक्सर इन महत्वपूर्ण चर्चाओं की परिधि पर रहते हैं। इसमें अधिक समावेशी, सुलभ संवादों की मांग होती है। कारीगरों की कहानियों को प्रसारित करने के लिए प्रभावशाली लोगों और मीडिया के साथ साझेदारी के साथ, यह दृष्टिकोण उनकी दृश्यता और प्रभाव को बढ़ा सकता है। निर्णय लेने के केंद्र में कारीगरों का स्वागत करके हम उनके समय-सम्मानित, स्थिरता-उन्मुख ज्ञान को हमारे वैश्विक जलवायु प्रवचन में शामिल कर सकते हैं।
3. **कहानी सुनाना, समर्थन, और प्रभावशाली प्रभाव:** उद्योग के अंदर और उपभोक्ताओं के बीच शिल्प और स्थायी फैशन की एक सार्वभौमिक समझ स्थापित करने के लिए, कहानी सुनाना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कारीगरों की कहानियां, उनकी सांस्कृतिक विरासत, ऐतिहासिक संदर्भ, विशेषज्ञता और शिल्प तकनीकों सहित, शिल्प की अंतर्निहित स्थिरता पर जोर देने के लिए एक शक्तिशाली रूपरेखा के रूप में काम करती हैं। इन कहानियों को पुस्तकों, वृत्तचित्रों, सोशल मीडिया और प्रदर्शनियों जैसे विभिन्न माध्यमों से प्रसारित करने से शिल्प की दुनिया को स्थिरता की सुर्खियों में लाया जा सकता है, जहां वे उचित रूप से मौजूद हैं।

'एक स्थायी फैशन कार्यकर्ता के रूप में, जिसका काम जमीनी स्तर पर आयोजन, फोटो जर्नलिज्म, लेखन और बहुत कुछ तक फैला हुआ है, मैं कहानी कहने के माध्यम से पुनर्कल्पना के कट्टरपंथी काम में विश्वास करता हूं। जलवायु संकट कथा का संकट प्रस्तुत करता है - हमें एक संस्कृति और वैश्विक समुदाय के रूप में अपने अगले कदमों की जानकारी देने के लिए समाधान-उन्मुख पत्रकारिता के काम में संलग्न होने की आवश्यकता है; और फैशन, कहानी कहने का माध्यम होने के नाते, जलवायु कार्रवाई के लिए एक अद्भुत उपकरण प्रस्तुत करता है।'

- अदिति मेयर, सस्टेनेबल फैशन कंटेंट क्रिएटर और सलाहकार, एडीआईएमएवाई

'डी-इन्फ्लुएंसिंग नामक एक प्रवृत्ति है, जहां लोग धीमी गति से जीवन जीना, सचेतन रहना और अपनी जड़ों से दोबारा जुड़ना अपनाते हैं। ये कहानी सुनाने के बेहतरीन चैनल हैं जिन तक पहुंच बनाई जा सकती है। यह बिक्री करने के बारे में नहीं है, बल्कि हमारी पसंद और हम कपड़ों का उपभोग कैसे करते हैं, इसके बारे में अधिक जागरूक होने के बारे में है। मुझे उम्मीद है कि अगली पीढ़ी हमारे कपड़ों के प्रति दृष्टिकोण को बदल देगी, सहयोगी प्रणालियों, साझा वार्डरोब और सावधानीपूर्वक सोर्सिंग को अपनाएगी। यदि वे आज के नैतिक पहनावे की तलाश में हैं, तो शिल्प अपने अनूठे उत्पादों के साथ प्रमुखता रखता है। भविष्य के लिए स्थायी फैशन इस कथा को पाटना महत्वपूर्ण है।'

- श्रुति सिंह, कंट्री हेड, फैशन रिवोल्यूशन इंडिया

4. **मूल्य धारणा को फिर से तैयार करना:** स्थिरता के संदर्भ में शिल्प के मूल्य को पहचानना। मुख्यधारा के बाजारों में, शिल्प उत्पादों को अक्सर कम महत्व दिया जाता है, और बड़े पैमाने पर निर्मित वस्तुओं की तुलना में कम ट्रेंडी या आकर्षक माना जाता है। यह धारणा न केवल कारीगरों की आर्थिक स्थिरता को खतरे में डालती है बल्कि स्थायी शिल्प उत्पादों के प्रसार को भी सीमित करती है। स्थिरता में शिल्प के विविध मूल्य को पहचानना सांस्कृतिक संरक्षण, स्थानीय आर्थिक मजबूती, जैव विविधता समर्थन और निष्पक्ष व्यापार और जिम्मेदार उत्पादन के समर्थन में इसकी भूमिका को स्वीकार करना महत्वपूर्ण है। इस अंतर को पाटने में शिक्षा भी अहम भूमिका निभाएगी। इन मूल्यों पर जोर देकर और शिल्प वस्तुओं के समान मूल्य निर्धारण का समर्थन करके, हम मुख्यधारा के बाजार में शिल्प की धारणा को बदल सकते हैं।

स्थिरता के उत्प्रेरक के रूप में कारीगर

शिल्प कौशल भी कहानी कहने की शक्ति का एक जीवित प्रमाण है, सहानुभूति निर्माण और स्थायी विकल्पों को बढ़ावा देने में एक आवश्यक उपकरण है। यह अपने अंदर कारीगरों के ज्ञान, संस्कृति, इतिहास और उनके प्राकृतिक परिवेश के साथ उनके जटिल संबंधों का वर्णन करता है। जलवायु कार्रवाई में कारीगरों की अभिन्न भूमिका को प्रदर्शित करने के लिए इन आख्यानों का लाभ उठाया जा सकता है।

कारीगर शिल्प की क्षमता की स्थिरता के लिए उत्प्रेरक के रूप में विभिन्न स्तरों पर समर्थन की आवश्यकता है। इस अंतर को पाटना, जलवायु वित्तपोषण के अवसरों का लाभ उठाना महत्वपूर्ण है जो हस्तक्षेप के प्रमुख क्षेत्र के रूप में 'प्रकृति-आधारित समाधान' पर तेजी से ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। सतत विकास के मार्ग के रूप में शिल्प को बढ़ावा देने में नीति निर्माताओं, शैक्षणिक संस्थानों, व्यवसायों और व्यक्तियों सभी की भूमिका है। परिवर्तन एजेंटों के रूप में कारीगरों को उचित मान्यता देकर, हम उस संवाद को बढ़ावा दे सकते हैं जो स्थिरता को केवल एक अकादमिक या नीति-उन्मुख अवधारणा नहीं, बल्कि एक जीवंत वास्तविकता बनाता है।

सामरिक नीति की भूमिका

शिल्प क्षेत्र हमारी सांस्कृतिक विरासत का एक गहरा हिस्सा है और राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है। नीति और शासन शिल्पकारों की आजीविका, जेंडर और जलवायु परिवर्तन के परस्पर जुड़े पहलुओं से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। दुर्भाग्य से, इस क्षेत्र को कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है जैसे कि अनुदान (फंडिंग) पाने की कमी, कच्चे माल की खरीद में चुनौतियां और बाजार पहुंच की जटिलता।

इस समय शिल्प क्षेत्र वस्त्र मंत्रालय का एक हिस्सा है, हालांकि इसमें पत्थर और कई अन्य हस्तशिल्प जैसी विभिन्न सामग्रियां शामिल हैं। संस्कृति मंत्रालय, ग्रामीण विकास मंत्रालय, पर्यटन मंत्रालय, कौशल विकास मंत्रालय और एमएसएमई मंत्रालय सहित कई मंत्रालयों में फैली योजनाओं के साथ, सिस्टम को नेविगेट करना क्षेत्र के लिए कठिन हो जाता है। अधिकांश गोलमेज चर्चाओं से उभरने वाले एक सामान्य विषय के लिए देश में २०० मिलियन कारीगरों की विशाल आबादी के प्रबंधन के लिए एकल खिड़की पहुंच, एकल स्पर्श बिंदु या एकल मंत्रालय की आवश्यकता का सुझाव दिया जाता है।

स्थायी फैशन के प्रति भारत की प्रतिबद्धता

हाल के दिनों में, सरकार ने भारत को सर्कुलर टेक्सटाइल के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने के लक्ष्य के साथ स्थायी फैशन के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं।

1. **मिशन लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवन शैली):** 2021 में, वैश्विक जलवायु सम्मेलन कॉप२६ में, भारत ने प्रतिज्ञा की कि वर्ष 2030 तक कार्बन उत्सर्जन में उल्लेखनीय कटौती करने के लिए इसकी मजबूत प्रतिबद्धता है। इस प्रतिबद्धता को क्रियान्वित करने के लिए, सरकार ने मिशन लाइफ पहल शुरू की, जिसमें जलवायु कार्रवाई में गोलाकार अर्थव्यवस्थाओं और स्वदेशी संस्कृतियों की अभिन्न भूमिका पर जोर दिया गया। यह पहल 'इस्तेमाल करो और फेंक दो' उपभोग मॉडल से एक स्थायी गोलाकार अर्थव्यवस्था में परिवर्तन की कल्पना करती है। हस्तनिर्मित वस्त्र उद्योग, बड़े पैमाने पर उत्पादन विधियों की तुलना में काफी कम कार्बन फुटप्रिंट के साथ, इस पहल में सहजता से फिट बैठता है।

2. **वस्त्र मंत्रालय का ईएसजी टास्कफोर्स:** एक बहु-पणधारक मंच के रूप में स्थापित, यह पहल टी एंड ए क्षेत्र की अंतर्निहित चुनौतियों, विशेष रूप से इसकी खंडित प्रकृति को संबोधित करना चाहती है। प्रमुख उद्योग आवाजों के दृष्टिकोण को एकीकृत करके, टास्कफोर्स का लक्ष्य एमएसएमई के बीच स्वच्छ और अधिक कुशल परिचालन प्रथाओं को बढ़ावा देना है, जिससे स्थायी वस्त्रों की ओर एक राष्ट्रीय बदलाव के लिए आधार तैयार किया जा सके।

3. **वस्त्र मंत्रालय द्वारा 'सर्कुलरिटी इन टेक्सटाइल्स' पहल:** दृश्यता बढ़ाने और सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, सर्कुलर टेक्सटाइल क्षेत्र में काम करने वाले महिला नेतृत्व वाले संगठनों को एकजुट करने के लिए पेश की गई। यह पहल जलवायु संकट, जैव विविधता हानि, प्रदूषण और आपूर्ति श्रृंखला चुनौतियों से निपटने में चक्रीय अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है।

4. वस्त्र मंत्रालय और यूएनईपी साझेदारी 'एन्हांसिंग सर्कुलरिटी एंड सस्टेनेबिलिटी इन टेक्सटाइल्स' पर : इसका उद्देश्य स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देना और वस्त्रों में दोबारा उपयोग के बारे में ज्ञान का प्रसार करना है। पहली बार, मंत्रालय वस्त्र स्थिरता पर उपभोक्ता जागरूकता अभियान में लगा हुआ है। ३० जनवरी २०२३ को उद्घाटन किए गए इस कार्यक्रम में विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर २,७१३ पणधारकों ने आभासी भागीदारी की।

5. **राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय #नो योर वीव शैक्षिक पहल:** 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस मनाने के लिए, वस्त्र मंत्रालय ने राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय और हस्तकला अकादमी के सहयोग से दो सप्ताह का शैक्षिक अभियान शुरू किया। इसमें 75 से अधिक स्कूलों और लगभग 10,000 छात्रों को शामिल करते हुए, कार्यक्रम में बनारसी ब्रोकेड और आंध्र इकत सहित विभिन्न हथकरघा तकनीकों की शुरुआत की गई। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी द्वारा समर्थित, मास्टर बुनकरों ने छात्रों को हथकरघा की दुनिया में डुबोने के लिए लाइव प्रदर्शन और ब्लॉक प्रिंटिंग और डाई पेंटिंग जैसी परस्पर क्रिया गतिविधियों का आयोजन किया।

6. **भारतीय वस्त्र एवं शिल्प कोष पहल :** वस्त्र और शिल्प को बढ़ावा देने के लिए एक शिल्प भंडार पोर्टल लॉन्च किया गया, जो स्वदेशी उत्पादन ('स्वदेशी') के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाता है और 'वोकल फॉर लोकल' लोकाचार का समर्थन करता है। यह मंच बुनकरों के काम को आसान बनाने, उनकी उत्पादकता बढ़ाने और कारीगरों को वैश्विक बाजार का अनुभव प्रदान करने की दृष्टि से संरेखित करते हुए डिजाइन की गुणवत्ता को बढ़ाने का प्रयास करता है।

7. **एकता मॉल पहल :** प्रत्येक राज्य की राजधानी में मॉल स्थापित करने का एक ठोस प्रयास, जो विभिन्न जिलों और राज्यों के हस्तशिल्प और हथकरघा उत्पादों को प्रदर्शित करने और बढ़ावा देने के लिए केंद्रीकृत केंद्र के रूप में कार्य करेगा। इस पहल का उद्देश्य न केवल शिल्प प्रदर्शन को एकजुट करना है, बल्कि व्यापक 'मेक इन इंडिया' अभियान के अनुरूप कारीगरों के लिए एक व्यापक बाजार भी प्रदान करना है।

ये नीतियां स्थायी फैशन क्षेत्र के लिए सहायक नीतियां बनाने की सरकार की प्रतिबद्धता को उजागर करती हैं। इस क्षेत्र को आगे बढ़ाने और इसकी बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, सार्वजनिक और निजी दोनों तरह की सहायता प्रणालियों और साझेदारियों की आवश्यकता बढ़ रही है।

13. विकास निधि और निवेश

विश्व के नेता और वित्तीय संस्थान सक्रिय रूप से जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए स्थायी और नवीन कार्यनीतियों की खोज कर रहे हैं, शिल्प क्षेत्र, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने की अपनी क्षमता के बावजूद, इस विवाद में एक कम निवेशित और कम मूल्यवान संपत्ति बना हुआ है। पारंपरिक शिल्प और शिल्प नवप्रवर्तकों की अंतर्निहित स्थिरता उन्हें जलवायु-केंद्रित निवेशों में प्राथमिक लाभार्थियों के रूप में स्थापित कर सकती है, लेकिन इस क्षमता को अभी तक पूरी तरह से पहचाना या उपयोग नहीं किया जा सका है।

स्वदेशी समुदाय और शिल्प हमारे ग्रह को संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

5 प्रतिशत
स्वदेशी समुदाय
रक्षा करते हैं

22 प्रतिशत
पृथ्वी की सतह
और सुरक्षा

80 प्रतिशत
इसकी जैव विविधता का

27 गुना स्वदेशी समुदायों द्वारा प्रबंधित वनों में कम उत्सर्जन के कारण शुद्ध शून्य वनों की कटाई हुई (ब्राजील)[35]

शिल्प क्षेत्र के लिए वर्तमान वित्त पोषण मॉडल

सरकारी योजनाएं	निजी फ़ाउंडेशन
गैर-लाभकारी संगठन	नैगम सामाजिक जिम्मेदारी

निवेश अंतराल

384 अमेरिकी डॉलर
वैश्विक संकटों से निपटने के लिए 2025 तक प्रकृति आधारित समाधान (एनबीएस) में प्रति वर्ष अरबों का निवेश[40]

154 अमेरिकी डॉलर
प्रकृति आधारित समाधान (एनबीएस)[41] में वर्तमान अनुदान प्रति वर्ष बिलियन है

17 प्रतिशत
कुल निवेश का हिस्सा निजी पूंजी से आता है[42]

वर्तमान में अधिकांश ग्रीन फंड में शिल्प को एनबीएस के लिए एक क्षेत्र के रूप में नहीं माना जाता है

74 प्रतिशत
हस्तनिर्मित और रचनात्मक निर्माता सही निवेशक का पता लगाना एक कठिन चुनौती मानते हैं

65 प्रतिशत
को वित्त तक पहुंच हासिल करने में बाधाओं का सामना करना पड़ता है

33 प्रतिशत
एचसीएम पर्यावरण के स्थिरता[43] के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता बनाए रखते हैं

क्राफ्ट का जलवायु निवेश अवसर

1. क्षेत्र विशिष्ट व्यवसाय जो यूएन एसडीजी 12 'जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन' के चैंपियन हैं, उनके पास 200 मिलियन कारीगरों द्वारा 'हस्तनिर्मित क्रांति के वित्तपोषण' के अनुसार भारत में 1 ट्रिलियन डॉलर से अधिक का अप्रयुक्त अवसर है।44
2. शिल्प में प्रकृति और स्थिरता के साथ एक अंदरूनी संरेखण है जो उन्हें जलवायु निवेश और प्रकृति-आधारित समाधान (एनबीएस) के तहत विचार करने योग्य एक आकर्षक क्षेत्र बनाता है। एनबीएस उन कार्रवाइयों पर जोर देता है जिनमें पारिस्थितिक तंत्र की सुरक्षा, संरक्षण, बहाली और स्थायी उपयोग शामिल है।[45] 2022 से संयुक्त राष्ट्र की जलवायु परिवर्तन उच्च स्तरीय चैंपियन रिपोर्ट के अनुसार, प्रकृति-सकारात्मक समाधानों का उपयोग करने से 2030 तक सालाना 4.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के नए व्यापार अवसर सामने आ सकते हैं।[46]
3. साल 2023 में, पीडब्ल्यूसी की 'प्रकृति के लिए त्वरित वित्त' रिपोर्ट में बताया गया कि प्रकृति-केंद्रित परियोजनाओं के लिए धन की कमी रुचि की कमी के बजाय समझ में अंतर के कारण है। कुछ निवेशक वित्तीय रिटर्न के लिए आवश्यक लंबी समय-सीमा के कारण निवेश करने से हतोत्साहित होते हैं। अल्पकालिक परियोजनाएं अक्सर अधिक आकर्षक लगती हैं।[47]
4. निवेश के लिए प्राथमिक बाधाओं में से एक डेटा की अनुपस्थिति है जो जलवायु शमन के लिए शिल्प क्षेत्र की क्षमता में हमारे आंतरिक विश्वास को मान्य करता है। एक और चुनौती धीमी फैशन के विकास के पैमाने को समझना है, क्योंकि यह तेज़ फैशन ब्रांडों से अलग है। धीमे फैशन की अनूठी प्रकृति का अर्थ है कि इसका मूल्यांकन तेज फैशन के समान उपकरणों और रूपरेखाओं के साथ नहीं किया जा सकता है, जिससे संभावित रूप से इसकी निवेश अपील कम हो सकती है।
5. शिल्प क्षेत्र को वैश्विक धीमी गति के फैशन में सबसे आगे ले जाने के लिए, कई क्षेत्र निवेश की मांग करते हैं। शिल्प उद्यमिता परंपरा और नवीनता के बीच एक पुल के रूप में उभरती है। कौशल विकास और डिजिटल प्रौद्योगिकी को अपनाने से कारीगरों को वैश्विक बाजारों से जोड़ा जाता है, जबकि आपूर्ति श्रृंखला पारदर्शिता उपभोक्ता विश्वास का निर्माण करती है। सामग्री नवाचार, अनुसंधान और स्थायी बुनियादी संरचना में निवेश करके, शिल्प क्षेत्र स्थायी फैशन के भविष्य के साथ सहजता से जुड़ सकता है।
6. इसका सार एक सम्मोहक कथा तैयार करने में निहित है जो पारंपरिक शिल्प को जलवायु लक्ष्यों, विशेष रूप से अनुकूलन और शमन के साथ बांधता है। जैसे-जैसे वैश्विक जलवायु निवेश अधिक जटिल होता जा रहा है, ग्रीनहाउस उत्सर्जन को कम करने या सामुदायिक लचीलेपन को बढ़ाने जैसे विशिष्ट लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है, शिल्प अपना सही स्थान पा सकते हैं।

'अधिक समावेशी दृष्टिकोण का समर्थन करना महत्वपूर्ण है, जहां जलवायु निवेश इन पर्यावरण प्रबंधकों के आवश्यक कार्यों का समर्थन करता है, जो एक लचीले और संतुलित भविष्य की कुंजी रखते हैं।

भूमि का प्रबंधन कौन कर रहा है? यह एक शिल्पकार हो सकता है, जो कुशलता से रेशे बुनता हो; यह एक कृषि प्रधान व्यक्ति हो सकता है, एक किसान-निर्माता हो सकता है जो पौष्टिक सब्जियों और फलों की खेती करता है। लेकिन हमें उन लोगों को नहीं भूलना चाहिए जो कृषि-पारिस्थितिकी सिद्धांतों का पालन करते हैं, जलवायु-अनुकूल तरीकों का अभ्यास करते हैं और हमारी बहुमूल्य पृथ्वी की देखभाल करते हैं। हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि जलवायु की धनराशि उनके हाथों तक पहुंचे? अभी तो ऐसा लगता है कि केवल नवीकरणीय ऊर्जा या उच्च तकनीक नवाचारों में लगे लोग ही इस तरह के समर्थन के पात्र हैं, जो भूमि और पानी का पोषण करने वाले सच्चे नायकों को पीछे छोड़ देते हैं।'

- तमारा लॉ गोस्वामी, सलाहकार बोर्ड सदस्य, भारत एग्रोइकोलॉजी फंड

हर्थ वेंचर्स

भारत की शिल्प और चक्रीय अर्थव्यवस्था में निवेश

साल 2021 में स्थापित, हर्थ वेंचर्स का मिशन दोहरा है : भारत के हस्तनिर्मित शिल्प उद्यमों के विकास को बढ़ावा देना और देश की विशाल कला और शिल्प विरासत का मजबूती से समर्थन करना। कंपनी का लक्ष्य भारतीय शिल्प कौशल की पुनर्कल्पना और उन्नति करना, भारतीय कारीगर उत्पादों की वैश्विक उपस्थिति को बढ़ाना और भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में कारीगरों और शिल्पकारों को महत्वपूर्ण लाभ पहुंचाना है।

निवेश फोकस

उत्पाद-आधारित उद्यम: फ़र्नीचर, प्रकाश व्यवस्था, मिट्टी के बर्तन, दीवार कला, बरतन, उपहार आइटम, सहायक उपकरण और बहुत कुछ जैसे उत्पादों को तैयार करने में शामिल संस्थाएं।

समर्थक: ये ठोस आधार वाली कंपनियां हैं जो भारतीय शिल्प की बिक्री को सुव्यवस्थित करती हैं। वे ईकॉमर्स थोक विक्रेताओं, लॉजिस्टिक्स संस्थाओं, तकनीकी फर्मों और बहुत कुछ तक फैले हुए हैं।

विक्रेता: ईकॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म से लेकर खुदरा श्रृंखला, बाज़ार और अंतरराष्ट्रीय वितरक तक।

मुख्य मानदंड: कारीगरों के संभावित प्रभाव पर जोर, संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों के साथ संरेखण, उद्यमशीलता प्रतिभा, स्केलेबिलिटी, और हर्थ के पोर्टफोलियो में फिट होना। वैल्यू बियॉन्ड कैपिटल हर्थ वेंचर्स का समर्थन केवल वित्तीय समर्थन से परे है। यह फर्म अमूल्य व्यावसायिक परामर्श प्रदान करती है और अपनी पोर्टफोलियो कंपनियों के बीच तालमेल को बढ़ावा देना चाहती है।

पोर्टफोलियो: उनके निवेश पोर्टफोलियो में कदम हाट, शोभितम, रीलव शामिल हैं

फोटो क्रेडिट : ब्रिटिश काउंसिल

IV. सिफारिशें

हमने पणधारक संवादों के दौरान प्रतिभागियों को जलवायु संकट की स्थिति में शिल्प उद्योग के बेहतर भविष्य के लिए अपने ठोस विचार और दृष्टिकोण साझा करने के लिए आमंत्रित किया। इन वार्तालापों से नवीन अवधारणाओं और आकांक्षाओं का खजाना उत्पन्न हुआ।

ये सुझाव प्रत्येक पणधारक के लिए – कारीगरों, डिजाइनरों और शिक्षकों से लेकर नीति निर्माताओं और सामुदायिक नेताओं तक - एक स्थायी दुनिया में शिल्प के बेहतर भविष्य को अपनाने, विकसित करने और सहयोगात्मक रूप से निर्माण करने के लिए विविध अवसर प्रदान करते हैं।

फ़ोटो क्रेडिट : डेल्फिन पाब्लिक

14. पणधारक की आकांक्षाएं: भविष्य को साथ मिलकर तैयार करना

15. भविष्य को साथ मिलकर तैयार करना : परिवर्तन के लिए एक रोडमैप

जलवायु संकट का जवाब देने के लिए शिल्प क्षेत्र की क्षमता को खोलने के लिए पारिस्थितिकी तंत्र अभिकारकों के लिए यहां कार्यनीतिक सिफारिशें दी गई हैं।

1. वैश्विक मांगों के अनुरूप शिल्प क्षेत्र के विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यनीतिक रूपरेखा

क. राष्ट्रीय शिल्प स्थिरता कार्यनीति: शिल्प क्षेत्र को जिम्मेदार विनिर्माण के लिए वैश्विक केंद्र में बदलने के लिए एक कार्यनीतिक, दीर्घकालिक योजना तैयार करने के लिए एक कार्य समूह का गठन करना। इस ब्लूप्रिंट को सरकारी एजेंसियों, गैर सरकारी संगठनों, शिक्षाविदों और व्यवसायों सहित पणधारकों के व्यापक स्पेक्ट्रम के सहयोग से विकसित किया जाना चाहिए। इसमें जलवायु परिवर्तन के प्रति शिल्प क्षेत्र के लचीलेपन के निर्माण के लिए एक रोडमैप शामिल होना चाहिए।

ख. स्थिरता मूल्यांकन के लिए मेट्रिक्स: सकल घरेलू उत्पाद, आजीविका सृजन और स्थिरता प्रभाव में इसके योगदान का आकलन करने के लिए शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र के लिए विशिष्ट डेटा का व्यवस्थित मानचित्रण और विश्लेषण करना। शिल्प परियोजनाओं के पर्यावरण के प्रभाव को मापने के लिए अच्छी तरह से परिभाषित मैट्रिक्स और मूल्यांकन मानदंड बनाना। डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि शिल्प क्षेत्र के लिए स्थायी कार्यनीतियों की योजना और कार्यान्वयन में सहायक होगी।

ग. एकीकृत शिल्प उद्योग सहायता पोर्टल: शिल्प उद्योग के लिए एकल पहुंच बिंदु स्थापित करने के लिए विभिन्न सरकारी संस्थाओं की पेशकशों को समेकित करने वाला एक केंद्रीकृत मंच बनाना। यह पोर्टल योजनाओं, लाभों और सूचनाओं तक पहुंचने की प्रक्रिया को आसान बनाएगा, जिससे शिल्प व्यवसायों की दक्षता में सुधार होगा।

2. शिल्प क्षेत्र का पारिस्थितिकी तंत्र, उद्यम और उद्यमशीलता

क. शिल्प में स्थायी प्रथाओं की मान्यता और दृश्यता: नई सामग्री के उपयोग, अपशिष्ट में कमी और ऊर्जा-दक्ष उत्पादन जैसी सर्वोत्तम प्रथाओं को उजागर करने और बढ़ाने के लिए क्राफ्ट अवॉर्ड, ग्रीन क्राफ्ट टूरिज्म, और क्राफ्ट एम्बेसडर प्रोग्राम जैसी पहल विकसित करना। जलवायु परिवर्तन को कम करने में स्थायी शिल्प के महत्व को उजागर करने के लिए सार्वजनिक अभियान शुरू करना। प्राथमिकता के तौर पर शिल्प की दृश्यता में सुधार करना।

ख. शिल्प आधारित धीमी (स्लो) फैशन उद्यमिता: शिल्प समुदायों को स्थायी प्रथाओं को अपनाने और बनाए रखने के लिए कौशल और ज्ञान से लैस करने के लिए कार्यशालाओं, प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता जैसे व्यापक क्षमता निर्माण कार्यक्रम विकसित करना। यह देखते हुए कि कई शिल्पकार पहले से ही धीमे फैशन के सिद्धांतों का अभ्यास कर रहे हैं, उन्हें स्थायी फैशन क्षेत्र में अग्रणी कारीगरों के लिए आवश्यक संसाधन, प्रशिक्षण और बाजार पहुंच प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

ग. शिल्प व्यवसाय इनक्यूबेटर, गतिवर्धक और अनुसंधान अनुदान: उभरते शिल्प उद्यमों के लिए आवश्यक संसाधन, विशेषज्ञ मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए मजबूत समर्थन प्रणाली स्थापित करना। स्थायी शिल्प प्रथाओं में अनुसंधान और नवाचार के लिए अनुदान और वित्त पोषण की सुविधा प्रदान करना। क्षेत्र में मौजूदा ज्ञान अंतराल को दूर करने के लिए संस्थानों को अनुसंधान अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करना।

घ. सामान्य सुविधा केंद्र (सीएफसी): स्थायी कौशल प्रशिक्षण को शामिल करने, पुनर्नवीनीकरण सामग्री के उपयोग को बढ़ावा देने और स्थायी प्रथाओं के लिए कारीगरों को बाजारों और वित्तीय सहायता से जोड़ने के लिए एक सहायक प्रणाली स्थापित करने के लिए सीएफसी के विकास में निवेश करना।

3. नवाचार और प्रौद्योगिकी प्रगति

क. स्वदेशी सामग्रियों तक पहुंच: बांस, जूट, कॉयर और खादी जैसी पारंपरिक और स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों की उपलब्धता और सामर्थ्य को सुविधाजनक बनाना। सरकार कर निहितार्थों को कम करके, वितरण प्रणालियों को सुव्यवस्थित करके और राज्य स्तरीय कारीगर समुदायों को सहयोग करने के लिए प्रोत्साहित करके इसका समर्थन कर सकती है। शिल्प उत्पादन के अभिन्न अंग स्वदेशी पौधों की प्रजातियों के संरक्षण और प्रसार के लिए बीज बैंकों के निर्माण की सुविधा प्रदान करना, जिससे प्राकृतिक फाइबर और रंगों की विश्वसनीय आपूर्ति सुनिश्चित हो सके।

ख. सामग्री नवाचार: नवीन और पर्यावरण अनुकूल सामग्रियों में अनुसंधान के लिए संसाधनों का आबंटन करें जिनका उपयोग शिल्प उत्पादन में किया जा सकता है, जिससे शिल्प क्षेत्र के अंदर सामग्री स्थिरता और नवाचारी विकास दोनों को बढ़ावा मिलेगा। नई सामग्री बनाने वाले व्यवसायों और नवप्रवर्तकों को प्रोत्साहित करें।

ग. प्रौद्योगिकी एकीकरण: शिल्प क्षेत्र के अंदर ऊर्जा-दक्ष उपकरण और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसी पर्यावरण-अनुकूल प्रौद्योगिकियों के एकीकरण को समर्थन प्रदान करना। कारीगरों के काम को बढ़ाने, वैश्विक बाजारों तक निर्बाध पहुंच की सुविधा, व्यापार परिचालन को सुव्यवस्थित करने और संपूर्ण शिल्प मूल्य श्रृंखला में पारदर्शिता और पता लगाने की क्षमता प्रदान करने के लिए नई प्रौद्योगिकी समाधानों की उन्नति का समर्थन करना। इस एकीकृत तकनीकी दृष्टिकोण से न केवल स्थिरता को बढ़ावा मिलेगा बल्कि उद्योग में विकास और विश्वास को भी बढ़ावा मिलेगा।

4. शिक्षा एवं अनुसंधान

क. अंतःविषय सहयोग, अनुसंधान और नवाचार मंच: विविध कौशल सेट और अंतर्दृष्टि को संयोजित करने के लिए पर्यावरण विज्ञान, व्यवसाय, इंजीनियरिंग और कला जैसे विभिन्न शैक्षणिक विभागों के बीच सहयोगी परियोजनाओं और पहलों को बढ़ावा देना। ऐसे अनुसंधान करना जिसमें शिल्प, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास को आपस में जोड़ा जाता हो। ज्ञान साझाकरण मंच स्थापित करना जहां शोधकर्ता, शिक्षाविद और शिल्प व्यवसायी स्थायी शिल्प से संबंधित ज्ञान और सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान कर सकें।

ख. अकादमिक-कारीगर गठबंधन: अकादमिक और शिल्प समुदायों के बीच साझेदारी को सुविधाजनक बनाना। इस तरह के सहयोग संदर्भ-विशिष्ट अनुसंधान को सक्षम करते हैं जो शिल्प क्षेत्र में सतत विकास के लिए अद्वितीय चुनौतियों, जरूरतों और अवसरों को संबोधित करते हैं।

ग. स्कूलों और विश्वविद्यालयों में स्थिरता-केंद्रित शिक्षा: डिजाइन, कला और मानव विज्ञान सहित पाठ्यक्रम की एक विस्तृत श्रृंखला में स्थिरता मॉड्यूल को एकीकृत करना। शिल्प समूहों को हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने और अपने कपड़ों और उत्पादों में जान डालने वाले कुशल कारीगरों के बारे में जागरूकता हासिल करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करने के लिए क्षेत्र यात्राएं शुरू करना।

5. निवेश और भागीदारी पर प्रभाव

क. हरित वित्तपोषण और निवेश: शिल्प-विशिष्ट वित्तपोषण और निवेश विकल्प विकसित करना जो स्थायी सामग्रियों और प्रथाओं को एकीकृत करने वाली परियोजनाओं को प्राथमिकता दें। इन वित्तपोषण कार्यनीतियों को 'जिम्मेदार उपभोग और उत्पादन' (एसडीजी १२) के साथ संरेखित करता है।

ख. निवेश निधि और प्लेटफॉर्म पर प्रभाव: स्थायी शिल्प उद्यमों का समर्थन करने वाले प्रभावशाली निवेशों के लिए समर्पित निधि और मंच स्थापित करता है। ये पहल वित्तीय रिटर्न और सकारात्मक पर्यावरण के प्रभाव दोनों की तलाश करने वाले निवेशकों को आकर्षित करेंगी।

ग. निवेशक-कारीगर-उद्यमी नेटवर्क: पर्यावरण-अनुकूल पहलों का समर्थन करने के लिए निवेशकों, शिल्प उद्यमों और कारीगरों के बीच मजबूत नेटवर्क की स्थापना की सुविधा प्रदान करना। ऐसे नेटवर्क विकसित करना जो स्थायी शिल्प उद्यमिता का समर्थन करते हैं, कारीगरों के लिए ज्ञान साझा करने, सहयोग और बाजार तक पहुंच की सुविधा प्रदान करते हैं। इसमें संभावित खरीदारों, खुदरा विक्रेताओं और वितरकों के साथ जुड़कर कारीगरों की बाजार पहुंच का विस्तार करना भी शामिल होगा।

"इसके मूल में जलवायु विनाशवाद मौजूद है क्योंकि हमारे पास कल्पना की कमी है। यदि आप पुनर्कल्पना के मौलिक कार्य से जुड़ सकते हो – तो मुझे लगता है कि यही भविष्य है"

- अदिति मेयर, सस्टेनेबल फैशन कंटेंट क्रिएटर और सलाहकार, एडीआईएमएवाय

निष्कर्ष

भारत, ब्रिटेन और विश्व स्तर पर - शिल्प और स्वदेशी ज्ञान जलवायु संकट पर प्रतिक्रिया देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। ये पीढ़ियों से चली आ रही समय पर परखी गई प्रथाएं हैं, जो स्थिरता और संसाधनशीलता को प्राथमिकता देती हैं। स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों से बने हस्तनिर्मित उत्पाद कार्बन फुटप्रिंट को कम करते हैं और जिम्मेदार उत्पादन को बढ़ावा देते हुए पर्यावरण-अनुकूल विकल्पों को बढ़ावा देते हैं। गोलमेज चर्चाओं में लचीलेपन, प्रकृति आधारित समाधान और जेंडर, आजीविका, जलवायु और स्लो फैशन को एकीकृत करने वाले मॉडल की कहानियां सामने आई। इसमें यह भी पुष्टि की गई कि कारीगर समुदाय, पर्यावरण के साथ घनिष्ठ संबंधों और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भरता के कारण, जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं और हमें लचीले समुदायों के निर्माण के लिए एक रोडमैप की आवश्यकता है।

पारिस्थितिकी तंत्र को एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जिसमें प्रकृति-आधारित समाधानों को बढ़ावा देना, शिल्प उद्यमियों के लिए समर्थन, पृथ्वी-केंद्रित समाधानों को बढ़ाना और शिक्षा में सुधार करना शामिल है। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए समर्पित सरकारों को इस क्षेत्र को प्राथमिकता देनी चाहिए और इसके विकास को समर्थन देने के लिए जलवायु निधि का पुनर्गठन करना चाहिए।

यह एक शिल्प क्रांति का समय है - परिवर्तन के कारीगरों को आगे लाने और एक ऐसे भविष्य को आकार देने का जो स्वदेशी समुदायों और हमारे ग्रह दोनों का सम्मान करता है।

Photo credit - Delphine Pawlik

16. पणधारक और योगदानकर्ता

अभिषेक जानी - मुख्य कार्यकारी अधिकारी - फेयरट्रेड फाउंडेशन, भारत
अदिति मेयर - सस्टेनेबल फैशन कंटेंट की निर्माता और सलाहकार - एडीआईएमएवाय, इंक
एली मैथन - संस्थापक - एली मैथन क्रिएशन्स; बोर्ड ट्रस्टी- साड़ियों की रजिस्ट्री
अपर्णा सुब्रमण्यम - पार्टनर - 200 मिलियन कारीगर
अपर्णा राजगोपालन - डिज़ाइन अनुसंधान निदेशक- इकारस; सर्कुलर डिज़ाइन इंडिया
अन्विता प्रशांत - संस्थापक - गो नेटिव
अनिकेत धर - सह-संस्थापक, क्लोकेट
अंशू अरोड़ा - सह-संस्थापक और डिज़ाइन निदेशक- स्मॉल शॉप
अजीत कुमार पाठक - उप निदेशक - रेशम उत्पादन, असम सरकार
अलाय बराह - कार्यकारी निदेशक – इनोवेट. चेंज. कोलेबोरेट (आईसीसीओ)
अलीफ़ा ज़िब्रानी - सह-संस्थापक - क्लोकेट
आलिया करमली
एंड्रिया स्टोक्स - संस्थापक और प्रबंध निदेशक - स्वाहली
अनन्या शर्मा - आईसीसीओ की ट्रस्टी (इनोवेट. चेंज. कोलैबोरेट) - यार्न ग्लोरी की प्रोपराइटर/डिज़ाइन विशेषज्ञ
अनुराधा कुली - राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता, संस्थापक और स्वामी - स्वाभाविक रूप से अनुराधा
आराधना नागपाल - संस्थापक- धूप क्राफ्ट्स; और क्यूरेटर - फ्लोरिश शॉप
अनुराधा सिंह - प्रमुख - नीला हाउस
अन्विता प्रशांत - संस्थापक - गो नेटिव
आशादीप बरुआ - संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी - क्लोकेट
अशोक कुमार दास - प्रिंसिपल - असम टेक्सटाइल इंस्टीट्यूट
अताउर रहमान - संयुक्त निदेशक - रेशम उत्पादन असम सरकार और कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण परिवर्तन पर और नोडल अधिकारी असम परियोजना (एपीएआरटी)
अत्शोले थोपी - परियोजना समन्वयक - चिज़ामी वीव्स और मेलुरी नेचुरल कॉटन इनिशिएटिव
अल्पी बोयला - निदेशक- सेव द लूम
आस्था जैन - प्रोग्राम एसोसिएट - फैशन रेवोल्यूशन इंडिया
अदिति होलानी - कोलकाता लीड - फैशन रेवोल्यूशन इंडिया
औरिनीता दास - टेक्सटाइल डिजाइनर, सहायक प्रोफेसर - नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, शिलांग (एनआईएफटी)
अंकित अग्रवाल - संस्थापक - फूल.को - फ़्लेदर मटेरियल
अनुभव नाथ - संस्थापक निदेशक - ओजस आर्ट गैलरी
आयुष कासलीवाल - संस्थापक और निदेशक - आयुष कासलीवाल डिजाइन प्राइवेट लिमिटेड
औषज्य सैकिया - प्रोग्राम मैनेजर - आईसीसीओ
बानो मेंगोलहुसौ हरालु - भारतीय पत्रकार और कार्यक्रम प्रबंधक- वन्यजीव और जैव विविधता संरक्षण ट्रस्ट, नागालैंड, संरक्षणवादी
भारती गोविंदराज - अध्यक्ष - कर्नाटक शिल्प परिषद
बदाशिशा लिंग्दोह - उत्पादन प्रबंधक - स्वाहली
भाव्या गोयनका - संस्थापक और डिजाइनर - इरो इरो
बोर्नाली डेका - बुनकर- बघारा हैंडलूम क्लस्टर, असम
ब्रिगेडियर (सेवानिवृत्त) राजीव कुमार सिंह - प्रबंध निदेशक – पूर्वोत्तर हस्तशिल्प और
हैंडलूम ब्रिगिट सिंह - टेक्सटाइल डिजाइनर- ब्रिगिट सिंह स्टूडियो डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड (एनईएचएचडीसी)
चंद्रानी - स्वामी - क्राफ्ट कैफे और हैंडलूम गैलरी

धर्मजीत कुमार - सह-संस्थापक - लेकोपे बाय अयांग, अयांग ट्रस्ट
दर्शन गजारे - स्थिरता प्रमुख - राइज वर्ल्डवाइड (लैक्मे फैशन वीक)
दीपाली खंडेलवाल - संचार सलाहकार - शिफ्ट फेस्टिवल
दीपाली सेनापति - बुनकर - बघारा हैंडलूम क्लस्टर, असम
दीपामोनी मेधी - बुनकर - बघारा हैंडलूम क्लस्टर, असम
देवयानी सहाय - एसोसिएट निदेशक - ओजस आर्ट गैलरी
डेल्फ़िन पावलिक - उप निदेशक कला - ब्रिटिश काउंसिल
देविका पुरंदरे - क्षेत्रीय कला कार्यक्रम की प्रमुख, दक्षिण एशिया - ब्रिटिश काउंसिल
डेल्फ़िन विलियट - नीति और अभियान प्रबंधक - फैशन क्रांति
दिव्या बत्रा दास - सह-संस्थापक - क्विर्कस्मिथ लाइफस्टाइल एलएलपी
दिव्या हेगड़े - संस्थापक, मुख्य कार्यकारी निदेशक - 400 थिंग्स.इन
दिव्या कृष्णन - स्वतंत्र स्टाइलिस्ट और शिल्प विशेषज्ञ
गंगाम्बिका सोमशेखरप्पा- देश में सामुदायिक प्रबंधक - ओपन अपैरल रजिस्ट्री
गौरी के. पुरोहित - सहायक प्रोफेसर - पर्ल एकेडमी जयपुर
गीतांजलि कासलीवाल - संस्थापक और प्रबंध निदेशक - अनंतया रिटेल्स प्राइवेट लिमिटेड (आयुष कासलीवाल डिजाइन प्राइवेट लिमिटेड)
गिरिराज सिंह कुशवाह - सचिव - भारतीय शिल्प एवं डिजाइन संस्थान (आईआईसीडी)
गौरवी कुमारी - सह-संस्थापक - प्रिंसेस दीया कुमारी फाउंडेशन
गुंजन जैन - संस्थापक और रचनात्मक - वृक्ष डिज़ाइन्स (क्रिएटिव डिग्निटी के सदस्य)
हेमा सारदा - डिजाइनर - बम्बू और बंच
हिमांशु शनि - संस्थापक और रचनात्मक निदेशक - 11:11/ इलेवन इलेवन
इबा मल्लई - संस्थापक और रचनात्मक निदेशक - किनिहो क्लोदिंग
इशिता दास - संस्थापक - द सिल्क कॉन्सेप्ट; सह-संस्थापक- कनेक्टिंग एनईआर
आइरिस स्ट्रिल - रचनात्मक निदेशक और सह-संस्थापक - सिलाईवाली
जेन हैरिस - डिजिटल डिज़ाइन एंड इनोवेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ द आर्ट्स लंदन के प्रोफेसर
कबिता दी - वीवर, असम - टाटा अंतरण कार्यक्रम
कामिनी सवाहनी - निदेशक - कला एवं फोटोग्राफी संग्रहालय (एमएपी)
कविता चौधरी - डिज़ाइन निदेशक - जयपुर रग्स
करिश्मा शाहनी खान - मुख्य कार्यकारी निदेशक- का-शा
कृति तुला - रचनात्मक निदेशक और संस्थापक - डूडलेज
कुलेन्द्र नाथ पाठक - समन्वयक- गवर्नमेंट सेरीकल्चर फार्म, हाउली
कनिका कार्विनकोप - संस्थापक - नो बॉर्डर्स शॉप
कार्तिक वैद्यनाथन - संस्थापक और प्रमुख निदेशक- वर्णम क्राफ्ट कलेक्टिव
के राधारमण - संस्थापक, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, प्रमुख डिजाइनर - हाउस ऑफ अंगदी
मधुस्मिता खाउंड - सहायक निदेशक - राज्य बांस विकास एजेंसी, असम
मधु वैष्णव - संस्थापक और कार्यकारी निदेशक - सहेली महिला
मनकिरन ढिल्लों - पार्टनरशिप स्ट्रैटेजिस्ट- फैशन रेवोल्यूशन इंडिया
मीनाक्षी सिंह - डिज़ाइन की प्रोफेसर - भारतीय शिल्प और डिज़ाइन संस्थान (आईआईसीडी)
मीरा गोराडिया - संस्थापक और कार्यकारी निदेशक- क्रिएटिव डिग्निटी
मोहम्मद साकिब - टाई और डाई कारीगर; टेक्सटाइल डिज़ाइनर- रंगरेज़ क्रिएशन
मेधा सैकिया - संस्थापक अध्यक्ष - पूर्वोत्तर भारत फैशन और डिजाइन परिषद- एफएनडीसी
मनीष त्रिपाठी – स्वामी - अंतरदेसी

मीता मस्तानी - सह-संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी - बिंदास कलेक्टिव
मुदिता श्रीवास्तव - निदेशक- गोल्डन फेदर्स; मुदिता और राधेश प्राइवेट लिमिटेड
नैंसी भसीन - संस्थापक - दिस फ़ॉर दैट
नेहा सिंह - पार्टनर- क्विक सैंड (सीएफ ग्रांटी)
नागा नंदिनी दासगुप्ता - डीन - सृष्टि मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिज़ाइन और टेक्नोलॉजी
निकिता सेठी - संस्थापक - कल्पना
निशा कोटियन - प्रबंधक - ब्रिटिश काउंसिल
नयनमोनी बरुआ - महाप्रबंधक - न्यू एरा डिज़ाइन्स प्राइवेट लिमिटेड, गुवाहाटी (एनईडीपीएल)
डॉ. नयन मित्रा (पीएचडी) - संस्थापक - सस्टेनेबल एडवांसमेंट्स (ओपीसी) प्राइवेट लिमिटेड
नेंगनीथेम हेंगना - प्रबंध निदेशक - रनवे इंडिया
नाओमी - संस्थापक - बून इंडिया
निमिषा सारा फिलिप - प्रभाव निवेश की वकील
निरंजलि काकोटयी - प्रमुख - सुआलकुची इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (एसआईएफटी)
निखिल काला - सहायक प्रोफेसर; कोर्स लीडर फॉर इंटीरियर डिज़ाइन और स्टाइलिंग - पर्ल एकेडमी जयपुर
नूपुर केशन - पार्टनर - आसमा एंटरप्राइज एलएलपी
परवेज़ आलम - क्रिएटिव डिज़ाइन लीड - टाटा ट्रस्ट
पॉलमी गोगोई - सह-संस्थापक - वोवन टेल्स ऑफ नॉर्थ ईस्ट
प्रतिभा दी - बुनकर, असम - टाटा अंतरन कार्यक्रम
प्रेरणा अंजलि चौधरी - संस्थापक - हाउस ऑफ नूरी
पूजा दास - प्रोडक्ट डिज़ाइन इंटर्न – इनोवेट. चेंज. कोलेबोरेट (आईसीसीओ)
पुबेरुन सरमाह - निदेशक - एन्हांस फाउंडेशन
पद्मा राज केशरी - फैशन रिवोल्यूशन इंडिया
पवित्रा मुद्दया - संस्थापक - विमोर हैंडलूम फाउंडेशन
प्रमिला प्रसाद - संस्थापक, स्वामी - कन्या हेरिटेज साड़ीज़
प्रिया कृष्णमूर्ति - संस्थापक और सीईओ - 200 मिलियन कारीगर
पुरोबी बोरदोलोई - बुनकर - बघारा हैंडलूम क्लस्टर, असम
राधेश अग्रहरि - निदेशक-गोल्डन फेदर्स
रवि किरण – स्वामी (प्रोप्रिएटर) - मेटाफोर रचा
रेमा शिवराम - सह-संस्थापक - फेयरकनेक्ट द्वारा एथिक एटिक
रेणुका दी - बुनकर, असम - टाटा अंतरण कार्यक्रम
रिचर्ड वेल्हो - बांस वास्तुकार- ज़िनोरिक - बांस पायनियर पुरस्कार के प्राप्तकर्ता
ऋषि राज सरमाह - परियोजना प्रमुख - माटी केंद्र
ऋतुराज दीवान - सह-संस्थापक - 7वीव्स रिसर्च फाउंडेशन
रिचाना खुमानथेम - क्रिएटिव डायरेक्टर - खुमानथेम
ऋचिका अग्रवाल - सह-संस्थापक - आसमा एंटरप्राइज एलएलपी
रूपा मेहता - मुख्य कार्यकारी अधिकारी - साशा एसोसिएशन फॉर क्राफ्ट प्रोड्यूसर्स
रोमा नरसिंघानी - क्यूरेटिव प्रोड्यूसर - फ्यूचर कलेक्टिव
राशि जैन - निदेशक, पश्चिम भारत - ब्रिटिश काउंसिल
राधी पारेख - संस्थापक निदेशक - आर्टिसन्स'
रुचिका सचदेवा - संस्थापक और क्रिएटिव डायरेक्टर - बोडिस
डॉ. रितु सेठी - संस्थापक-ट्रस्टी; अध्यक्ष - द क्राफ्ट रिवाइवल ट्रस्ट
सहर मंसूर - संस्थापक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी - बेअर नेसेसिटीज़ - जीरो वेस्ट इंडिया
संदीप संगारू - संस्थापक, निदेशक - संगारू डिजाइन ऑब्जेक्ट प्राइवेट लिमिटेड

शिवा देवीरेड्डी - संस्थापक, प्रबंध निदेशक - गोकूप
श्याम सुखरामनी - संस्थापक - कोर्रा जीन्स
श्रीधर पोद्दार - संस्थापक - काश फाउंडेशन / इवोक लंदन
श्रीवि कल्याण - डीन- कानून, पर्यावरण और योजना - सृष्टि मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिजाइन और टेक्नोलॉजी
सुसान थॉमस - निदेशक - नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, बेंगलुरु
स्वाति मास्केरी - डीन, औद्योगिक कला और डिजाइन प्रैक्टिस - सृष्टि मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिजाइन और टेक्नोलॉजी
सौमर शर्मा - संस्थापक - इंडियन वीवर्स एलायंस इंक
संघमित्रा कलिता - संस्थापक, क्रिएटिव डायरेक्टर - इकोनिक
संजय गर्ग - संस्थापक और डिजाइनर - रॉ मैंगो
सयाली गोयल - संस्थापक और रचनात्मक निदेशक - कोको और जैस्मीन
शेफाली वासुदेव – मुख्य संपादक- द वॉइस ऑफ फैशन
श्रेया मोजुमदार - कार्यकारी निदेशक - अखिल भारतीय कारीगर और शिल्पकार कल्याण संघ (एआईएसीए)
संजय गर्ग - संस्थापक और डिजाइनर- रॉ मैंगो
श्रावणी देशमुख - सांस्कृतिक बौद्धिक संपदा अधिकार पहल (सीआईपीआरआई)
शिवम पुंज्य - संस्थापक और रचनात्मक निदेशक - बेहनो
शारदा गौतम - जोनल प्रमुख-उत्तर - टाटा ट्रस्ट
सेवाली बोरदोलोई - बुनकर - बघारा हैंडलूम क्लस्टर, असम
स्टेफ़नी ओवेन्स - कला, डिज़ाइन और मीडिया के डीन और संयोजक, मेकिंग फ़्यूचर्स रिसर्च ग्रुप - आर्ट्स यूनिवर्सिटी प्लायमाउथ
शालिनी गुप्ता - एसोसिएट डीन, स्कूल ऑफ फैशन - पर्ल एकेडमी
शिखा कलिता - कारीगर - विपणन और बिक्री को संभालना
शिप्रा चंचल - स्टोरीटेलिंग मैनेजर - जयपुर रग्स
शिखा सोनी - मानसिक स्वास्थ्य शोधकर्ता
श्रुति सिंह - कंट्री हेड - फैशन रेवोल्यूशन इंडिया
शिवानी गोस्वामी - टेक्सटाइल डिजाइनर – इनोवेट. चेंज. कोलेबोरेट (आईसीसीओ)
सुलग्ना सेन - टाटा अंतरन कार्यक्रम
सेनो त्सुहा - सलाहकार नॉर्थ ईस्ट नेटवर्क - चिज़ामी वीव्स
सरोज पांडे - संस्थापक - पुनर्नवा क्राफ्ट्स
सुब्रत पांडे - संस्थापक और प्रबंध निदेशक - पुनर्नवा क्राफ्ट्स
सुजया हजारिका - सह-संस्थापक और रचनात्मक निदेशक - जोस्काई स्टूडियो
स्वाति सिन्हा - सहायक प्रोफेसर, पाठ्यक्रम समन्वयक - भारतीय शिल्प और डिजाइन संस्थान (आईआईसीडी)
डॉ. शालू रस्तोगी - प्रोफेसर - भारतीय शिल्प एवं डिजाइन संस्थान (आईआईसीडी)
तमारा लॉ गोस्वामी - सलाहकार बोर्ड सदस्य - भारत एग्रोइकोलॉजी फंड
शेरिंग डी भूटिया - सहायक प्रोफेसर- राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान, शिलांग (एनआईएफटी)
तान्या कोटनाला - आर्टिशियन डिजाइनर - अवनी महल
विद्युन सिंह - सह-संस्थापक और रचनात्मक निदेशक - फ्यूचर कलेक्टिव
विपुल अमर - फ़ोटोग्राफर, विजुअल आर्टिस्ट और फिल्म निर्माता - वीआईपी फोटोग्राफी आर्ट्स कंपनी
विवेक शर्मा - सह-संस्थापक - प्रियंजोली

17. शब्दावली

कार्बन क्रेडिट कंपनियों के लिए वैश्विक जलवायु लक्ष्यों को पहुंच के अंदर रखने वाली गतिविधियों का समर्थन करने के लिए एक पारदर्शी, मापने योग्य, परिणाम-आधारित तरीके का प्रतिनिधित्व करता है। वे जंगलों या समुद्री पारिस्थितिक तंत्र जैसे प्राकृतिक कार्बन सिंक की सुरक्षा और पुनर्स्थापन या उभरती कार्बन हटाने वाली तकनीक को बढ़ाने में सहायता कर सकते हैं। वे कार्बन उत्सर्जन को मापने के बिंदु के रूप में भी काम करते हैं।

कार्बन पृथक्करण से तात्पर्य जैविक, रासायनिक या भौतिक प्रक्रियाओं के माध्यम से वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड को कार्बन पूल में ग्रहण करने और जमा करने की प्रक्रिया से है। यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसे तकनीकी रूप से भी बढ़ाया जा सकता है, जिसका उद्देश्य वैश्विक जलवायु परिवर्तन को कम करने के लिए वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड को कम करना है।

गोलाकार अर्थव्यवस्था उत्पादन और उपभोग का एक आर्थिक मॉडल है जिसका लक्ष्य सीमित पर्यावरण के संसाधनों के मुद्दे के अनुरूप एक स्वायत्त और सतत समाज का निर्माण करना है। यह संसाधन अनुकूलन के लिए नई प्रक्रियाओं और समाधानों को डिजाइन द्वारा अपशिष्ट को न्यूनतम तक कम करके और उत्पाद जीवन चक्र को बढ़ाकर एक पुनर्योजी अर्थव्यवस्था में बदलने की आकांक्षा रखता है। इसमें मौजूदा सामग्रियों और उत्पादों को यथासंभव लंबे समय तक साझा करना, पट्टे पर देना, पुन: उपयोग करना, मरम्मत करना, नवीनीकरण करना और पुनर्चक्रण करना शामिल है।

जलवायु परिवर्तन तापमान और मौसम के पैटर्न में दीर्घकालिक बदलाव को दर्शाता है। ये बदलाव प्राकृतिक या मानव-प्रेरित हो सकते हैं, मुख्य रूप से जीवाश्म ईंधन के जलने के कारण। यह शब्द वर्तमान में ग्लोबल वार्मिंग और पृथ्वी की जलवायु प्रणाली पर इसके प्रभावों का वर्णन करता है, जिसमें बढ़ी हुई ग्रीनहाउस गैसें शामिल हैं जो पृथ्वी के निचले वायुमंडल में अधिक गर्मी को रोकती हैं, जिससे वैश्विक तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) होती है।

जलवायु के लचीलेपन का तात्पर्य जलवायु से संबंधित खतरनाक घटनाओं, प्रवृत्तियों या गड़बड़ी का पूर्वानुमान लगाने, तैयारी करने और प्रतिक्रिया देने की क्षमता से है।

इको क्रेडिट पर्यावरण के अनुकूल उपभोक्ता व्यवहार को बढ़ावा देने वाली एक पुरस्कृत प्रणाली का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे सकारात्मक पर्यावरण के प्रभाव डालने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह अंतिम उपयोगकर्ताओं को उत्पादों के पुन: उपयोग और पुनर्चक्रण के लिए प्रोत्साहित करता है।

पर्यावरण के प्रबंधन का तात्पर्य संरक्षण प्रयासों और स्थायी प्रथाओं के माध्यम से प्राकृतिक पर्यावरण के जिम्मेदार उपयोग और संरक्षण से है। इसमें पर्यावरण के देखभालकर्ता के रूप में कार्य करने वाले व्यक्तियों, समूहों, गैर-लाभकारी संस्थाओं, सरकारी निकायों और अन्य नेटवर्क की सक्रिय भागीदारी शामिल है।

फास्ट फैशन एक व्यवसाय मॉडल का वर्णन करता है जो हाल के कैटवॉक रुझानों और हाई-फैशन डिज़ाइनों को दोहराता है, उन्हें कम लागत पर बड़े पैमाने पर उत्पादन करता है और उच्च मांग को पूरा करने के लिए उन्हें खुदरा स्टोरों में जल्दी लाता है। फास्ट फैशन उपभोक्ताओं के लिए सस्ती शैली पेश करने के लिए रुझान की प्रतिकृति और कम गुणवत्ता वाली सामग्री, अक्सर सिंथेटिक कपड़ों का लाभ उठाता है।

हस्तशिल्प से तात्पर्य हाथ से या सरल उपकरणों से बनाए गए उत्पादों, उपकरणों और उद्योगों से है। इन उत्पादों के निर्माण में, जैसे कि मिट्टी के बर्तन, पट्टचित्रा पेंटिंग, सिल्वर फिलिग्री और लाह बनाना, सरल, गैर-जटिल उपकरणों का लाभ उठाते हुए मानव कौशल और प्रतिभा शामिल है।

हैंडलूम (हथकरघा) एक मैन्युअल रूप से संचालित करघा (लूम) है, जो मोटर चालित या विद्युत चालित करघे से भिन्न है। हथकरघा बुनकरों को ताने और बाने के धागों को आपस में जोड़कर कपड़ा बनाने में सक्षम बनाता है, जिससे तेज, अधिक सुसंगत और अधिक स्थायी बुनाई की सुविधा मिलती है। हथकरघा की जटिलता अलग-अलग, पोर्टेबल बैकस्ट्रैप करघे से लेकर कमरे के आकार के जेकक्वार्ड करघे तक होती है ।

आक्रामक पादप प्रजातियां उन वनस्पतियों को संदर्भित करती हैं, जिन्हें या तो जानबूझकर या गलती से एक नए वातावरण में लाया जाता है, जहां वे आक्रामक रूप से फैलती हैं, जिससे स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बाधित होता है। हालाँकि वे कुछ क्षेत्रों में हानिकारक हो सकते हैं, ये पौधे स्वाभाविक रूप से "बुरे" नहीं हैं। समस्याएँ तब उत्पन्न होती हैं जब वे गैर-देशी पारिस्थितिक तंत्र में आ जाते हैं।

पर्माकल्चर में आत्मनिर्भर और स्थायी तरीके से कृषि पारिस्थितिकी तंत्र की खेती शामिल है। यह फसल विविधता, लचीलापन, प्राकृतिक उत्पादकता और स्थिरता के आधार पर सहक्रियात्मक कृषि प्रणाली विकसित करने के लिए प्रकृति से प्रेरणा लेता है।

पावरलूम, 1784 में ब्रिटेन में एडमंड कार्टराईट द्वारा आविष्कार किया गया एक यंत्रीकृत उपकरण है, जो बिजली के लिए ड्राइव शाफ्ट का उपयोग करता है। इस आविष्कार ने हाथ से चलने वाले करघों की तुलना में तेजी से कपड़ा निर्माण को सक्षम बनाया, जिससे यह औद्योगिक क्रांति की एक निर्णायक मशीन बन गई।

पुनर्जनन कृषि एक समग्र कृषि प्रणाली है जो मृदा स्वास्थ्य, खाद्य गुणवत्ता, जैव विविधता सुधार, जल गुणवत्ता और वायु गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित है। इसमें मिट्टी के कार्बनिक पदार्थ, बायोटा और जैव विविधता को बढ़ाने, जल-धारण क्षमता और कार्बन पृथक्करण में सुधार पर जोर दिया जाता है।

स्लो (धीमा) फैशन स्थायी फैशन के प्रति एक जागरूकता और दृष्टिकोण है जो कपड़े बनाने के लिए आवश्यक प्रक्रियाओं और संसाधनों पर सावधानीपूर्वक विचार करता है। यह कुछ घिसाव के बाद लैंडफिल के लिए नियत ट्रेंड पर चलने वाले कपड़ों पर सदाबहार, उच्च गुणवत्ता वाले डिज़ाइन को प्राथमिकता देता है। यह लोगों, पर्यावरण और पशुओं के सम्मान के साथ कपड़े और परिधान निर्माण की वकालत करता है।

संयुक्त राष्ट्र एसडीजी (सतत विकास लक्ष्य) को 2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा गरीबी को समाप्त करने, ग्रह की रक्षा करने और 2030 तक सभी के लिए शांति और समृद्धि सुनिश्चित करने के एक सार्वभौमिक आह्वान के रूप में अपनाया गया था। आपस में जुड़े 17 एसडीजी मानते हैं कि एक क्षेत्र में कार्रवाई दूसरों में परिणामों को प्रभावित करेगी और विकास को सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरण के स्थिरता को संतुलित करना होगा।

18. सन्दर्भ

1. एआर6 सिंथेसिस रिपोर्ट : क्लाइमेट चेंज 2023 (2023) इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी)। https://www.ipcc.ch/report/sixth-assessment-report-cycle/ पर उपलब्ध।
2. इंडिया (2023) क्लाइमेट एक्शन ट्रैकर। https://climateactiontracker.org/countries/india/ पर उपलब्ध।
3. ब्राउन, एम. ई. और औद्राट, सी. डी. जे. (2022) जेंडर, क्लाइमेट चेंज, एंड सिक्योरिटी : मेकिंग द कनेक्शंस, विल्सन सेंटर। https://www.wilsoncenter.org/article/gender-climate-change-and-securitymaking-connections पर उपलब्ध।
4. कृष्णमूर्ति, पी. और सुब्रमण्यम, ए. (2021) अंडरस्टैंडिंग इंफॉर्मेलिटी इन इंडियाज़ आर्टिशन इकोनॉमी : इम्पैक्ट इंटरप्रेन्योर, गो टू इम्पैक्ट इंटरप्रेन्योर। https://impactentrepreneur.com/understanding-informality-in-indias-artisan-economy/ पर उपलब्ध।
5. बर्नार्ड, एच. (2023) एड्रेसिंग द इंस्टेबिलिटी ऑफ साउथ एशियन आर्टिशियन, द बोर्गन प्रोजेक्ट। https://borgenproject.org/south-asian-artisans/ पर उपलब्ध।
6. क्राफ्ट इंडस्ट्री एंड द सर्कुलर इकोनॉमी (2022) वर्ल्ड क्राफ्ट्स काउंसिल। https://www.wccinternational.org/crafts-and-circular-economy पर उपलब्ध।
7. सर्कुलर इकोनॉमी (2022) क्राफ्ट्स काउंसिल यूके। https://www.craftscouncil.org.uk/documents/1827/ Circular_Economy.pdf पर उपलब्ध।
8. यूएन हेल्प्स फैशन इंडस्ट्री शिफ्ट टू लो कार्बन (2018) यूनाइटिड नेशंस क्लाइमेट चेंज चार्टर। https://unfccc.int/news/un-helps-fashion-industry-shift-to-low-carbon पर उपलब्ध।
9. अनुप्रेरणा, टी. (2022) हैंडलूम, ए टाइम लेस ट्रेडिशन एंड इट्स पोजिटिव एनवायर्नमेंटल इम्पैक्ट, अनुप्रेरणा। https://anuprerna.com/blog/handloom-a-time-less-tradition-its-positive-environmental-impact पर उपलब्ध।
10. कृष्णमूर्ति, पी. और सुब्रमण्यम, ए. (2021) अंडरस्टैंडिंग इंफॉर्मेलिटी इन इंडियाज़ आर्टिशन इकोनॉमी : इम्पैक्ट एन्टरप्रेन्योर, गो टू इम्पैक्ट एन्टरप्रेन्योर। https://impactentrepreneur.com/ understanding-informality-in-indias-artisan-economy/ पर उपलब्ध।
11. बर्नार्ड, एच. (2023) एड्रेसिंग द इंस्टेबिलिटी ऑफ साउथ एशियन आर्टिशियंस, द बोर्गन प्रोजेक्ट। https://borgenproject.org/south-asian-artisans/ पर उपलब्ध।
12. हैंडलूम एंड हैंडिक्राफ्ट्स इंडस्ट्री इन इंडिया (कोई दिनांक नहीं) हैंडलूम एंड हैंडिक्राफ्ट्स इंडस्ट्री इन इंडिया https://www.investindia.gov.in/sector/textiles-apparel/handlooms-handicrafts पर उपलब्ध।
13. हैंडलूम इंडस्ट्री एंड एक्सपोर्ट्स (2022) इंडियन ट्रेड पोर्टल। https://www. indiantradeportal.in/vs.jsp?id=0%2C31%2C24100%2C24112 HYPERLINK "https://www.indiantradeportal.in/vs.jsp?id=0%2C31%2C24100%2C24112&lang=0"& HYPERLINK "https://www.indiantradeportal.in/vs.jsp?id=0 %2C31%2C24100%2C24112&lang=0"lang=0 पर उपलब्ध।
14. इंडियन हैंडिक्राफ्ट्स मार्केट साइज़, शेयर, एनालायसिस, रिपोर्ट 2023-2028 (2022) इंडियन हैंडिक्राफ्ट्स मार्केट साइज़, शेयर, एनालायसिस, रिपोर्ट 2023-2028. https://www.imarcgroup.com/india-handicrafts-market पर उपलब्ध।
15. ग्लोबल एक्सपर्ट मिशन सस्टेनेबल फैशन इन इंडिया (2021) इनोवेट यूके केटीएन। https://iuk.ktn-uk.org/wp-content/uploads/2021/11/KTN_Sustainable-Fashion-India.pdf पर उपलब्ध।
16. ग्लोबल एक्सपर्ट मिशन सस्टेनेबल फैशन इन इंडिया (2021) इनोवेट यूके केटीएन। https://iuk.ktn-uk.org/wp-content/uploads/2021/11/KTN_Sustainable-Fashion-India.pdf पर उपलब्ध।
17. हैंडलूम एंड हैंडिक्राफ्ट्स इंडस्ट्री इन इंडिया (कोई दिनांक नहीं) हैंडलूम एंड हैंडिक्राफ्ट्स इंडस्ट्री इन इंडिया https://www.investindia.gov.in/sector/textiles-apparel/handlooms-handicrafts पर उपलब्ध।
18. मैकफॉल-जॉनसन, एम. (2019) द फैशन इंडस्ट्री एमिट्स मोर कार्बन दैन इंटरनेशनल फ्लाइट्स एंड मैरिटाइम शिपिंग कम्बाइंड। हेयर आर द बिगेस्ट वेज़ इट इम्पैक्ट्स द प्लैनेट। बिजनेस इंसाइडर। https://www.businessinsider.in/science/news/the-fashion-industry-emits-more-carbon-than-international-flightsand-maritime-shipping-combined-here-are-the-biggest-ways-it-impacts-the-planet-/articleshow/71640863.cms पर उपलब्ध।
19. फैशन इंडस्ट्री, यूएन परसुई क्लाइमेट एक्शन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (2018) यूनाइटिड नेशंस क्लाइमेट चेंज चार्टर। https://unfccc.int/news/fashion-industry-un-pursue-climate-action-forsustainable-development पर उपलब्ध।
20. क्राफ्ट एंड द सर्कुलर इकोनॉमी (2023) गारलैंड मैग्ज़ीन। https://garlandmag.com/loop/craft-and-the-circular-economy पर उपलब्ध।
21. ट्रस्टिड ट्रांसलेशंस (2023) इंडिजिनस लैंग्वेजिस' एनवायर्नमेंट वर्ड्स ऑफ विज़्डम, ट्रस्टिड ट्रांसलेशंस। https://www.trustedtranslations.com/blog/indigenous-languages-environmental-words-ofwisdom पर उपलब्ध।
22. ग्रैन, एम. (2020) अयनी: ओनरिंग द ह्यूमेनिटी इन ऑल, ग्लोबल वॉलेंट्रीज़। https://globalvolunteers. org/ayni-honoring-the-humanity-in-all/ पर उपलब्ध।
23. एरि सिल्क : ए पीसफुल सिल्क (2023) वी आर केएएल। https://www.wearekal.com/pages/eri-silk पर उपलब्ध।

24. बार्कक्लोथ मेकिंग इन युगांडा (कोई दिनांक नहीं) इंटैंजिबल कल्चरल हेरिटेज। https://ich.unesco.org/en/ RL/barkcloth-making-in-uganda-00139 पर उपलब्ध।

25. यार्क वूल शीप वूल एंड लैबस्वूल फ्रॉम लद्दाख (2023) वी आर केएएल। https://www.wearekal. com/pages/wool-from-the-himalayas पर उपलब्ध।

26. घोष, ए. (2018) इन द नॉर्थईस्ट, 10 ईयर्स ऑफ क्राफ्टिंग वेल्थ फ्रॉम ए नोटोरियस वीड, द इंडियन एक्सप्रेस। https://indianexpress.com/article/lifestyle/art-and-culture/in-the-northeast-water-hyacinthcrafting-notorious-weed-5080471/ पर उपलब्ध।

27. Www.directcreate.com (2023) क्राफ्ट वॉटर ह्यचींथ वेविंग, डायरेक्ट क्रिएट। https://www.directcreate.com/craft/water-hyacinth-weaving पर उपलब्ध।

28. माहियात, टी. आदि. (2022) मॉडलिंग द एनवायर्नमेंटल एंड सोशल इम्पैक्ट्स ऑफ द हैंडलूम इंडस्ट्री इन बांग्लादेश थ्रू लाइफ साइकिल अससेमेंट – मॉडलिंग अर्थ सिस्टम्स एंड एनवायर्नमेंट, स्प्रीगर लिंक। https://link.springer.com/article/10.1007/s40808-022-01491-7 पर उपलब्ध।

26. प्रिया, एम. (2018) कमलादेवी चट्टोपाध्याय – द टॉर्चबीयर ऑफ इंडियन क्राफ्ट्स, सारंगी। https://www.sarangithestore.com/blogs/sarangi-journal/kamaladevi-chattopadhyay-the-torchbearer-of-indian-crafts पर उपलब्ध।

30. घोष, एस. (2018) असम'स मुगा सिल्कवॉर्म बैटलस क्लाइमेट चेंज, मोंगाबे। https://india.mongabay.com/2018/02/assams-muga-silkworm-battles-climate-change/ पर उपलब्ध।

31. (2023) यूजिंग डेटा टू सपोर्ट आर्टिशियंस थ्रू क्लाइमेट चेंज। रिप. नेस्ट एंड मैकगवर्नफाउंडेशन। https://www.buildanest.org/wp-content/uploads/2023/08/2023_McGovernFoundation_InsightsForImpact.pdf पर उपलब्ध।

32. (2023) यूजिंग डेटा टू सपोर्ट आर्टिशियंस थ्रू क्लाइमेट चेंज। रिप. नेस्ट एंड मैकगवर्नफाउंडेशन। https://www.buildanest.org/wp-content/uploads/2023/08/2023_McGovernFoundation_InsightsForImpact.pdf पर उपलब्ध।

33. सर्कुलर इकोनॉमी इंट्रोडक्शन (कोई दिनांक नहीं) एलेन मैक आर्थूर फाउंडेशन। https://ellenmacarthurfoundation.org/topics/circular-economy-introduction/overview पर उपलब्ध।

34. मस्तानी, एम. (2021) वाय वी मस्ट कॉल आउट क्राफ्टवॉशिंग, द वॉइस ऑफ फैशन। https://www.thevoiceoffashion.com/fabric-of-india/artisan-x-designer/why-we-must-call-out-craftwashing--4684 पर उपलब्ध।

35. हरितश, ए. के., शर्मा, ए. और बहेल, के. (2015) द पोटेंशियल ऑफ कन्ना लिली फॉर वेस्टवॉटर ट्रीटमेंट अंडर इंडियन कंडिशंस, इंट जे फाइटोरेमिडिएशन। https://pubmed.ncbi.nlm.nih.gov पर उपलब्ध।

36. रहमान, ए. पी. (2019) कच्छ'स वागड़ और कला कॉटन : बैक फ्रॉम द (ऑलमोस्ट) डीड, मोंगाबे। https://india.mongabay.com/2019/07/kutchs-wagad-or-kala-cotton-back-from-the-almost-dead/ पर उपलब्ध।

37. कला कॉटन : इंडियाज़ ओल्ड वर्ल्ड ऑर्गेनिक कॉटन (2022) इंडियन टेक्स्टाइल जर्नल। https://indiantextilejournal.com/kala-cotton-indias-old-world-organic-cotton/ पर उपलब्ध।

38. क्राफ्टिंग फ्यूचर (कोई दिनांक नहीं) क्राफ्टिंग फ्यूचर । यूके एंड इंटरनेशनल प्रोजेक्ट्स । एडीएफ – ब्रिटिश काउंसिल। https://design.britishcouncil.org/projects/crafting-futures/ पर उपलब्ध।

39. (2017) इंडिजियस पीपल्स एंड क्लाइमेट चेंज. रिप. इंटरनेशनल लेबर ऑर्गेनाइजेशन। https://www.ilo.org/wcmsp5/groups/public/---dgreports/---gender/documents/publication/wcms_551189.pdf पर उपलब्ध।

40. डबलिंग फाइनेंस फ्लोज़ इनटू नेचर-बेस्ड सॉल्यूएशंस बाय 2025 टू डील विद ग्लोबल क्राइसिस – यूएन रिपोर्ट (2022) यूनाइटिड नेशंस एनवायर्नमेंट प्रोग्राम। https://www.unep.org/news-and-stories/press-release/doubling-finance-flows-nature-based-solutions-2025-deal-global पर उपलब्ध।

41. डबलिंग फाइनेंस फ्लोज़ इनटू नेचर-बेस्ड सॉल्यूएशंस बाय 2025 टू डील विद ग्लोबल क्राइसिस – यूएन रिपोर्ट (2022) यूनाइटिड नेशंस एनवायर्नमेंट प्रोग्राम। https://www.unep.org/news-and-stories/press-release/doubling-finance-flows-nature-based-solutions-2025-deal-globa पर उपलब्ध।

42. ईब (2023) इंवेस्टिंग इन नेचर-बेस्ड सॉल्यूशन, यूरोपियन इंवेस्टमेंट बैंक। https://www.eib.org/en/publications/20230095-investing-in-nature-based-solutions पर उपलब्ध।

43. 200 मिलियन आर्टिसंस। (2023). बिजनेस ऑफ हैंडमेड। फाइनेंसिंग ए हैंडमेड रेवोल्यूएशन : हाउ केटेलायटिक कैपिटल कैन जम्पस्टार्ट इंडियाज़ कल्चरल इकोनॉमी। www.businessofhandmade2.com पर उपलब्ध।

44. 200 मिलियन आर्टिशंस। (2023). बिजनेस ऑफ हैंडमेड। फाइनेंसिंग ए हैंडमेड रेवोल्यूएशन : हाउ केटेलायटिक कैपिटल कैन जम्पस्टार्ट इंडियाज़ कल्चरल इकोनॉमी। www.businessofhandmade2.com पर उपलब्ध।

45. यूनिट बी. (2006) कनवेंशन ऑन बायोलॉजी डाइवर्सिटी। https://www.cbd.int/convention/articles/?a=cbd-02 पर उपलब्ध।

46. असेसिंग द फाइनेंशियल इम्पैक्ट ऑफ द लैंड यूज़ ट्रांजीशन ऑन द फूड एंड एग्रीकल्चर सेक्टर (2022) क्लाइमेट चैंपियंस। https://climatechampions.unfccc.int/wp-content/uploads/2022/09/Assessing-thefinancial-impact-of-the-land-use-transition-on-the-food-and-agriculture-sector.pdf पर उपलब्ध।

47. ईब (2023) इंवेस्टिंग इन नेचर-बेस्ड सॉल्यूशन, यूरोपियन इंवेस्टमेंट बैंक। https://www.eib.org/ en/publications/20230095-investing-in-nature-based-solutions पर उपलब्ध।

19. गोलमेज़ बैठकों के दौरान बातचीत

ये बैंगलोर, दिल्ली, गुवाहाटी, जयपुर और मुंबई में पांच गोलमेज सम्मेलनों में हुई बातचीत के कुछ अतिरिक्त अंश हैं।

शिल्प, स्थिरता और पैमाना

'बहुत से लोग शिल्प के वास्तविक मूल्य को नहीं समझते हैं। यह एक धीमी, सोची-समझी प्रक्रिया है और आप इसकी मांग को वैसे नहीं बढ़ा सकते जैसे आप बड़े पैमाने पर उत्पादित वस्तुओं के साथ करते हैं। लेकिन उस धीमी प्रक्रिया के अंदर एक उल्लेखनीय ताकत और भावनात्मक संबंध छिपा है। शिल्प एक ऐसी चीज़ है जो पीढ़ियों से चली आ रही है, और केवल यही इसमें अविश्वसनीय मूल्य को जोड़ता है। उदाहरण के लिए, गुजरात और जयपुर के उत्कृष्ट प्रिंटों को लें। वे सावधानीपूर्वक हाथ से तैयार किए जाते हैं, और जब आप उनकी तुलना डिजिटल रूप से मुद्रित संस्करणों से करते हैं, तो दूसरे का कारीगर मूल्य खो जाता है।

'हम तीन अलग-अलग समूहों में लगभग २,००० बुनकरों के साथ काम कर रहे थे, और जब जलवायु परिवर्तन की बात आती है, तो हमारा विश्वास हमेशा प्रकृति को बनाए रखने के बारे में रहा है। चुनौती स्थिरता और जलवायु परिवर्तन के सिद्धांतों से समझौता किए बिना पारंपरिक ज्ञान और वैज्ञानिक ज्ञान को एकीकृत करना है। हम उन समुदायों के अंदर इन प्रथाओं को स्थापित करने का प्रयास करते हैं जिनके साथ हम काम करते हैं, चाहे वह पानी का उपयोग हो, वनों को संरक्षित करना हो, हानिकारक रसायनों से बचना हो या स्वच्छ ऊर्जा कार्यक्रमों को लागू करना हो। हमारा जिम्मेदार व्यवसाय कार्यक्रम उत्पादक संगठनों को जिम्मेदारी की भावना के साथ व्यवसाय संचालित करने के बारे में भी शिक्षित करता है।'

'यदि आप हस्तशिल्प को देखें, उदाहरण के लिए, जब हम पूर्वोत्तर में काम करते थे, तो बहुत सारे उत्पाद बांस से बने होते थे। और एक सामान्य चीज़ जो हम देखते हैं वह यह है कि शुरू से अंत तक, उपयोग की जाने वाली सभी सामग्री बांस है, और यह ऐसी चीज़ है जो बहुत तेजी से बढ़ती है। हम जिस प्रक्रिया का उपयोग कर रहे हैं उसका पर्यावरण के प्रभाव कम है, यह बायोडिग्रेडेबल है।'

'जब भारत में शिल्प की बात आती है तो मेरी राय में वे अविश्वसनीय रूप से स्थायी और पर्यावरण-अनुकूल हैं। क्यों? क्योंकि कारीगर अपने आसपास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए स्थानीय सामग्रियों के साथ काम करते हैं। यह जीवन का एक ऐसा तरीका है जो उस क्षेत्र की गहराई से जुड़ा हुआ है जिससे वे संबंधित हैं, जो इसे वास्तव में एक स्थायी अभ्यास बनाता है। लेकिन यहाँ चिंता की बात यह है: एक बार जब हम पूरी तरह से बड़े पैमाने पर मांग को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर देते हैं, तो हम शिल्प के सार से समझौता करने का जोखिम उठाते हैं। बड़ी मात्रा में आपूर्ति करने का दबाव शॉर्टकट या गुणवत्ता में समझौता का कारण बन सकता है, और तभी हम शिल्प कौशल की सच्ची भावना खो देते हैं।'

'जब हमने पांच वर्ष पहले अपनी परियोजना शुरू की, तो हमें एहसास हुआ कि पूरा पूर्वोत्तर क्षेत्र एक समृद्ध जैव विविधता वाला क्षेत्र है। वैसे तो हमने यह भी देखा कि पारंपरिक प्रथाएँ संभावित रूप से इन जैव विविधता हॉटस्पॉट को नुकसान पहुँचा सकती हैं जो पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसने हमें पारिस्थितिकीविदों और डिजाइनरों की एक टीम के साथ अनुसंधान संस्थान स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। साथ मिलकर, हमारा लक्ष्य इस क्षेत्र की समृद्ध जैव विविधता के संरक्षण के लिए स्थायी समाधान ढूंढना और एक ऐसा मॉडल बनाना है जिसे दुनिया भर में अन्य जैव विविधता वाले हॉटस्पॉट पर लागू किया जा सके। हम वर्तमान में दो परियोजनाएं चला रहे हैं, एक मेघालय के रिजर्व फॉरेस्ट में और दूसरी बिल वाइल्डलाइफ सेंटर में, दोनों स्थानीय समुदायों के साथ काम करने और जलवायु सकारात्मक दृष्टिकोण सीखने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।'

'शिल्प, सही मायने में, बहुत मूर्त है। लेकिन आप जानते हैं, मुझे लगता है कि इसका जो प्रभाव हम देखते हैं वह अमूर्त है। प्रकृति, इसकी प्रकृति का मूल, अमूर्त है।'

'पिछले कुछ वर्षों में हमने अपने काम से जो समझा है वह यह है कि हमारे पास जलवायु-तन्यक विचार हैं। हमारे पास पारंपरिक प्रथाएं हैं, जिन्हें हमें सिर्फ ब्रांड बनाने की जरूरत है। यही चीज़ है, समाधान हमारे पास है। हमारे गांवों में १००० वर्षों की चक्रीय अर्थव्यवस्था चल रही है। हमें यही करने की जरूरत है। महिलाएं प्रकृति से इतनी जुड़ी हुई हैं, उनके पास मौजूद प्राकृतिक संसाधनों तक उनकी पहुंच है, ऑर्डर देने के लिए समाधान हैं, आप जानते हैं, हम वर्षों से यही कर रहे हैं। और आप जानते हैं, पारंपरिक ज्ञान और समुदाय पर नज़र डालना महत्वपूर्ण है।'

'यह एक परंपरा है और हमें इसका सम्मान करना चाहिए। यह आवश्यक है कि शहरी विचारों को ग्रामीण रूपरेखा पर न थोपा जाए।'

शिल्प पारिस्थितिकी तंत्र और कारीगरों पर जलवायु संकट का प्रभाव

"बाढ़, रेशम उत्पादन प्रभावित, स्वास्थ्य और जल संकट, उत्पादन चक्र में देरी, बढ़ता तापमान, कारीगरों का पलायन, भूस्खलन, नदी तट का कटाव, जल जमाव और प्रदूषित जल निकाय। लोगों के घरों और काम करने की सड़कों पर पानी भर गया है और कच्चे माल की उपलब्धता प्रभावित हुई है। अपशिष्ट पदार्थों से लैंडफिल तेजी से भर रहे हैं। वनस्पति और जीव-जंतु पीड़ित हैं, जंगली रेशम गायब हो रहा है और पशुओं पर प्रभाव पड़ रहा है। बुनाई कार्यबल जलवायु संकट के प्रभाव के प्रति संवेदनशील हैं, उन्हें बढ़ते तापमान के कारण शारीरिक रूप से कड़ी मेहनत का सामना करना पड़ रहा है।''

इन प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों के कारण बहुत अधिक अनुसंधान एवं विकास सहायता की आवश्यकता है। चूँकि मुगा की खेती १००% आउटडोर तरीके से की जाती है, इसलिए इसके लिए २८ से २९ डिग्री तापमान की आवश्यकता होती है। लेकिन अभी, आज, मार्च के महीने में, यह ३० डिग्री है। तो रेशमकीट कैसे जीवित रहेगा? यह एक बड़ा प्रश्न है। हमें ऐसी किस्म विकसित करने के लिए अनुसंधान एवं विकास सहायता की आवश्यकता है जो ऐसी प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में भी जीवित रह सके। अप्रैल और मई के महीनों में, तापमान ३९-४० डिग्री तक जा सकता है, जिससे रेशमकीट के लिए जीवित रहना काफी असंभव हो जाता है क्योंकि यह एक ठंडे खून वाला जीव है।

शिल्प और स्वदेशी पहचान

"मेरे काम के पीछे मुख्य प्रेरणा हमेशा हमारी स्वदेशी पहचान को पुनः प्राप्त करना रही है। यह एक घटना थी जब मैं उसी क्षेत्र में एक रबर गांव में गया जहां मैं काम करता हूं। जैसे ही मैंने वस्त्रों के साथ काम करने और बहुत ही स्वदेशी बुनाई और रूपांकनों को बनाने के अपने जुनून को साझा किया, एक महिला ने तुरंत बोलते हुए कहा, 'हमने अपनी भाषा खो दी है; हम अपनी मातृभाषा भी नहीं बोल सकते।' इससे मुझे समुदायों के अंदर सांस्कृतिक स्मृति के अत्यधिक मूल्य का एहसास हुआ। भले ही लोगों ने विभिन्न कारकों के कारण अपनी बोली जाने वाली भाषा खो दी हो, फिर भी हम उनके कपड़ों की भाषा को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

"हम पहचान को कैसे सुदृढ़ कर सकते हैं? हम इस ज्ञान वाले लोगों की रक्षा कैसे कर सकते हैं और फिर भी इस तरह से सह-निर्माण कर सकते हैं जो नवीनता लाए ताकि आप उनसे कुछ दूर न ले जाएं, बल्कि जहां वे हैं उससे एक कदम आगे ले जाएं?

सतत फैशन, शिल्प और जेनज़ेड

"आज, किसी भी फैशन का आपका सबसे बड़ा उपभोक्ता और ग्राहक आपकी जेन जेड पीढ़ी है जो तेजी से खपत करती है। अब हम यह कैसे सुनिश्चित करें कि हम उसे बदल सकते हैं, और एकमात्र तरीका जिससे हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हम उसे बदलने में सक्षम हैं वह है उनकी भाषा में बोलना, उनकी भाषा में डिज़ाइन करना, और उन तक उनकी भाषा में जानकारी पहुंचाने में सक्षम होना।

"आपको इसे आकांक्षी बनाना होगा। युवाओं के लिए जिस तरह ज़ारा आकांक्षापूर्ण हैं। आप गांवों में जाते हैं, हर अच्छी बात करते हैं। और तब आपको एहसास होता है कि वह बच्चा जिसके पास २० रुपए हैं, वह दौड़कर चिप्स का पैकेट खरीदना चाहता है क्योंकि कोई इसका अच्छा विज्ञापन करता है। वे केले नहीं खरीदते, जो अधिक स्वास्थ्यप्रद हो सकते हैं। तो आपको केले को उनके लिए आकांक्षी बनाना होगा। तो यह ऐसा ही है।"

"जेनज़ेड जलवायु के बारे में गहराई से परवाह करता है, फिर भी हम आउटफिट ऑफ द डे (ओओटीडी) जैसे सोशल मीडिया रुझानों द्वारा संचालित अल्ट्रा-फास्ट फैशन के उदय को देखते हैं। वे ऐसे फैशन की तलाश करते हैं जो उनकी विशिष्टता और रचनात्मकता को दर्शाता हो, जो कि मितव्ययी संस्कृति में वृद्धि की व्याख्या करता है। शिल्प यहाँ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह दो दुनियाओं की कहानी है - पर्यावरण के चेतना और व्यक्तित्व की लालसा - और शिल्प उन आकांक्षाओं को पूरा करने की कुंजी है।

शिल्प क्षेत्र में बाधाएं

हमने उन विरासती मुद्दों को देखा है जिन्हें हथकरघा और हस्तशिल्प उद्योग को अपनी शुरुआत से ही सामना करना पड़ा है। चिंता के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं। सबसे पहले, स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र समय के साथ खराब हो गया है। दूसरे, डिज़ाइन और तकनीकी सहायता की आवश्यकता है। और तीसरा, हम डिज़ाइन, व्यवसाय और संचार में बुनियादी शिक्षा के साथ कारीगर समुदाय को सशक्त बनाना चाहते हैं। हमारे प्रयासों में मार्केट कनेक्टिविटी भी महत्वपूर्ण है। हम इन मापदंडों को संबोधित करने और शिल्प और पूरे समुदाय के लिए स्थायी प्रथाओं को लाने के लिए काम कर रहे हैं।

"मेरे सामने सबसे बड़ी समस्या यार्न की कीमत है, क्योंकि यह बिना किसी निश्चित दर के बढ़ती रहती है। इससे उत्पादन और मूल्य निर्धारण निर्णय चुनौतीपूर्ण हो जाते हैं, क्योंकि यार्न की कीमतें छह महीने के अंदर बदल सकती हैं। मेरा मानना है कि यार्न की कीमतों को नियंत्रित करने के लिए कुछ विपणन संतुलन या नियम होने चाहिए। हाथ से काते गए और प्राकृतिक रेशे अपनी विशिष्टता और श्रम-गहन प्रक्रिया के कारण महंगे हैं, लेकिन लोगों को उनके मूल्य के बारे में पता नहीं है और वे उचित भुगतान करने को तैयार नहीं हैं। हमारे उत्पादन की तुलना पावरलूम वस्त्रों से करना अनुचित है, क्योंकि हमारी प्रक्रिया में अधिक समय लगता है और उत्पादन कम होता है।

पारंपरिक और प्राकृतिक धागों को बढ़ावा देने के लिए विपणन नियम होने चाहिए; अन्यथा, यह कला धीरे-धीरे ख़त्म हो सकती है। इसके अलावा, 'हैंडलूम' शब्द के लिए कोई सुरक्षा नहीं है और उपभोक्ताओं के लिए पावरलूम और हैंडलूम उत्पादों के बीच अंतर करना चुनौतीपूर्ण है। जैसे रेशम का अपना टैग होता है, वैसे ही हथकरघा में भी ग्राहकों के लिए पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षात्मक उपाय होने चाहिए।

"लोइन लूम एक बहुत ही शारीरिक रूप से कठिन चीज है क्योंकि वे करघे को कमर के चारों ओर बांधते हैं, वे फर्श पर बैठते हैं और इसे उपयोग करते हैं। तो उसकी एक अलग पहचान होनी चाहिए। और दूसरी बात यह भी है कि लोग ऐक्रेलिक धागे की उपलब्धता और सस्ती कीमत के कारण इसके इतने आदी हो गए हैं कि उन्होंने प्राकृतिक धागे का उपयोग करना ही बंद कर दिया है। मेरे अधिकांश बुनकरों की शिकायत है कि प्राकृतिक धागे से तैयारी करने में बहुत अधिक समय लगता है। इसलिए हमें इसे प्रोत्साहित करने के लिए इसे उनके लायक बनाना होगा ताकि हम उन्हें उचित कीमत दे सकें।"

"सिंथेटिक धागे आसानी से उपलब्ध हैं, और उन्हें बुनना आसान लगता है क्योंकि वे बिखरते नहीं हैं। इसलिए, मैं उन्हें जैविक सामग्री के उपयोग के फायदे दिखाने का प्रयास करता हूं और यह भी बताता हूं कि यह शरीर और त्वचा के लिए कितना आरामदायक है। यह धीमी प्रगति है"।

"हम सभी पारिस्थितिकी तंत्र की समस्या की ओर इशारा कर रहे हैं जो हम देखते हैं। पूर्वोत्तर में हमारे पास केवल एक सूत प्रसंस्करण इकाई है, और वह पर्याप्त नहीं है। हम राज्य के बाहर से सूत लाने में बहुत समय और पैसा बर्बाद करते हैं, जिससे उत्पाद महंगे हो जाते हैं और बाजार में कम प्रतिस्पर्धी हो जाते हैं। फिर, लागत में कटौती करने के लिए, हम बुनकरों की मजदूरी कम कर देते हैं, जो उचित नहीं है। हम उन्हें बाजार के लिए बड़े उत्पादन की ओर धकेल रहे हैं, जिससे स्वास्थ्य समस्याएं पैदा होती हैं और जीवन की गुणवत्ता से समझौता होता है। यह एक श्रृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया है जिसे हमने देखा है। इसलिए, मूल विचार पारिस्थितिकी तंत्र का लाभ उठाना और एक स्थायी ग्रामीण अर्थव्यवस्था का निर्माण करना है जैसा कि हमने पहले किया था। अतीत में, सूत को स्थानीय स्तर पर उगाया, काता और रंगा जाता था, जिससे एक आत्मनिर्भर पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण होता था। हालाँकि, समय के साथ, विभिन्न नीतियों के कारण इसमें गिरावट आई है। अब, हमें एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण की ओर वापस आने की जरूरत है।

उपभोक्ता जागरूकता का महत्व

"हमें एक भूमिका निभानी है। बाजार से जुड़ाव प्रदान करने से हम पर प्रभाव पड़ा है। जब धागे की कीमत बढ़ती है, तो इसका सीधा असर हमारे लिए कपड़े की कीमत पर पड़ता है, और फिर यह हमारी जिम्मेदारी बन जाती है कि हम अपने ग्राहकों को जागरूक करें। वे सवाल करते हैं कि हमारे पिछले संग्रह की तुलना में हमारी कीमतें २०-३०-४०% क्यों बढ़ गई हैं।

"मुझे यह अवसर मिला जहां एक बड़े ब्रांड ने मेरा हाथ से बुना हुआ कुछ सामान ले लिया। हालाँकि बड़े ब्रांडों के पास एक स्कैनिंग प्रणाली होती है जो ड्रॉपआउट के साथ हाथ से बनी वस्तुओं को अस्वीकार कर देती है। यह हस्तनिर्मित उत्पादों की एक स्वाभाविक विशेषता है। तो इस वजह से मेरी ज्यादातर साड़ियां रिजेक्ट कर दी गईं।' यह देखना निराशाजनक है कि ये बड़े फैशन हाउस हथकरघा (हैंडलूम) को बढ़ावा देते हैं, बिना यह समझे कि वास्तव में यह क्या है।''

"हमारे उत्पाद प्राकृतिक रेशों से तैयार किए जाते हैं, और हम लकड़ी, प्लास्टिक, ऐक्रेलिक या सिरेमिक से बनी वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। जैसा कि आप जानते हैं, प्राकृतिक रेशों को नमी से अधिक देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्य से, मेरे ग्राहक इसे समझ नहीं पाते हैं। उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि ये उत्पाद प्लास्टिक नहीं हैं और अत्यधिक नमी के कारण फंगस जैसी समस्याओं से बचने के लिए इन्हें बहुत ज्यादा नहीं तो अतिरिक्त देखभाल की जरूरत है।

पावरलूम और हैंडलूम

"हाल ही में, असम के सीएमओ ने घोषणा की कि हमें पावरलूम गमोसा को बंद कर देना चाहिए और हैंडलूम संस्करण शुरू करना चाहिए। हालाँकि मेरे अपने घर में ही मेरी माँ लगभग ५०-६० गमोसा खरीदती है। वह मुझसे कहती है कि जब तुम घर आओ तो कुछ गमोसा ले आना। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि सबसे सस्ते हैंडलूम गमोसा की कीमत 250 रुपए है, लेकिन वह जोर देकर कहती है कि वे इसे शहर में 100 रुपए में ले सकती हैं। इससे पता चलता है कि वह भी हैंडलूम और पावरलूम के बीच अंतर नहीं समझती है, मेरा मानना है कि हमारे ९०% उपभोक्ताओं का यही हाल है। उपभोक्ताओं को हैंडलूम के बारे में शिक्षित करना पहले कदम के रूप में महत्वपूर्ण है। तभी हम उपभोक्ताओं की कमी और ब्रांडिंग जैसे मुद्दों पर चर्चा कर सकते हैं। आम आदमी सस्ते और अच्छी गुणवत्ता वाले गमोसा के बीच अंतर नहीं कर पाता है और स्वाभाविक रूप से, वे सस्ते गमोसा को चुनते हैं।"

"यह हमारे देश भर में हो रहा है, और इसे समझना महत्वपूर्ण है - पावरलूम को अचानक बंद करना कोई समाधान नहीं है, क्योंकि उस उद्योग में कई लोग काम कर रहे हैं। जब मैंने पावरलूम बुनकरों से बात की तो उन्होंने अपना काम बंद होने की चिंता व्यक्त की। उन्हें डर है कि अगर उनका काम रुक गया तो उन्हें भूख का सामना करना पड़ेगा और लोग दूसरे देशों से सस्ते आयात की ओर रुख करेंगे। हमें इसे संबोधित करने का एक तरीका ढूंढने की जरूरत है। हैंडलूम और पावरलूम के बीच अंतर करने के बारे में आपकी बात महत्वपूर्ण है - फिर आप जो चाहते हैं उसका उपभोग करते हैं। उपभोक्ताओं के पास विकल्प होना चाहिए, लेकिन उन्हें अपनी पसंद के परिणामों को समझने की जरूरत है। पांच सस्ते उत्पाद खरीदने के बजाय, वे एक गुणवत्तापूर्ण हैंडलूम वस्तु खरीदने पर विचार कर सकते हैं। उपभोक्तावाद के कारण भी आज ऐसा नहीं हो पा रहा है।"

"प्रधानमंत्री ने वाराणसी में कुछ ऐसा कहा जिसने मुझे प्रभावित किया। उन्होंने उन लोगों के लिए हैंडलूम (हथकरघा) की मांग बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया जो हस्तनिर्मित चीजों को महत्व देते हैं और पावरलूम को सभी की जरूरतें पूरी करने देते हैं। हम जिस समस्या का सामना कर रहे हैं वह यह है कि हम हाथ से बुने हुए उत्पादों के साथ बाजार के निचले स्तर को लक्षित कर रहे हैं, जिससे समस्याएं पैदा हो रही हैं। भारत दुनिया के ९५% हाथ से बुने हुए कपड़ों का उत्पादन करता है, लेकिन हमने पूरे बाजार पर कब्जा नहीं किया है। हम ज्यादातर कालीन निर्यात करते हैं। विदेशों में एक विशाल अप्रयुक्त बाजार है जहां लोग हाथ से बुने हुए वस्त्रों को समझते हैं, सराहते हैं और उन्हें महत्व देते हैं। पिछले १० वर्षों में, रॉ मैंगो जैसे हैंडलूम ब्रांड १००% बढ़े हैं क्योंकि उन्होंने डिजाइन पर ध्यान केंद्रित किया, सही बाजार पर पकड़ बनाई और बुनकरों को लाभ पहुंचाने के लिए अपने उत्पादों की उचित कीमत लगाई।

"केवल बुनकर की कहानी बताना भी बहुत अच्छी मार्केटिंग है। लोग समझेंगे कि उत्पाद कैसे बनता है और इसमें कितनी मेहनत लगती है। किए गए प्रयास को देखने के बाद उन्हें लगेगा कि यह इसके लायक है। मैं इस बात पर भी जोर देना चाहता था कि हम औद्योगिकीकरण के खिलाफ नहीं हैं। इसे हथकरघा के साथ सह-अस्तित्व में रहना होगा। हमें इस बारे में अधिक जागरूक होने की आवश्यकता है कि हम क्यों खरीदते हैं और क्या खरीदते हैं। पावरलूम और हैंडलूम एक साथ रह सकते हैं और हमें इससे सहमत होना चाहिए। औद्योगिकीकरण का विरोध करने और जो हैंडलूम नहीं है उसे अस्वीकार करने का कोई मतलब नहीं है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि दोनों एक साथ अस्तित्व में रह सकते हैं।"

"मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहूँगा कि सभी हथकरघा पर्यावरण के अनुकूल नहीं हैं। जबकि हमें निश्चित रूप से पावरलूम के साथ प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए, हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारी हथकरघा प्रथाएं पर्यावरण के लिए जिम्मेदार हैं। सिर्फ इसलिए कि यह हथकरघा है इसका मतलब यह नहीं है कि यह पर्यावरण के अनुकूल है। हमें भावी पीढ़ियों और पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव पर विचार करने की आवश्यकता है। क्या हम ऐक्रेलिक और रासायनिक रंगों का उपयोग कर रहे हैं जो अपशिष्ट और मिट्टी के क्षरण में योगदान करते हैं? ये वे चुनौतियाँ हैं जिनका हमें केवल पावरलूम और हैंडलूम के बीच चयन करने के बजाय समाधान करने की आवश्यकता है।''

तेज उत्पादन बनाम धीमा उत्पादन

"मुझे लगता है कि इनमें से अधिकांश चर्चाएँ छोटे व्यवसाय स्वामियों के दृष्टिकोण से चीजों को संभालने के इर्द-गिर्द घूमती हैं। हालाँकि, हमारे सामने एक बड़ी समस्या फास्ट फैशन की अनियंत्रित वृद्धि है। हमें अपने विचार-विमर्श में फास्ट फैशन स्वामियों को शामिल करने की आवश्यकता है क्योंकि हम वास्तव में यह प्रभावित नहीं कर सकते कि हम कैसे उत्पादन करते हैं, बड़े पैमाने पर या नीचे, या हम किस सामग्री को प्रोत्साहित करते हैं जब तक कि हम फास्ट फैशन के असीमित उत्पादन और लाभ-खोज प्रकृति को संबोधित नहीं करते हैं। वे हमारी उत्पादन समय सीमा और प्रथाओं के लिए मानक निर्धारित करते हैं, और यह केवल जागरूक और जिम्मेदार व्यवसाय स्वामियों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पर्याप्त नहीं है। जिम्मेदारी उत्पादन के सभी क्षेत्रों में होनी चाहिए।"

स्थायी को परिभाषित करने और मेट्रिक्स बनाने की आवश्यकता

"मैं बेहतर तरीके से समझना चाहता हूं कि वास्तव में किसी ब्रांड को स्लो (धीमे) फैशन ब्रांड या स्थायी ब्रांड के रूप में कैसे वर्गीकृत किया जाता है।"

"ये सभी चरण, खेत से लेकर फाइबर से लेकर कपड़े तक, और फिर सभी रंगाई प्रक्रियाएं... मेरा मतलब है, इसमें इतना कुछ शामिल है कि शायद हमें यह निर्धारित करने के लिए एक ग्रीन इंडेक्स या कुछ और बनाना चाहिए कि अंतिम परिधान कितना स्थायी है। इसे इतने सारे चरणों से गुजरना होगा कि यह आकलन करने में बहुत लंबा समय लगेगा कि मैंने जो पहना है, मान लीजिए, ३०% पर्यावरण के अनुकूल है क्योंकि फाइबर कैसे उगाया गया था, कपड़ा कैसे बनाया गया, और यह सब।"

शिक्षा

"हम इसे पाठ्यक्रम में कैसे शामिल कर सकते हैं? युवा पीढ़ी को अधिक जागरूक बनाएं, अधिक बातचीत करें, इस पारंपरिक विरासत की अधिक सराहना करें। हमारे पास दूसरा बड़ा फायदा यह भी है कि हम इस बारे में बात कर रहे हैं कि कैसे कारीगरों की युवा पीढ़ी शिक्षा के कारण दूर जा रही है, लेकिन मुझे लगता है कि यह एक बड़ा फायदा है क्योंकि अगर मेरे पास उनके जैसे युवा छात्र हैं जो युवा शिक्षित लोगों के साथ काम करते हैं कारीगर परिवारों से आते हैं, मुझे लगता है कि यह एक महान अवसर हो सकता है क्योंकि वे दोनों उस शिल्प को पूरी तरह से पारंपरिक मानसिकता से नहीं, बल्कि पूरी तरह से अलग तरीके से तलाश रहे हैं और देख रहे हैं, लेकिन यह देख रहे हैं कि इसमें परंपरा और समकालीनता को कैसे शामिल किया जा सकता है।"

"शिल्प और धीमे फ़ैशन के बीच भी संबंध है और आप कैसे महसूस करते हैं कि बॉक्सों में कुछ था, लेकिन हम पहले से ही उनमें से अधिकांश बक्सों पर टिक कर रहे हैं, लेकिन हम अभी तक वहां नहीं हैं। मुझे लगता है कि यह एक महत्वपूर्ण संबंध है। एक और चीज़, जिसके बारे में हमने बात की, जो दिलचस्प है, वह है समझौता। मुझे नहीं लगता कि कोई भी चीज़ 100% स्थायी या सौ प्रतिशत सर्वश्रेष्ठ है। ये निर्णय लेने वाले बिंदु हैं क्योंकि आप जो भी कर रहे हैं, उसकी पर्यावरण को कीमत चुकानी पड़ेगी। इसे बनाने वाले कारीगरों पर भी असर पड़ेगा। इसलिए हमें बस यह समझना होगा कि आगे बढ़ने के लिए सबसे अच्छा विकल्प क्या है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उद्देश्य वास्तव में सभी बॉक्सों पर टिक करना है, बल्कि समुदायों के साथ काम करने और हम जो प्रभाव डाल रहे हैं उसे बेहतर बनाने में सक्षम होना है। और मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है, और इसीलिए इनमें से अधिकांश ब्रांड काम कर रहे हैं, और वे सफल हो रहे हैं, लेकिन वे १००% पर्यावरण के अनुकूल नहीं हैं और उनका वेतन बहुत अच्छा है और वे शानदार डिज़ाइन कर रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि यह ऑल-इन-वन है। हमें बस अपनी कहानियों का पता लगाना है।"

कहानी सुनाना और सोशल मीडिया

"डी-इन्फ्लुएंसिंग नामक एक प्रवृत्ति है, जहां लोग धीमी गति से जीवन जीना, सचेतन रहना और अपनी जड़ों से दोबारा जुड़ना चाहते हैं। ये कहानी सुनाने के बेहतरीन चैनल हैं जिन तक पहुंचा जा सकता है। यह बिक्री करने के बारे में नहीं है, बल्कि हमारी पसंद और हम कपड़ों का उपभोग कैसे करते हैं, इसके बारे में अधिक जागरूक होने के बारे में है। मुझे उम्मीद है कि अगली पीढ़ी हमारे कपड़ों के प्रति दृष्टिकोण को बदल देगी, सहयोगी प्रणालियों, साझा वार्डरोब और सावधानीपूर्वक सोर्सिंग को अपनाएगी। यदि वे आज के नैतिक पहनावे की तलाश में हैं, तो शिल्प अपने अनूठे उत्पादों के साथ समाधान रखता है। स्थायी फैशन भविष्य के लिए इस कहानी को जोड़ना महत्वपूर्ण है।

सोशल मीडिया कभी भारी निवेश के बिना हमारी ब्रांड पहचान बनाने का एक मूल्यवान माध्यम था, लेकिन एल्गोरिदम में बदलाव के कारण वह भी खत्म हो रहा है, जिससे हमारी पहुंच और रचनात्मकता सीमित हो रही है। हमें दर्शकों तक पहुंचने के लिए एक निश्चित प्रकार की सामग्री बनाने के लिए मजबूर किया जाता है, और हम में से बहुत से लोग ऐसा नहीं कर सकते हैं, यहां तक कि समावेशिता की अवधारणा भी वहां आएगी। न्यूरो डाइवर्जेंस के बारे में क्या?

उपभोक्ताओं और व्यवसायों के बीच जागरूकता बढ़ाना

'जब धागे की कीमत बढ़ती है, तो इसका सीधा असर हमारे लिए कपड़े की कीमत पर पड़ता है, और फिर यह हमारी जिम्मेदारी बन जाती है कि हम अपने ग्राहकों को शिक्षित करें। वे सवाल करते हैं कि हमारे पिछले संग्रह की तुलना में हमारी कीमतें 20-30-40 प्रतिशत क्यों बढ़ गई हैं।'

'मुझे यह अवसर मिला जहां एक बड़े ब्रांड ने मेरा हाथ से बुना हुआ कुछ सामान ले लिया। हालाँकि बड़े ब्रांडों के पास एक स्कैनिंग प्रणाली होती है जो ड्रॉपआउट के साथ हाथ से बनी वस्तुओं को अस्वीकार कर देती है। यह हस्तनिर्मित उत्पादों की एक स्वाभाविक विशेषता है। तो इस वजह से मेरी ज्यादातर साड़ियां रिजेक्ट कर दी गईं।' यह देखना निराशाजनक है कि ये बड़े फैशन हाउस हैंडलूम को बढ़ावा देते हैं, बिना यह समझे कि वास्तव में यह क्या है।''

'हमारे उत्पाद प्राकृतिक रेशों से तैयार किए जाते हैं, और हम लकड़ी, प्लास्टिक, ऐक्रेलिक या सिरेमिक से बनी वस्तुओं के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। जैसा कि आप जानते हैं, प्राकृतिक रेशों को नमी से अधिक देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्य से, मेरे ग्राहक इसे समझ नहीं पाते हैं। उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि ये उत्पाद प्लास्टिक नहीं हैं और अत्यधिक नमी के कारण फंगस जैसी समस्याओं से बचने के लिए इन्हें बहुत ज्यादा नहीं तो अतिरिक्त देखभाल की जरूरत है।'

'मैं आम तौर पर शिल्प के संदर्भ में ऐसा करता हूं, जैसे कि जब हम सैद्धांतिक रूप से बात करते हैं तो बहुत सारी बातें करते हैं, लोग समझ नहीं पाते हैं। एक बार जब मैं प्रगति मैदान गया तो मेरी मुलाकात एक एरी-रेशम बुनकर से हुई। अगर आप एरी शॉल देखेंगे तो आपको लगेगा कि यह सूती कपड़ा है। तो वह महिला बहुत सारे स्टोल बेच रही थी। फिर मैंने उनसे पूछा, "क्या तुम इसे बेच सकती हो?" तब उन्होंने कहा था कि शुरुआती सालों में जब वह मेले में जाती थीं तो बहुत मुश्किल होती थी। वह नहीं जानती थी कि इसे कैसे बेचा जाए क्योंकि कोई भी यह नहीं समझ सका कि यह रेशम था क्योंकि इसमें चमक नहीं थी। तब उसे एहसास हुआ कि उसे एक बार एक बहुत पुराना एरी शॉल मिला था जो घिसा हुआ था लेकिन उसकी दादी ने बुना था, जिसमें ऐसी चमक थी। वह उसे अपने साथ ले जाने लगी और लोगों को दिखाने लगी। तो यह व्यावहारिक बात है, जब आप इसे लोगों को दिखाते हैं, तो वे आसानी से समझ जाते हैं और वे इसे खरीदना शुरू कर देते हैं।'

#CraftingConnections

www.britishcouncil.in